९१. ४३३
१२क

अमरेश

कछार के काँटे

अमरबहादुर सिंह 'अमरेश'

रायबरेली में सन् १९२९ में जन्मे 'अमरेश' जी ने अनेक ऐतिहासिक उपन्यासों एवं बाल-साहित्य की सर्जना की है। खेतों में पले और खेतों में बढ़े 'अमरेश' जी की कृतियों में देश की मिट्टी की महक मिलती है।

प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो०बा०१०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

कछार के काँटे

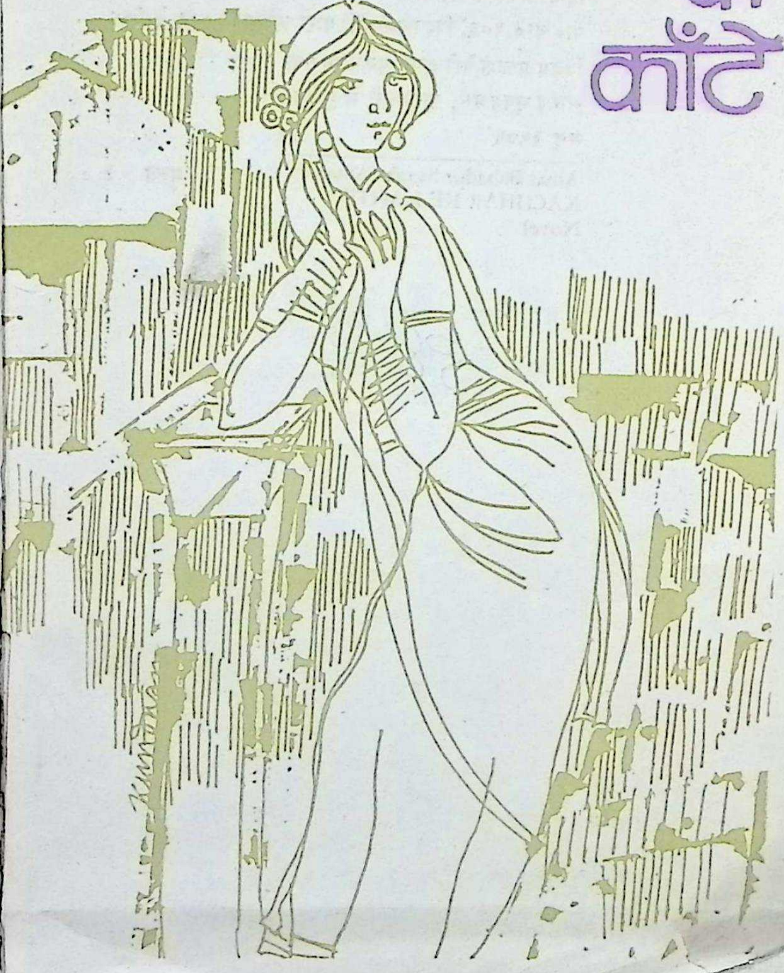

भारत के प्रथम बुक क्लब
प्रचारक बुक क्लब
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बा० १०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१ के लिए
विजय प्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित तथा
भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित
सन् १९७६

Amar Bahadur Singh 'Amaresh'
KACHHAR KE KANTE
Novel

मूल्य : ३.००

डा. डिल्ली रमण रेड्डी
कल्याणी ...
58403

प्रेरणास्रोत

"कसाइयों के मुहल्ले से बाहर निकलकर, जब मैं परेड ग्राउण्ड पर पहुँचा, तब काफी थक चुका था। यह थकान शरीर की नहीं, मस्तिष्क की नहीं, जीवन की नहीं—केवल इतिहास की थी। मुझे लग रहा था—१८५७ का इतिहास कुछ नहीं, केवल आग और आँसू का समन्वय है। आग की एक चिनगारी उछलकर देश पर पड़ी, वह जल उठा ! एक बूँद-आँसू टपका—वह अमर हो गया !........।"

"आप गलत सोच रहे हैं !" किसी ने हथौड़े की-सी चोट की। मैं चौंक पड़ा। मेरी विचारधारा टूट गयी। मैंने घूमकर देखा—संध्या की धुंधली छाया में फुटपाथ पर एक किशोरी खड़ी है।

मैं आश्चर्य से उस अपरिचिता की ओर देखने लगा।

वह मुस्कुरा उठी।

मैंने उस सौन्दर्य की देवी को पुनः ध्यान से देखा—स्वस्थ एवं सुडौल शरीर, सुगठित अवयव, उद्दीप्त नेत्र, एवं चमकता हुआ ललाट ! उम्र यही तेरह-चौदह वर्ष ! तन पर केशरिया साड़ी और हाथ में—रक्तकमल ! उसके सौम्य मुखमण्डल की ओर दृष्टिपात करते ही मेरी आँखें चौंधिया गयीं। पलकें अपने-आप झुक गयीं। मैं कुछ बोल न सका। समझ में नही आ रहा था कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ या जाग रहा हूँ।

मेरी इस स्थिति पर वह पुनः मुस्कुरा उठी।

उसके शरीर में थोड़ा-सा कंपन हुआ।

'रक्त-कमल' वाला हाथ ऊपर उठा।

वह मुस्कुराती हुई गंभीरता से बोली, "१८५७ का इतिहास आग और आँसू ही नहीं, उत्सर्ग भी है।"

"चलो मैना !" एक दूसरी औरत ने उसका हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा—"अभी हमें विठूर तक जाना है। कहाँ उलझ गयी ?"

मेरी निगाहें पुनः ऊपर उठीं। मैंने देखा—काले रेशमी बुर्के में लिपटी एक दूसरी महिला खड़ी है और उस किशोरी का हाथ पकड़कर खींच रही है। नकाब उल्टा हुआ है। मुस्कुराते चेहरे पर उसकी दो बड़ी-बड़ी रसभरी आँखें, मेरी आँखों में समा गयीं। वह हँस पड़ी। हँसते ही गालों में गड्ढे पड़ गये। बायें कपोल का तिल और गाढ़ा हो गया। वह एक अजीब अदा से खड़ी हो गयी। मुस्कुराती हुई बोली—

"आप इस तरह हैरत से मुझे क्यों देख रहे हैं ?"

उसके इतना कहते ही मैं शरमा गया। मेरी आँखें नीचे की ओर झुक गयीं। मैंने अपने को संयत करते हुए पूछा, "क्यों ? क्या कोई गुनाह हो गया ?'

"गुनाह !" वह खिलखिला उठी। बोली—"नहीं, इसमें कैसा गुनाह ! अरे जनाव !" उसने एक निराली अदा से कहा, "मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो !"

यह मिर्जा गालिब का कोई शेर था जिसे वह एक सर्राटे में अधूरा ही पढ़ गयी थी। उसकी इन बातों से मैंने अनुभव किया—यह बुर्केवाली औरत अत्यधिक शोख, चञ्चल एवं शीरीं-सुखन है। उसका परिचय जानने की मेरी उत्सुकता बढ़ी। मैंने अपनी गलती महसूस करते हुए कहा—"क्षमा कीजिएगा। मैं आपको ही पूछ रहा हूँ। आपका परिचय ?"

"मैं वही हूँ !" उसने थोड़ा-सा गम्भीर होते हुए कहा, "जिसके सर पर "बीवीघर' के कत्लेआम का झूठा कलंक है।"

"बेगम !" मेरे मुख से अनायास ही निकल गया।

"जी हाँ !" वह नजाकत से बोली—"बन्दी वही है। पहचान लिया आपने ! बड़ी पैनी है आपकी निगाह !" उसने मुस्कुराते हुए कहा–"उधर देखिए, यह हैं रूठी हुई मैना रानी ! १८५७ से हम दोनों साथ हैं।"

बेगम और मैना !

१८५७ !

मुझे रोमांच हो उठा। मेरा शरीर अपने-आप काँपने लगा। मुझे रोमांचित देखकर बेगम थोड़ा हट गयी। मेरे अंग-प्रत्यंग अब भी सिहर रहे थे। मैंने निगाह झुका ली। मुझे लगा, मैना को ईश्वर ने जितनी शक्ति, सुन्दरता एवं आन दी है, बेगम को कुदरत ने उतना ही हुस्न, इज्जत और खुद्दारी बख्शी है। यही कारण है कि दोनों में समरूपता आ गयी है।

"आप डर गये ?" बेगम ने व्यंग्य से पूछा।

"यह भी कोई पूछने की बात है" मैंने उत्तर दिया, "जब तुम्हारे नाम से पूरा इतिहास काँप उठता है, तब मैं क्यों न डरूँ ?"

"वल्लाह !" बेगम खिलखिला पड़ी। बोलीं—"मैं आपकी इस बुलन्दख्याली का शुक्रिया अदा करती हूँ। इतिहास को फिरंगियों ने डराया है, मैंने नहीं।"

"क्यों ?" मैंने प्रश्न किया।

बेगम गंभीर हो गयी। उसके मुस्कुराते चेहरे पर लालिमा दौड़ गयी। वह अपने को संयत करती हुई बोली, "आप कसाईबाड़े से आ रहे हैं न ? वहाँ आप को एक भी सबूत न मिला होगा कि मैंने जल्लादों को बुलाया था! कत्लेआम कराया था! लाशें कुएँ में फिकवायी थीं। तवारीख के पन्ने फिरंगियों के लिखे हैं न ? वे एक औरत को बदनाम न करते तो नील और हैवलॉक के माथे का काला दाग कैसे छूटता ? हाँ, मुझसे कुछ गलतियाँ जरूर हुई हैं। यह उसी का नतीजा है।" कहते-कहते बेगम करुणार्द्र हो उठी। उसका हृदय भर आया। कण्ठ अवरुद्ध हो गया। मैं उसकी ओर एकटक देखता रहा। वह अधिक कुछ न कह सकी। दुपट्टे के छोर से भींगी पलकें पोंछकर धीरे से बोली, "अलविदा!"

मैंने दुःखी मन से सामने की ओर देखा। दोनों देवियाँ अदृश्य हो चुकी थीं। वहाँ उनकी छाया तक न थी। केवल जनरव, कोलाहल, मोटरों के हॉर्न, साइकिलों एवं रिक्शों की घंटियाँ तथा अपनी छाती पर पशुओं की तरह ठेला खींचनेवालों के स्वर सुनायी पड़ रहे थे। मैं थोड़ी देर तक

खड़ा सोचता रहा। मुझे लग रहा था—"कानपुर की धरती पर अब भी मैना की आत्मा विचर रही है। बेगम की रूह घूम रही है।" मैंने दोनों पुण्यात्माओं की स्मृति में श्रद्धा से शीश झुका दिया।

बेगम का कथन सत्य ही था। कसाईबाड़े में मुझे एक भी कसाई ऐसा नहीं मिला, जो बीबीघर के हत्याकांड का समर्थन करता। सभी अपने पूर्वजों के वहाँ जाने की घटना इन्कार करते रहे। कुछ ने तो इसका घोर प्रतिवाद भी किया। तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह सब मानो मेमोरीज ऑफ दी म्युटिनी के लेखक 'मॉड' तथा कर्नल विलियम का क्रांतिकारियों को बदनाम करने का घृणित प्रचार मात्र था*। ऐसा न होता तो बेगम, मैना को साथ लेकर फुटपाथ पर अपनी सफाई देने न आती।"

"पर बेगम से गलती क्या हुई ?" मैं सोचने लगा। अभी-अभी दो क्षण पूर्व उसने दुःखी मन से कहा था, "मुझसे गलतियाँ जरूर हुई हैं।" यह उसी का नतीजा है।"

"बात सत्य है ! बेगम की भावुकता ही उसकी गलती है। उसका अपराध है। उसका कलंक है।"

मेरी आँखें अदृश्य की ओर उन देवियों को ढूंढने लगीं। वे कहीं भी दिखायी नहीं पड़ीं। मेरे कानों में मैना के शब्द भी गूँज रहे थे—१८५७ का इतिहास आग और आँसू नहीं, उत्सर्ग भी है।"

मैं आगे न बढ़ सका। मुझे वहाँ कण-कण में मैना का स्वर सुनायी पड़ने लगा। बेगम की दुःखी, किन्तु पाक निगाहें मुझे परेशान करने लगीं। मैं चुपचाप परेड ग्राउण्ड की एक गली में समा गया।

तब मुझे इतिहास की थकान थी।

अब इतिहास की सत्यता की।

---

*१. १५ तथा १६ जुलाई को स्त्रियों और बालकों की बलि को सहस्रों व्यक्तियों ने देखा—मॉड। २. 'भारत में अंग्रेजी-राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल ने इसका प्रतिवाद किया है।

साँझ बिजली के लट्टुओं पर लोट रही थी। रात के काले रेशमी केश खस की टट्टियों में भींग गये थे। चाँद मेंहदी की झाड़ों पर चाँदनी बिछा रहा था। और मैं ? इतिहास की सत्यता के साथ-साथ बेगम के शब्दों के भार से दबा जा रहा था।

●●●

१

१८५७ का खूनी इतिहास !

प्राची की पलकों साये में आग का एक गोला निकला, चमका और ऊपर उठा। संपूर्ण देश में गरमाहट आ गयी।

"लांग लिव नाना साहब !"

थोड़ी-बहुत हिन्दी समझनेवाली एक अंग्रेज नवयुवती उत्साह से चिल्ला उठी। उसके साथ की अन्य महिलाएँ भी आत्म-विभोर होकर 'असीसने' लगी !—"लांग लिव ! लांग लिव !! नाना साहब लांग लिव !!!"

दरबार में एक शोर-सा मच गया। नाना साहब के कुछ-कुछ चिपटे किन्तु गोल, गौरवर्ण चेहरे पर हलकी-सी लालिमा छा गयी। शेर के सामान चतुर्दिक फिरनेवाले बड़े-बड़े उद्दीप्त नेत्र चमक उठे। घने बालों से ढँका हुआ विशाल वक्षस्थल उभार पर आ गया। किनखावी पोशाक में थोड़ी-सी सिहरन हुई। उन्होंने तेज निगाहों से नवयुवती की ओर

देखा। वह हल्के भूरे रंग की फ्रॉक पहने थी। सुराहीदार गर्दन पर कटे-छटे सुनहरे रेशमी बाल लोट रहे थे। होंठों पर स्वेद-बिन्दु छलक आये थे। खुली हुई चिकनी, सुडौल बाँहें रह-रहकर सिहर-उठती थीं। तेज, नुकीली, नीली आँखों में कुछ-कुछ आत्म-विश्वास झलकने लगा था। नाना साहब के दृष्टिपात करते ही उसने एक लंबी साँसों के गिराव के साथ ही पलकें झुक गयी। पतले-पतले दो लाल होंठ धीरे से पुनः बोल उठे—"लांग लिव नाना साहब !"

नाना साहब ने निगाहें नीचे की ओर झुका लीं।

नवयुवती अब भी उनके चिरजीवी होने की भावना को स्वर दे रही थी। दरबार में पूर्ण स्तब्धता थी।

२८ जून का उल्लासपूर्ण दिवस। कानपुर की विजय के उपलक्ष्य में नाना साहब ने एक शानदार दरबार किया था। बाहर विजय के दमामे बज रहे थे। तोरण, वंदनवारों से संपूर्ण राजभवन नववधू-सा सजा हुआ था। अगरु-सुरभि से कक्ष महमहा रहे थे। दरबार के प्रवेश-द्वार पर मङ्गल-कलश रक्खे थे। कदली के स्तंभ वायु के झोकों में झुक-झूम रहे थे। आम्र-पल्लवों की झालरें लटक रही थीं। रंग-बिरंगी झंडियाँ फरफरा रही थीं। सैनिकों की टोली सलामी देने को तैयार खड़ी थी। तोपें अभि-नंदन करने के लिए मुख फैलाये थीं। कुछ दूरी पर एक सुन्दर वेदी बनी थी। समिधा जल रही थी। हवि का धुँआ चतुर्दिक छाया हुआ था। ब्राह्मण एवं पुरोहित सामूहिक रूप में वेद-मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। शंखध्वनि गूँज रही थी। पास ही फूल-मालाओं से लदा हुआ केशरिया झंडा आकाश को चुनौती दे रहा था। निश्चित समय पर नाना साहब ने दरबार में प्रवेश किया। रिसाले की दो कंपनियों तथा सहस्रों क्रांति-कारियों ने जयघोष किया। सैनिकों का स्नेह-सम्मेलन हुआ। छह पैदल पल्टनों ने सलामी दी। सर्वप्रथम दिल्ली-सम्राट् के अभिनंदन में १०१ तोपें गड़गड़ा उठीं। तत्पश्चात् इक्कीस दिनों के घेरे के स्मरणार्थ इक्कीस तोपों ने नाना साहब के स्वागत में गोले उगले। उनकी गड़गड़ाहट से

आकाश काँप उठा। नाना साहब संचलन भूमि पर पधारे। एक लाख रुपया उन्होंने सैनिकों में वितरित करने की घोषणा की। सभी साथियों को धन्यवाद देते हुए गद्गद् कंठ से कहा, "यह विजय मेरी अकेली नहीं, इसमें सबका भाग है। प्रत्येक व्यक्ति के समान यश का नाम—आज की विजय है। या यों कहिये कि आज की विजय का नाम प्रत्येक व्यक्ति का समान यश है। उस यश के प्रति मैं नतमस्तक हूँ। उस विजय के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।'''कहते कहते उनका उन्नत ललाट झुक गया। नयनों में प्रेमाश्रु छलक आये। वाणी अवरुद्ध हो गयी। वे आगे कुछ भी न बोल सके।

"श्रीमंत नाना साहब की जय हो!"

जयघोष से दिग-दिगंत काँप उठे। तत्पश्चात् क्रम से राव साहब बाला साहब, तांत्याटोपे, अजीमुल्ला खाँ आदि का सम्मान हुआ। जयघोष एवं करतलध्वनि के बीच नाना साहब सिंहासन पर विराजमान हुए। उसी समय पर बीस-पच्चीस अंग्रेज स्त्री-बच्चों को लाकर दरबार में खड़ा कर दिया गया। सभी के हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी थीं। महिलाएँ बलि-पशुओं की भाँति काँप रही थीं। बच्चे स्तंभित एवं चकित थे।

"श्रीमंत नाना साहब की जय हो!" एक सैनिक चिल्लाया, "महाराज यह हमारे शत्रु हैं। ये महिलाऐं गुप्तमार्ग से किले की ओर भगी जा रही थीं। हम इन्हें बन्दी बनाकर लाये हैं। राजदरबार के उपलक्ष्य में, श्रीमंत के चरणों में यह उपहार सादर समर्पित कर रहे हैं।"

नाना साहब ने गंभीरता से सैनिकों की ओर निहारा। महिलाओं एवं बच्चों की ओर दृष्टिपात किया। उनकी आँखों में आँसू थे। चेहरे पर निराशा की भावना थी। सभी हतप्रभ थीं। आँखों में मृत्यु नाच रही थी। मुखमंडल पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। दरबारियों में कानाफूसी हो रही थी।

कोई कह रहा था, "इन्हें जीवित जला दिया जाए।" कोई सुझाव दे रहा था, "नील की तरह पेड़ पर लटका कर गोली मार दी जाए।"

विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न प्रकार की बातें सुनकर महिलाएें कांप-कांप उठती थीं। बच्चे सिहर-सिहरकर अपनी माताओं मुख ताकने लगते थे। माताएँ कभी नाना साहब की ओर देखतीं, कभी दरबारियों की ओर ! कभी अपने बच्चों की आँखों में अपनी आँसूभरी आँखें डाल देत ।

नाना साहब का शीश ऊपर उठा। नमित नयनों से दरबारी उनकी ओर देखने लगे।

"मैं आप सब के उत्साह की सराहना करता हूँ !" नाना साहब ने गंभीरता से कहा, "भावुकता और आवेश में आप अपने आदर्श को न भूल जाएँ। यह सभी शरणागत हैं। शस्त्रहीन हैं। हमारी परम्परा यह नहीं कि शरणागतों पर हाथ उठावें, स्त्री-बच्चों को कष्ट दें। भविष्य के लिए यह मेरी चेतावनी भी है। यदि हम ऐसा करते हैं, तो इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा। मैं एक बार पुनः आपकी राष्ट्रभक्ति की प्रशंसा करता हूँ और इस उपहार को स्वीकार करते हुए आदेश देता हूँ कि इनका पूर्ण सम्मान किया जाए। हथकड़ियाँ खोल दी जाएँ।"

आदेश पाते ही सैनिकों ने बढ़कर उनकी हथकड़ियाँ खोल दीं। उपस्थित जन-समूह ने जयनाद किया।

अंग्रेज महिलाएँ आशा के विपरीत व्यवहार पर आश्चर्यचकित हो उठीं। नाना साहब की विशाल सहृदयता पर वे रीझ गयीं। उनके मस्तक श्रद्धा से झुक गये। वे प्रेम-विह्वला होकर कृतज्ञता से चिल्ला उठीं, "लांग लिव नाना साहब।"

"बस ! बस !!" नाना साहब ने हाथ उठाते हुए कहा, "बहुत हो चुका। इस जयघोष की कोई आवश्यकता नहीं। यह तो भारतीय परम्परा है।"

"नाना साब !" नवयुवती ने गद्‌गद् कंठ से कहा, "हम टुमारा अहसान टो होल लाइफ नहीं भूल सकटा। टुमने हमारा जान बचाया है।"

"मैडम !" नाना साहब ने नवयुवती की ओर दृष्टिपात करके कहा, "यह तो मेरा कर्तव्य था। अपने धर्म को समझनेवाले प्रत्येक भारतीय से तुम यही आशा करो।"

"सर ! आई एम नाट मैडम।" नवयुवती ने नाना साहब को समझाते हुए कहा, बट मिस, माई नेम इज़ 'मिस रोजी।'

"ओह !" नाना साहब मुस्कुराये "मैं नहीं जानता। मिस, क्षमा करना।" वे युवती की बात समझ नहीं सके थे।

"यू डोंट नो !" रोजी ने प्रश्न किया, मैडम क्या होता है ? मिस क्या होता है ?"

"जानता है !" पास ही बैठी हुई नाना साहब की चौदह वर्षीय चपल बालिका मैना ने कहा, "हम सब कुछ जानता है। तुमने अपना नाम क्या बताया—"मिस रोटी।"

"डियर सिस्टर !" नवयुवती चिल्लायी, "आई एम नॉट रोटी, आटा, टरकारी ! बट—मिस रोजी ! टुम 'रोज' जानटा है ?"

"हाँ ! हाँ !!" मैना ने कहा—"हम रोज जानता है। रोज माने —दिन।"

"डिन क्या ?" रोजी ने आश्चर्य से पूछा—"डे ?"

"डे नहीं बे।" मैना ने मुँह बनाते हुए चंचलता से अट्टहास किया।

रोजी हँस पड़ी। बड़े प्रेम से समझाती हुई बोली, "डियर सिस्टर ! रोज मीन्स गुलाब ! रोजी मीन्स—गुलाबी ! समझी ?"

"हाँ, हाँ, समझ गयी !" मैना चंचलता से बोली, "पहले से क्यों नहीं बता दिया—मेरा नाम गुलाबो-सिताबो है।"

"अब याड रहेगा ?" रोजी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"याद रहेगा !" मैना ने उत्तर दिया, "कठपुतली के नाच में 'गुलाबो सिताबो' का झगड़ा खूब देखा है।"

मैना के इतना कहते ही दरबार अट्टहासों से गूँज उठा। रोजी भी अपनी हँसी न रोक सकी। नाना साहब ने मुस्कुराते हुए तिरछी निगाहों

से मैना की ओर देखा। मैना की चुहलबाजी समाप्त हो गयी। पिता का संकेत पाते ही वह उठ खड़ी हुई। केशरिया साड़ी से उसने बालों को ढककर आँचल, फेंटे में खोंस लिया। पिता को शीश झुकाया। रोजी का हाथ पकड़कर धीरे से कहा, "चलो, तुम्हें घुमा लावें!"

"कहाँ घूमने चलेगा!"

"कछार में!" मैना ने कहा, "यहाँ महामारी फैली है। वहाँ अच्छी हवा मिलेगी!"

"ओ माई गॉड!" रोजी चिल्लायी, "हम कछार में नहीं जाटा! कोई पकड़ लेगा टब! टुम क्या करेगा?"

"हम यह करेगा!" मैना ने रोजी की हथेली दबाते हुए कहा, "हम उसका हाथ तोड़ देगा!"

"ओ माई गॉड!" रोजी उचकती हुई चिल्लायी, "किटना टाकट है टुमारे हाथ में। मैना हँस पड़ी। बोली, "बहोट टाकट है। डरो नहीं। कोई तुम्हारी ओर आँख नहीं उठा सकता। मसल दूँगी उसे। चूर-चूर हो जायगा। चलो चलें।"

संपूर्ण दरबारी बैठे मुस्कुरा रहे थे।

रोजी अपनी हथेली सहलाती हुई मैना के साथ चल पड़ी। उसे अब पूर्ण विश्वास हो गया था कि मैना के रहते कोई उसका अहित नहीं कर सकता। वह कभी मैना के भरे-पूरे चेहरे की ओर देखती, कभी उसकी सुडौल एवं बलिष्ठ बाहों की ओर! कभी उसकी निगाह उसके काले-चमकीले बालों के गोलाकार जूड़े में उलझ जाती तो कभी सिर से पैर तक लिपटी केशरिया साड़ी पर! अन्य अंग्रेज बच्चे तथा उनकी माताएँ बन्दीगृह की ओर चली गयीं। केवल कुमारियाँ ही रोजी का साथ दे सकीं। मैना उन्हें कछार की ओर लेकर चल पड़ी।

मैना के जाने के पश्चात् दरबार समाप्त हो गया। सभी दरबारी अपने-अपने भवन में चले गये। नाना साहब ने एक सैनिक को बुलाकर

कुछ कहा। आदेश पाते ही वह बाहर निकल गया। नाना साहब अंतःपुर की ओर चले गये।

अस्तोन्मुख सूर्य का पीला एवं निस्तेज मुख बता रहा था कि साँझ होने में अब अधिक देर नहीं।

●●●

२

तीन-चार दिनों से कानपुर में जो कुछ हो रहा था, उससे नाना साहब का मन अत्याधिक दुःखी था। दरबार से वापस आने के पश्चात् वे अपने कक्ष में टहल रहे थे। सतीचौरा घाट की घटना से उनका दिल भर-भर आता था। यह घटना वे भूल भी नहीं पाये थे कि आज प्रातः-काल कर्नल एवर्ट की पत्नी की हत्या ने उनका घाव पुनः हरा कर दिया।

"कर्नल एवर्ट।" नाना साहब के होंठ फड़के, बदमाश! कितनी निर्ममता उसने दिखायी थी। उसके सैनिकों ने एक कन्या....सोचते-सोचते उन्हें एक झटका-सा लगा। किन्तु उसकी पत्नी?" उन्होंने अपने-आप प्रश्न किया, "वह तो निर्दोष थी?"

"नहीं!" अंतरात्मा ने उत्तर दिया-"वह विद्रोहियों की आँखों में धूल झोंककर अपने पति को छिपाये लिये जा रही थी। ऊपर से झूठ भी बोली। "बुभुक्षितः किं न करोति पापं ....!" उस बेचारी का क्या दोष! सोचते-सोचते नाना साहब की चेतना घटना के गर्त में समा गयी—सर

ह्वीलर ने आत्म-समर्पण कर दिया है ।गढ़ी पर सफेद झंडा लहरा रहा है । क्रांतिकारियों के झुण्ड-के झुण्ड सड़कों पर घूम रहें हैं । अंग्रेजों को प्राण बचाना दूभर हो गया है । कोई खानसामे की पोशाक पहनकर भाग रहा है, तो कोई कुली की । सैनिकों की एक टोली जय-जयकार करती हुई चली आ रही है । उन्हें सामने से आती हुई एक डोली दिखायी पड़ी । डोली में पर्दा पड़ा था । दो कहार उसे उठाये थे । डोली की मच-मचाहट एवं कहारों की लचक से पता लग रहा था कि बैठी हुई सवारी का वजन काफी है । एक अंग्रेज महिला पीछे-पीछे चल रही थी । सैनिकों को संदेह हुआ । उन्होंने डोली रोक देने का आदेश दिया । महिला का चेहरा फक् हो गया । कहार खड़े हो गये ।

"औरट है औरट ।" महिला घबड़ाए हुए स्वर में बोली- "बीमार है ।"

'औरत' शब्द सुनते ही क्रांतिकारियों के पैर रुक गये । उन्हें यह कठोर आदेश स्मरण हो आया, "अंग्रेज महिलाओं तथा बच्चों पर हाथ न उठाया जाए ।"

एक मसखरे से न रहा गया । बोला, "मेम साहब, कितनी मोटी औरट है । डोली टूटी जा रही है ।"

"बहोत मोटा ! अंग्रेज महिला ने दोनों हाथ उठाकर कहा, "टूम डूर रहो !"

उसके "डूर रहो !" कहते ही सैनिकों का संदेह और बढ़ गया । उन्होंने डोली घेर ली । कपड़ा बाहर खींच लिया । महिला चिल्लाती ही रही ।

"गुड़ मार्निग ! कर्नल साहब ! एक सैनिक ने चिल्लाकर कहा, "परेड आपको कैसी जँची ? पसन्द आयी न ?" "सबों ने एक साथ अट्टहास किया, आपकी यह वर्दी ! अजी फ्रॉक पहन लेते फ्रॉक ! डोली में घूँघट निकालकर बैठा जाता है ! देखें तो, आप कहाँ से बीमार हैं !

कर्नल सिटपिटा गया। उसे नीचे खींच लिया गया। एक दिन इसी कर्नल ने शराब के नशे में एक हिन्दुस्तानी सिपाही को गोली मार दी थी। और आज? सैनिकों ने उसका मजाक उड़ाया "औरट है औरट! बीमार है! डूर रहो!"

"दूर हट!" एक सैनिक ने डपटते हुए कहा—"तू स्त्री है। हम तुझ पर हाथ नहीं उठायेंगें। कर्नल हमारा शत्रु है!"

उसी समय एक सनसनाती हुई गोली महिला के वक्ष पर आ लगी। वह ढेर हो गयी। सैनिक भौचक्के-से इधर-उधर देखने लगे। कुछ दूरी पर एक नवयुवक दिखायी पड़ा। उसके हाथ में बन्दूक थी। वह कह रहा था, "मेरी बहन की बेइज्जती इसी एवर्ट के सैनिकों ने की थी। मैं उसका बदला ले रहा हूँ। अब मेरी छाती शीतल हो गयी।" सैनिकों ने उस नवयुवक का पीछा किया। वह कछार की ओर भाग गया। सैनिक लौट आये। वे एक महिला की हत्या से भयभीत थे।

"कर्नल एवर्ट की पत्नी की हत्या।" नाना साहब ने शीश ऊपर उठाया। कक्ष फानूसों से जगमगा रहा था। पता नहीं, परिचारिका कब उन्हें जलाकर चली गयी थी।

"यह दूसरा कलंक मेरे माथे पर लगा।" नाना साहब के होंठ हिले, "बेचारी निर्दोष औरत! अत्याचारी एवर्ट था। उसे दण्ड मिला, पर उसकी पत्नी? ····ऐसी अनेक महिलाओं का बलिदान सतीचौरा घाट पर हुआ होगा। चलते-चलते मैंने बन्दू सिंह से कहा था—"किसी पर हाथ न उठाना। केवल सतर्क रहना। जिस रास्ते से नावें जाएँ, उसके तीन-चार कोस तक धावा न बोला जाए। फिर भी यह सब हो गया।

"महिलाओं का खून!
बच्चों का खून!!

नाना साहब की आत्मा ग्लानि से भर गयी।—"इतिहास मुझे क्या कहेगा? यही न, कि नाना क्रूर था। निर्दयी था। हत्यारा था। हे ईश्वर!" उन्होंने एक ठण्ढी साँस ली। नयन भर आये। सोचते-सोचते

विचारों ने पल्टा खाया। उन्होंने सोचा, "इसमें मेरा क्या अपराध ? प्रयाग में अत्याचारी नील ने जो कुछ किया है, सैनिकों ने उसका ही बदला लिया है। मैं क्या करूँ ? नील ने महिलाओं को पेड़ में बँधवाकर गोली चलवायी। नादान शिशुओं को आग में भूना, गर्भ के अर्भकों को बाहर खिचवाया !...पता नहीं क्या-क्या किया ? उसके कार्यों को न मनुष्य की बुद्धि सोच सकती है, न कल्पना स्पर्श कर सकती है। यह काम नर-पिशाचों का है। यह सब उसी का परिणाम है। फिर भी, मैं नहीं चाहता कि दुनिया मुझे नील की तरह स्मरण करे। मैं नील नहीं, नाना हूँ। फिरंगी नहीं, भारतीय हूँ। राक्षस नहीं, मनुष्य हूँ। आज भी मेरे वन्दीगृह में एक सौ पच्चीस महिलाएँ बन्दी हैं। मैं उनके साथ वही सलूक करूँ तब ?"

"नहीं ! नहीं !!" नाना साहब की अन्तरात्मा ने उत्तर दिया, "तुम मनुष्य हो। तुमसे ऐसी आशा नहीं। वे शरणागत हैं। जो चाहो करो। वे प्रतिवाद थोड़े करेंगी ! पर सोचो, क्या यह उचित है !"

"यही महिलाएँ यदि उनके यहाँ होतीं, तब ?" दूसरा प्रश्न उठा।

"तुम्हीं यदि नील होते तब ? प्रश्न का उत्तर प्रश्न बन गया।

"नहीं, मैं नील नहीं हो सकता !"

"तब तुमसे ऐसी आशा भी नहीं की जा सकती !"

नाना साहब की आत्मा शान्त हो गयी। वे बैठ गये। उन्होंने महिला-बन्दीगृह की परिचारिका बेगम को बुला भेजा।

"श्रीमन्त नाना साहब की जय हो !" बेगम ने कक्ष में प्रवेश करते हुए शीश झुकाया।

बेगम छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की एक स्वस्थ सुन्दर तथा आकर्षक महिला थी। छरहरा शरीर, बड़ी-बड़ी आम की फाँक जैसी आँखें ! सुडौल, किन्तु लम्बी नासिका। पतले, कोमल होंठ ! काली घनी बरौनियाँ एवं बायें कपोल पर एक छोटा-सा काला तिल ! बेगम को अपनी सुन्दरता पर नाज था। हाँ, उसे अफसोस केवल इस बात का था कि उसके काले-

चमकीले केश दो-बालिश्त से बड़े नहीं थे ! यदि बाल की लम्बे होते, तो वह अपनी तुलना परियों से करती। फिर भी, वह उनका जूड़ा इस प्रकार बाँधती कि देखनेवाले को छोटेपन का भान न होता। अपनी चटक-मटक, साज-सिंगार के लिए वह किले-भर में मशहूर थी। उसके चेहरे पर अहर्निश मुसकान नाचा करती। वह स्वभाव से कोमल, अंतस् की कठोर एवं हँसोड़ थी। जब्र वह सहज भाव से मुस्कुराती, तो गालों में गड्ढे पड़ जाते। ऐसे गड्ढे, जो बरबस ही सब का मन मोह लेते। जब कठोरता उभरती, तब वह प्रतिक्रियावादी बन जाती। हँसती, तो अपने आसपास का वातावरण हँसा देती। तभी तो नाना साहब की सेना का एक सेनानी—सरवर खाँ, उस पर लट्टू था। वह सरवर खाँ की रखैल थी। नाना साहब के अन्तःपुर में ही रहती थी। इस समय उसे बन्दी अंग्रेज महिलाओं की देखरेख का भार सौंपा गया था।

बेगम के कक्ष में प्रवेश करते ही नाना साहब ने उस पर दृष्टिपात किया। वह काले रेशमी बुर्के में लिपटी थी। पैरों की लाल-लाल मखमली जूतियाँ फर्श पर पड़ी नीली कालीन पर नीलम की अंगूठी में पुखराज की तरह चमक रही थीं। नाना साहब ने धीरे से कहा, "बेगम !"

"इजाजत श्रीमन्त !" बेगम ने हाथ जोड़ दिये। काले बुर्के में लहर-सी उठी और समा गयी।

"बन्दी फिरंगी महिलाओं की क्या दशा है ?"

"श्रीमन्त ! वे आराम से हैं !"

"भोजन का क्या प्रबन्ध है ?"

"दिन में तीन बार उन्हें चपातियाँ दी जाती हैं। गोश्त दिया जाता है !"

"काम के लिए उन्हें विवश तो नहीं किया जाता ?"

"नहीं !" बेगम ने उत्तर दिया, "वे काम ही क्या कर सकती हैं ? उनकी छुई हुई चीज भी तो नापाक हो जाती है। हाँ, कपड़े धोती हैं।

दिन-भर फटाफट-फटाफट लगाये रहती हैं। दिल में आता है कि हरम-भर के कपड़े इन्हें सौंप दूँ। धोबी कुछ दिन आराम कर ले !"

"चुप, चुप !!" नाना साहब ने उसे डाँटते हुए कहा, "इस तरह की बात नहीं की जाती।" फिर कुछ सोचते हुए पूछा, "बच्चों का क्या प्रबन्ध है ?"

"बिस्कुट और अण्डे तो उन्हें मिल नहीं पाते !" बेगम ने रुखाई से कहा, "गाय का दूध खूब पिलाया जाता है।"

"ठीक !" नाना साहब ने कुछ सोचते हुए कहा, "ध्यान रखना, कोई कष्ट न होने पाये !"

"नहीं ! नहीं !! श्रीमन्त !" बेगम तपाक से बोली, "उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी, फिर भी सेहत के लिए जरूरी है कि वे कुछ काम करें, वर्ना जिस्म में चर्बी फैल जाएगी !"

"काम क्या करावेगी ?" नाना साहब ने प्रश्न किया।

"श्रीमन्त !" बेगम ने चञ्चलता से उत्तर दिया, "इजाज़त दें तो चकिया पिसवाऊँ ! एक-एक चक्की में तीन-तीन को जोत दूँ। दस मन आटा रोज तैयार होगा !"

"नहीं !" नाना साहब ने बनावटी क्रोध दिखाते हुए कहा, "बदमाशी न करना !"

"न करूँगी !" बेगम ने हाथ जोड़कर शीश झुकाया।

"नगर में चारों ओर लाशें सड़ रही हैं।" नाना साहब बोले, "दुर्गन्ध आ रही है। महामारी और अतिसार का प्रकोप है। ध्यान रखना, कहीं बन्दीगृह में ऐसी कोई दुर्घटना न हो जाए।"

नाना साहब के इतना कहते ही बेगम विहँस उठी। बोली, "कल एक मेम के 'कै-दस्त' शुरू हो गयी थी। 'ओ ! ओ ! ओ !" कर रही थी। घड़ों पानी पेट से निकला। मेरी तो तबियत ऊब गयी।"

"क्या बन्दीगृह में भी हैजे का प्रकोप हो गया ?" नाना साहब ने चौंकते हुए प्रश्न किया।

"नहीं, श्रीमन्त !" बेगम ने उत्तर दिया, "मुझे लगता है वह खाना ज्यादा खा गयी थी। गर्मी पड़ ही रही है। हजम नहीं कर पायी। लगी "ओ....ओ....ओ" करने।"

"भोजनोपरान्त उन्हें शुद्ध वायु में प्रातः-सायं टहलाया जाये!" नाना साहब ने कुछ सोचते हुए पूछा, "कैसा रहेगा?"

"सेहत ठीक रहेगी!" बेगम मुस्कुराती हुई बोली, "और क्या बताऊँ कैसा रहेगा। खूराक बढ़ेगी, साथ-ही-साथ खर्च भी! ड्योढ़ी रसद लगेगी!"

"मैंने मैना से कह दिया है!" नाना साहब बोले, "वह उन्हें कछार की ओर टहलाया करेगी। खाद्य-सामग्री की तू चिन्ता न कर! अनाज भरा पड़ा है। अच्छा?"

बेगम ने स्वीकृतिसूचक शीश हिला दिया।

नाना साहब उठकर खड़े हो गये। सन्ध्या करने का समय हो चुका था।

बेगम नतमस्तक होकर कक्ष से बाहर निकल गयी।

● ● ●

३

गंगा के कछार की असमतल भूमि पर उभरे हुए टीले, डूबते सूर्य की सिन्दूरी छाया में अपने-आप लाल हुए जा रहे थे। टीलों के नीचे, कहीं-छोटी-छोटी बरसाती नालियाँ थीं, तो कहीं बड़े-बड़े गहरे नाले।

धूलमिश्रित सिकताकणों पर चरवाहों के पदचिह्नों से टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियाँ बन गयी थीं। पगडण्डियों के दोनों ओर सरपत एवं जवाँस की काँटेदार हरी-भरी झाड़ियाँ थीं, जिनके बीच-बीच में कहीं कुश के नोकदार पुञ्ज उगे थे तो कहीं अरुण, श्वेत, नील पुष्प-गुच्छोंवाले मन्दार ! गर्मी और तपन से कुश-पुञ्ज तो पियरा गये थे, किन्तु मन्दार के हरे, रेशमी, दूधिया पल्लव झरबेरी की झाड़ियों से आँखमिचौनी खेल रहे थे। यत्र-तत्र रीयाँ एवं बबूल के पेड़ सजग प्रहरी-से खड़े थे। कुछ दूरी पर चमकती हुई बालू के मध्य में, गंगा की क्षीण धारा दिखायी पड़ रही थी। लाल-लाल किरणें धारा के मध्य में ऐसी चमक रही थीं, मानों पिघले हुए सोने के कुण्ड में सिन्दूर-भरी शलाकाएँ हों ! रेत में फैली तरबूज एवं ककड़ी की बेलें घोड़ों की टापों से रौंद गयी थीं। फूस की झोपड़ियाँ औंधी पड़ी थीं। सतीचौरा काण्ड के चिह्न तट पर स्पष्ट थे।

सन्ध्या को इस मनोरम छाया में मैना रोजी का हाथ पकड़े, कछार में प्रवेश कर चुकी थी। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् उसने रोजी से कहा, "आगे पगडण्डी है। मैं अपनी साड़ी समेट लेती हूँ। काँटों में वह कहीं उलझ न जाये। तुम भी रास्ता देखकर चलना।"

"क्यों ? क्या बात है ?" रोजी ने प्रश्न किया; "कोई खतरा है ?"

"हाँ" मैना ने कहा, "गंगा के कछार में पग-पग पर खतरा है !"

"कैसा खतरा ?" रोजी भयभीत होकर बोली।

"यहाँ काँटे हैं, काँटे !" मैना मुस्कुरात हुई बोली, "झरबेरी के काँटे, बबूल के काँटे, बेल के काँटे ! तुम्हारे पैरों में कहीं चुभ न जायँ !"

"वेल सिस्टर !" रोजी बोली, टुम काँटों से नहीं डरटा ?"

"हमें क्या डर !" मैना ने चुटकी ली, "हमलोग तो स्वयं कम्पनी सरकार के लिए काँटे हैं। काँटा कहीं काँटे से डरता है ? डरो तो तुम डरो !" कहती हुई मैना खिलखिलाकर हँस पड़ी। रोजी उसका व्यंग्य समझती हुई भी बात बदलकर बोली, "यहाँ काँटा बहोट होटा है। जगह-जगह काँटा है ! घर-घर काँटा है !"

"हाँ, हाँ !" मैना बीच में ही चिल्लायी, "यहाँ घर-घर काँटा है। मगर गंगा के कछार में तो कण-कण काँटा है। इतने काँटे तुम्हें कहीं भी न मिलेंगे।"

"हमारी टेम्स के कछार में काँटा नहीं होटा !" रोजी को सहसा टेम्स नदी की याद आ गयी। वह अभिज्ञता प्रकट करती हुई बोली, "डियर सिस्टर ! गंगा के कछार का काँटा बाहर भी जाटा है ?"

"हाँ, हाँ !" मैना मुस्कुरायी, "जब लन्दन जाना, तो थोड़े-से लेती जाना। टेम्स के कछार में बो देना। याद रहेगा न ?"

"येस। येस !" रोजी बोली, "टुम उखारकर डे डेना !"

"अवश्य दे दूँगी !" मैना बोली, "ऐसे काँटे दूँगी कि जीवनभर याद करोगी। मगर यह तो वताओ, टेम्स का कछार कितना बड़ा है ?"

"ओ सिस्टर !" रोजी चीखी, "वहाँ कछार नहीं है। हम कहाँ बोवेगा ?"

"अपनी छाती में !" मैना ने पुनः चुटकी ली।

"छाटी में काँटा !" रोजी खिलखिलायी, "मर जाऊँगी !"

"मरेगी नहीं !" मैना ने कहा, "वह धीरे-धीरे कसकता रहेगा। काँटा लगने से कोई मरता थोड़े है !"

दोनों इसी तरह हास-परिहास करती चली जा रही थीं। रोजी के साथ की अन्य अंग्रेज युवतियाँ हिन्दी न समझ सकने के कारण मौन थीं। केवल कहीं-कहीं भाव समझकर वे हँस-मुस्कुरा देती थीं। वे सँकरी पगडण्डी से टीले के चढ़ाव पर दो कदम ही चली होंगी कि रोजी चिल्ला उठी, "ओ माइ गॉड !"

मैना चौंक उठी। उसने देखा, रोजी के स्लीपर को छेदकर एक काँटा उसके तलवे में चुभ गया था। रोजी पैर पकड़कर वैठ गयी।

"क्या हुआ ?" मैना ने उसे सँभालते हुए पूछा, "काँटा चुभ गया ?"

"चुभ गया !" रोजी चिल्लायी, "सिस्टर ! इसे निकालो !"

मैना ने झपटकर एक दूसरा काँटा तोड़ लिया।

"यह क्या होगा ?" रोजी ने कांपते हुए पूछा ।

"इसी से निकालूँगी !" मैना बोली, "तुम्हें कुछ पता भी है ? काँटा, काँटे से ही निकलता है ।"

एक नुकीले काँटे से मैना ने धीरे-धीरे जहाँ काँटा चुभा था, कुरेदना शुरू किया। रोजी सिसकती और उचकती रही। मैना काँटा निकालती रही। धीरे-धीरे काँटा बाहर निकल आया। अन्य अंग्रेज युवतियाँ तन्मयता से मैना के हाथों का कौशल देखती रहीं।

"यह लो !" मैना ने काँटा बाहर करते हुए कहा ।

रोजी उसे हाथ में लेती हुई आश्चर्य से बोली, "कितना बड़ा काँटा है ! सिस्टर, टुमारे भी कभी चुभा है ?"

"खूब चुभा है !" मैना ने मुंह बनाया, "हमारे इससे बड़े-बड़े काँटे चुभे हैं ! मगर हमलोग चिल्लाते नहीं। तुम तो एक ही काँटे में रो पड़ी। वह भी पैर का !"

"तुम्हारे कहाँ चुभा है ?"

"छाती में !"

"छाटी में !" रोजी ने आश्चर्य से मैना की ओर निहारा ।

"हाँ, हाँ !" मैना बोली, "छाती में चुभा है ।"

"लाओ देखें !" रोजी ने मैना की कलाई थाम ली ।

"दिखायीं नहीं पड़ेगा !" मैना विहँसकर बोली, "बहुत गहरे तक चला गया है ।"

"सिस्टर !" रोजी ने उसका हाथ खींचा, "लौट चलो !"

"हाँ" मैना ने कहा ।" अब कछार की ओर नहीं चलेंगे ।"

"क्यों ?"

"तुम फिर घायल हो गयी तब ?"मैना ने पुनः चुटकी ली, "बारबार कौन काँटे निकालेगा। चलो रेत में चलें। गंगा के किनारे !"

मैना के इतना कहते ही सभी वापस लौट पड़ीं। ऊँचे-नीचे टीलों को पारकर जब वे खेत में पहुँचीं, तो उन्हें सरपत के पुन्जों से निकलता

हुआ एक अश्वारोही दिखायी पड़ा। उसे देखते ही रोजी चिल्लायी—मुझे बचाओ ! ओ सिस्टर, बडमास आ गया !"

मैना ने घूमकर देखा—एक घुड़सवार कछार से रेत की ओर चला आ रहा है, वह अभी कुछ दूरी पर था। मैना उसे पहचान न सकी। सामने सचमुच एक नयी आपत्ति आ गयी थी। वह विस्फारित नेत्रों से घुड़सवार को देखने लगी। अस्ताचलगामी सूर्य की लोहित किरणें पता नहीं कहाँ तिरोहित हो गयी थीं। धीरे-धीरे साँझ की कालिमा कछार पर उतरने लगी थी। मैना रोजी को तट की ओर केवल इसलिए लिये जा रही थी कि अभी-अभी उसने उसके पैर छू लिये थे। वे सब-की सक विधर्मी हैं। वह ठहरी कोंकण में ब्राह्मणकुलीय ! कितना बड़ा पाप उसने कर डाला है। मैना को याद आया—"उसकी बूढ़ी परदादी गंगाबाई कितनी धर्म-निष्ठ थीं। किसी शूद्र की छाया पड़ जाते ही स्नान कर डालती थीं। राजभवन के भीतर कोई शूद्र महिला आने नहीं पाती थी। वे बताया करती थीं कि उनके पूर्वज महाराष्ट्र में मथेरां पहाड़ियों की तलहटी में इससे पवित्र जीवन बिताते थे। उसी पावन वंश की लड़की होकर उसने आज फिरंगी लड़की का पैर स्पर्श कर लिया। राम ! राम !! ॐ भूर्भुवः स्वःतत्‌ ······मैना ने गायत्री मंत्र पढ़ा। उसे लगा—अन्तःकरण तो पवित्र हो चुका है, किन्तु शरीर बिना गंगाजल के पवित्र न हो सकेगा। वह अपने हाथों को गंगाजल में खूब मल-मलकर धोना चाहती थी। डुबकियाँ लगाकर शरीर का कलमष गंगा की उत्ताल-तरंगों में बहाना चाहती थी। वह अपवित्र है। बापू बिना उसे साथ लिये भोजन नहीं करते। माँ बिना हथेली चूमे शयन नहीं करती। यह अपवित्र हथेली वह माँ के अधरों तक कैसे जाने देगी। इन उंगलियों से वह पिता की थाली कैसे स्पर्श करेगी ! उसने सुना था—गायत्री मंत्र के जप से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। फिर भी उसे लग रहा था, जैसे उसकी हथेली दुर्गन्धयुक्त मल में डूब गयी है। वह हाथ में लिपटा है। वह सिहर उठी। वह गंगा जल से अपने को पवित्र करने जा रही थी कि पता नहीं अश्वारोही कहाँ से आ टपका !

रोजी और उसकी साथिनें शंकातुर खड़ी थीं। वे कभी घुड़सवार की ओर देखतीं, कभी मैना की ओर! उनकी भाव-भंगिमा क्षण-क्षण बदल रही थी। घुड़सवार ज्यों-ज्यों निकट आता जाता था, त्यों-त्यों उनकी परेशानी बढ़ती जाती थी। मैना भी कम परेशान न थी। वह गंभीरतापूर्वक अश्वारोही को देख रही थी। अश्वारोही और निकट आ गया। उसने थोड़ी दूर पर ही; रेत में अपना घोड़ा रोक लिया। जोर से खखारा! रोजी काँप उठी। मैना के अधरों पर मुसकान नाच उठी। उसने जोर से पुकारा, "माधव भैया!"

माधव ने पुनः खखारा। मैना उछलती हुई माधव के निकट जा पहुँची। सहजभाव से बोली "भैया, तुम कैसे आ गये?"

रोजी तथा उसकी साथिनें आपस में काना-फूसी करने लगीं।

"मैना!" माधव ने धीरे कहा, "मुझे श्रीमंत साहब ने तुम्हारी रक्षा के लिए भेजा है। चारों ओर अब भी फिरंगियों के गुप्तचर सक्रिय हैं। कानपुर में हमारा अधिकार हो गया, तो क्या हुआ? उनकी योजनाएँ अब भी चल रही हैं, किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। जैसे ही तुम दरबार से चली, वैसे ही श्रीमंत साहब के आदेश से मैं तुम्हारे पीछे-पीछे लग गया था। कछार में फिरंगी महिलाओं के साथ तुम्हारा अकेली जाना निरापद नहीं था। कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए। कुछ सैनिक इधर-उधर और छिपे हैं। गंगा की ओर जब तुम चली, तब मुझे भय हो गया कि कहीं ये लोग तुम्हें गंगा में डुबो न दें!" कहता हुआ माधव हँस पड़ा।

"नहीं भैया!" मैना ने कहा, मुझे इतनी भीरु न समझो! मैं अकेली ही इन सबों के लिए पर्याप्त हूँ। बात यह है कि रोजी का पैर मेरे हाथ से स्पर्श हो गया है ....।" मैना ने हथेली पर दृष्टिपात करते हुए कहा।

"कैसे?" माधव ने पूछा।

"उसके पैर में काँटा चुभ गया था।" मैना बोली, "उसे मैंने अपने हाथ से निकाला है। क्रिस्तान का पैर हाथ से स्पर्श हो गया है। मन होता है, स्नान कर डालूं।"

"धत् पगली!" माधव ने हँसते हुए कहा, हाथ धो ले, स्नान की क्या आवश्यकता ? गायत्री मंत्र जप ले, पवित्र हो गयी।"

"सो तो कर चुकी!" मैना बोली, फिर भी अभी घुटन है। स्पर्श जो हो गया है।"

"पता है कुछ!" माधव ने कहा, "यह कलियुग है! कलियुग में स्पर्श दोष-नहीं लगता—"'स्पर्ष दोषात्मकं एकं पातकम् युगान्तर विषयमेव कलौ तु—परिदातव्यं तन्नीमकं वृजिन मित्यर्थ!" इतना कहकर माधव ने अट्टहास किया। मैना शरमा गयी। बोली, "कुछ भी हो, तुम थोड़ा रुक जाओ। मैं बिना स्नान किये न जाऊँगी। तुम्हें क्या ? तुम तो सूअर की चर्वी के कारतूस दाँत से काट सकते हो। ब्रह्मास्त्र है ही कि कलियुग में स्पर्शदोष नहीं लगता। राजपूत जो ठहरे!"

माधव लज्जित हो गया। सचमुच उसने चर्वी के कारतूस दाँत से काटे हैं। मेरठ में विद्रोह का यह भी एक कारण था। सेना की भारतीय इकाई ने विद्रोह किया। विस्फोट हुआ। विस्फोट के प्रथम धड़ाके की सफलता के साथ वह नाना साहब की सेना में आ मिली। तब से यहीं है। मैना के व्यंग्य का संकेत उसी पर था। माधव बोला "—मैं चला थोड़े जाता हूँ। तुम स्नान, ध्यान और पूजन कर लो!"

मैना, माधव का मुँह ताकने लगी। बोली, "भैया, बुरा तो नहीं मान गये। तुम राजपूत हो। सब कुछ कर सकते हो।"

"नहीं मैना।" माधव ने स्नेह से कहा, "अच्छे लड़के इस तरह की बातें नहीं सोचा करते!"

मैना हँस पड़ी। दोनो बातें करते-करते तट की ओर बढ़े। रोजी माधव सिंह को देखते ही ऊँचे स्वर में बोली, "सिस्टर, इस बड़मास को खडेर डो!"

"खदेड़ दूँगी !" मैना बोली, "रोजी डरो नहीं, यह हमारा भाई है।"

"ओह !" रोजी बोली, "टुमारा भाई है। आई ऐम सॉरी !"

मैना और माधव दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

मैना अपने वस्त्र उतारने लगी। माधव जान-बूझकर थोरी दूर हट गया और मुँह फेर लिया। कपड़े उतारकर उसने साड़ी का फेंटा कमर में कसकर बाँध लिया। बालों को बिखराकर उन्हें समेट लिया। ढीला-ढाला जूड़ा लपेटकर वह हरहराती हुई गंगा की धारा में कूद पड़ी।

"ओ माई गॉड !" रोजी चीख पड़ी, "पकड़ो ! पकड़ो !! सिस्टर को पकड़ो !"

मैना गंगा की पावन तरंगों में गोते लगाती रही। तैरती रही। डूबती-उतराती रही। और रोजी चीखती रही, -"सिस्टर डूब गया ! पकड़ो ! पकड़ो !!"

माधव खड़ा हँसता रहा।

मैना भींगे वस्त्रों में लिपटी, सद्यःस्नात कमल-कलिका-सी जब बाहर निकली, तो द्वितीया का चंद्रमा उदय हो रहा था। उसने शिव-ललाट के पावन शशि को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। भींगी अलकों को निचोड़ा। बालों से चूते हुए हिम-कणों को हाथ से पोंछा। भींगी कंचुकी पर गीला आँचल छोड़कर वह बालू की धवल लहरियादार चादर पर खड़ी हो गयी। भींगे पैरों में रेत के चमकीले कण सन गये। रोजी उसे गौर से देखती रही।

अब पास आकर माधव सिंह ने घोड़े को चुमकारा। उसकी पीठ ठोंकी। रास पकड़कर वह आगे-आगे चल पड़ा। उसके पीछे मैना थी। अगल-बगल रोजी तथा अन्य युवतियाँ। जब सभी किले में पहुँचे तो चन्द्रमा डूब चुका था। मशालों की रोशनी से दुर्ग जगमगा रहा था। चौकियों पर खड़े सैनिक पहरा दे रहे थे। मैना उछलती हुई अंतःपुर में जाने लगी, तो रोजी ने कहा, "अच्छा सिस्टर, नमस्ते।"

मैना ने प्रतिनमस्कार सूचक हाथ जोड़ दिये।

माधव सिंह अंग्रेज युवतियों को लेकर महिला बंदीगृह की ओर चला गया। मैना अंतःपुर में चली आयी।

● ● ●

४

बन्दी अंग्रेज महिलाओं को भोजन तथा बच्चों को दूध देकर जब बेगम अपने कक्ष में लौटी, तब रात काफी हो चुकी थी। उसने धीरे से कक्ष के कपाट खोले। दीपक जलाया। दीपक के मंद-मंद प्रकाश में कक्ष जगमगा उठा। उसकी प्यासी आँखें इधर-उधर सरवर खाँ को खोजने लगीं। सरवर खाँ प्रतिदिन इस समय कक्ष में ही मिलता था। आज उसकी चारपाई सूनी पड़ी थी। भोजन जैसे-का-तैसा रखा था। बेगम ने गौर से सभी वस्तुओं को देखा। वे पूर्ववत् रखी थीं। वह अपने आप कुनमुना उठी, "अभी आये ही नहीं! आधी रात बीत चुकी है। पता नहीं, कहाँ भटक रहें हैं। अज़ीजन बीवी के यहाँ गये होंगे। सलाह करने! वहीं तो सबका मजमा लगता है। मशविरा होता है। ताँत्याटोपे, अजीमुल्ला खाँ, टिक्का सिंह, शमशुद्दीन साहब और जनाब मन खुद! सभी वहाँ गप्पें लड़ाते हैं। मिर्जा गालिब की गजलें सुनते हैं। रात में अपने-अपने घर आते हैं। कहते हैं, गदर की योजना बना रहे थे। वाहरे गदर, यह भी कोई गदर है? सुना है, नादिरशाह ने दिल्ली लूटी, तो कत्ले-आम करा दिया। नाना साहब ने कानपुर फतह किया, तो अंग्रेज औरतों

को दूध पिलाया । ऊपर से कहते हैं....।" बेगम ने मुँह बनाया—"हैजा और अतिसार फैल रहा है । सब को सुबह-शाम खुली हवा में टहला लाया करो । कैदखाना क्या ठहरा, सराय हो गयी । सबको गोश्त खिलाओ । चपातियाँ दो । नहलाओ-धुलाओ । लगता है, कोई रिश्तेदार आये हैं । मेरा बस चले तो बच्चों को दूध की जगह पोस्ते का पानी पिला दूँ । औरतों के पेट में बारुद भरकर आग लगा दूँ । तब ये गोरे-गोरे चिकने पेट बारूद के साथ गोलों की तरह दगें—धड़ाम ! धड़ाम !! धड़ाम !!!"

अंतिम शब्द बेगम के मुख से इस प्रकार निकला, मानो सचमुच गोला दग रहा है ।

"हरम में आतश-फिशाँ फट पड़ा क्या ?" सरवर खाँ ने कक्ष में प्रवेश करते हुए पूछा, "यह धड़ाम !....धड़ाम !!....धड़ाम !!! माजरा क्या है ?"

बेगम शरमा गयी । खाट से उठती हुई बोली, "परवरदिगार । सँभलकर आइयेगा ! यहाँ कयामत बरपा हो रही है ।"

"मुझे कयामत का एतिकाद नहीं !" सरवर खाँ ने विहँसकर कहा, "अजी, शबे-वस्ल में कहीं रोजेजज़ा होता है ?"

"वाह ! वाह !!" बेगम ने चुटकी ली, "क्या खुशनुमा शबे-वस्ल है । मालूम होता है अज़ीजन के कोठे से तशरीफ ला रहे हैं ।"

सरवर खाँ उसकी इस अदा पर मुस्कुरा उठा । बोला—"बड़ी दिलेर औरत है अज़ीजन ! ऐसे-ऐसे पैगाम सुनाती है कि मर्दों तक की अकल चकरा जाती है ।"

तभी तो मर्द उसे घेरे रहते हैं ? "बेगम ने पुनः चुटकी ली-"मैं भी उसका पैगाम सुन चुकी हूँ । कितनी अदा से गाती है:—

"ये जुनूने-इश्क के अंदाज छुट जायेंगे क्या ?
हम कहेंगे हाले दिल और आप फरमायेंगे क्या ?"

उसकी एक-एक गजल एक-एक पैग़ाम है । तभी तो सब घेरे रहते हैं ।"

बेगम के इतना कहते ही सरवर खाँ ने अट्टहास किया। हँसते हुए बोला, "बात्त तो सही है। एक तो गजब की आवाज और उस पर मिर्ज़ा की तड़पती हुई गज़लें, घायल कर देती हैं सुननेवालों को !"

"तभी तो मैं गोले दगा रही थी !" बेगम मुस्कराकर बोली, "ग़ालिब की गजलें सुनने के बाद कहीं कोई कमी रह गयी हो, तो उसे पूरी कर दूँ।"

"वाह री अक़ल।" सरवर खाँ ने व्यंग्य किया, कहीं कोई जुबानी गोलों से जख्मी होता है। मुँह से" धड़ाम !····धड़ाम !!" कह दिया, बस, घायल हो गया ?"

"और क्या ?" बेगम ने व्यंग्याघात किया, "अज़ीजन के पास कोई तोप है ? वह भी तो मुँह से गाती है। फिर क्यों क़यामत बरपा हो जाती है। घर लौटते हैं, तो होश नहीं रहता।"

"मैं वहाँ से नहीं आ रहा" सरवर खाँ ने खीझकर कहा, "बेगम साहिबा, नाराज न होइये ! मैं श्रीमंत नाना साहब के दरबार से आ रहा हूँ। खुदा के लिए अब तो जान बख्श दो !"

"बख्श दी !" बेगम आश्वस्त होकर बोली, "लेकिन खुदा के लिए नहीं, अपने लिए !"

"अब जान में जान आयी !" सरवर खाँ ने अचकन के बंद खोलते हुए कहा—"अभी तक तो लग रहा था—'तुम्हें नहीं है सरे-रिश्तये वफा का ख्याल !' लेकिन अब समझ गया—तहजीबदार हो। कुछ खाना-वाना भी मिलेगा ?"

"ज़रूर मिलेगा !" बेगम ने मुस्कुराते हुए कहा, "आप परेशान न हों। मुझे वफ़ा का—खयाल है। मगर अफसोस है—"जिस दिल पर नाज़ था, मुझे वह दिल नहीं रहा !"

"वल्लाह !" सरवर खाँ व्यंग्य से बोला, "बिल्ली को दिनोंरात चूहों का ही ख्याल रहता है। दिल क्या हो गया, बहरे-हिन्द हो गया। अरे, कुछ काम की भी बातें किया करो। देखती हो, चारों तरफ हंगामा

मचा है। दिल्ली, बरेली, मेरठ, कानपुर, लखनऊ और इलाहाबाद, हर जगह का नक्शा बदल रहा है। तुम्हारी उन मेमों का क्या हाल है, जिन्हें दूध पिलाती हो ?"

"उनका हाल न पूछिये !" बेगम ने गंभीर होते हुए उत्तर दिया, "उनके हाल तो फरिश्ते भी नहीं बता सकते। पता नहीं आपस में क्या 'गिटपिट-गिटपिट' बोला करती हैं। हिन्दी भी बोलती हैं तो 'तुम' को 'टुम', 'कपड़ा' को 'कपरा' कहती हैं। इन चुड़ैलों से ख़ुदा ही बचाये !" फिर वह मुस्कुरा उठी। मुस्कुराते ही गालों में गड्ढे पड़ गये। दीपक के मंद-मंद प्रकाश में कपोल का काला तिल चमककर और गाढ़ा हो गया। वह धीरे से उठी और रकाबियों में खाना परोसने लगी।

"अरे यह क्या हुआ ?" भोजनोपरान्त सरवर खाँ ने चौंककर पूछा, "कालीन कहाँ गयी, जो बिस्तरे के नाम पर तीन जीकाद ११७३ हिजरी यानी सौ वर्ष पुरानी दरी बिछी है।"

"मैंने उसमें आग लगा दी !" बेगम ने कहा, "एक फिरंगी बच्चे ने उसे गन्दा कर दिया था। मैंने उसे फूँक दिया।"

"अब क्या होगा ?" सरवर खाँ ने भोलेपन से पूछा।

उसके इतना कहते ही बेगम हँस पड़ी। बोली, "होगा क्या ? दो-एक दिन इसी पर आराम कर लीजिये। चारपाई में काँटे नहीं गड़े हैं कि छिद जाइएगा।"

"मुझे काँटों की परवाह नहीं !" सरवर खाँ ने आवेश में कहा, "तुझे पता है मैं वोकतरए शबनम, जो खारे-बयाबाँ पर !" यह तो घर है। यहाँ कैसा डर ?" इतना कहकर उसने बेगम के परागपूरित चेहरे की ओर देखा। धीरे से कहा, "बेगम साहिबा ! इन काँटों पर मुझे दो-चार दिन नहीं सोना है। मैं तो कल ही जा रहा हूँ।"

"कहाँ ?" बेगम पर जैसे ग़ाज गिर पड़ी हो। अपनी उमंगों को दबाती हुई बोली, "आप कहाँ जा रहे हैं ?"

"बिठूर !" सरवर खाँ ने उत्तर दिया, "परसों श्रीमंत नाना साहब का राजतिलक है। बिठूर में जलसा होगा।"

"और कौन-कौन जा रहा है ?" बेगम ने प्रश्न किया।

"अज़ीजन को छोड़कर बाकी सब !" सरवर खाँ ने चुटकी ली।

अज़ीजन का नाम सुनते ही बेगम हँस पड़ी। बोली, "इस मौके पर तो उसे जरूर जाना चाहिए। मुजरा कौन करेगा ?"

"उसने गाना-बजाना छोड़ दिया है।" सरवर खाँ ने उत्तर दिया, "तुम गफलत में हो। अज़ीजन, अब वह अज़ीजन नहीं रही जो दिलों पर खंजर फेर देती थी। वह अब गर्दन पर खंजर चलाने को तैयार है।"

"आप लौटेंगे कब ?" बेगम ने चारपाई पर बैठते हुए पूछा।

"खुदा हाफिज !" सरवर खाँ ने कहा, "कुछ बता नहीं सकता। लौटूँ या न लौटूँ !"

उसके इतना कहते ही बेगम का दिल भर आया। वह उसके पास बैठ गयी। नयनों से दो बड़े-बड़े मोती उसके दुपट्टे में टपक पड़े।

"रो रही हो ?" सरवर खाँ ने बेगम के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "मैं फिर मिलूँगा, इसमें रोने की क्या बात है ?"

"पता नहीं क्यों ?" बेगम हिचकी लेती हुई बोली, "आज मेरा दिल भर-भर आता है।" इतना कहकर उसने सरवर खाँ की ओर देखा, फिर उसके वक्ष में अपना मुखड़ा छिपा लिया। सरवर खाँ उसके छोटे-छोटे चमकीले केशों पर हाथ फेरता रहा। दीपक के मंद प्रकाश में अरुण कपोलों को थपथपाता रहा। बेगम गुम-सुम-सी उसके विशाल वक्ष पर पड़ी रही। दोनों की साँसें एक दूसरे की साँसों से टकरा रही थीं। धड़कनें एक दूसरे को छू रही थीं। कभी बेगम सरवर ख़ाँ की आँखों में समा जाती और कभी सरवर खाँ बेगम की आँखों में। रात का खामोश सन्नाटा अलसाया-सा पड़ा था। दीपशिखा झिलमिला रही थी। बेगम

ने उठकर उसे स्नेहासिक्त करना चाहा, मगर उठ न सकी। उसके अंग-प्रत्यंग शिथिल पड़ गये थे।

उसी समय राजपथ के घोर सन्नाटे में कोई गुनगुनाता हुआ निकला—

"कोई उम्मीद बर नहीं आती,
कोई सूरत नजर नहीं आती,
मौत का एक दिन मुअय्यन है—
नींद क्यों रातभर नहीं आती !"

दोनों की भुजाओं के बन्धन ढीले पड़ गये। एक बार फिर गर्म साँसे निकलीं, टकरायीं और एक दूसरे की साँसों में समा गयीं। दोनों का अंतस् एक साथ काँप उठा—"कोई उम्मीद बर नहीं आती····।" सरवर खाँ ने पंक्ति दुहरायी। बेगम ने प्यासी आँखों से उसकी ओर निहारा। सरवर खाँ गुनगुनाता रहा।—"मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यों रातभर नहीं आती !" बेगम के नयनों से अश्रुकण बरस पड़े। सरवर खाँ की बलिष्ठ भुजाओं के नीचे वह सिसकती रही।

"टन् ! टन् !! टन् !!!"

अर्धरात्रि का गजल बजा।

सरवर खाँ की भुजाएँ ढीली पड़ गयीं। बेगम का बंदीगृह में जाने का समय हो गया था। उसने दुपट्टे से आँसू पोंछते हुए अंतिम विदा ली। सरवर खाँ ने उसे पुनः अपनी बाँहों में आबद्ध करके, कपोलों पर एक अमिट स्मृति-चिह्न रख दिया।

बेगम ने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले। सिर पर काला रेशमी बुर्का डाला। सरवर खाँ की ओर भोली नजरों से निहारा। दोनों के बोझिल हृदय काँप उठे। बेगम सिहरती हुई कक्ष से बाहर निकल गयी।

सरवर खाँ ने दीपक बुझा दिया।

वातायन से तारकखचित नील अम्बर पर अपने भाव चरित नेत्र टिकाये वह बहुत देर तक जागता रहा। उसे कभी अजीजन*की याद आती, कभी बेगम का विछोह सिहरा देता।

● ● ●

५

संपूर्ण दरवार में स्तब्धता थी। नाना साहब अत्यधिक गंभीर मुद्रा में विराजमान थे। पार्श्व में ही उनकी पुत्री मैना बैठी थी। दूसरी ओर क्रम से मंत्री, सेनापति, कोतवाल, रिसालदार तथा अन्य सेनानी नमित नेत्रों से एक दूसरे को देख रहे थे। नाना साहब की गंभीरता और गहरी हो रही थी।

आज प्रायःकाल ही गुप्तचरों से सूचना मिली थी—"ह्वीलर के पतन से फिरंगी अत्यधिक क्षुब्ध हैं। हैवलॉक इलाहाबाद से कानपुर आने की तैयारी कर रहा है। उसके पास एक विशाल सेना है। अस्त्र-शस्त्र भी हैं। उसकी गतिविधि का पता लगाने के लिए नाना साहब ने गुप्तचरों को पुनः भेज दिया। अजीमुल्ला खाँ से गुप्त मंत्रणा की। स्नान, पूजा-पाठ से

---

*अजीजन और बेगम दोनों अलग-अलग हैं। प्रायः लोग उन्हें एक ही समझ बैठते हैं। बेगम सरवर खां की रखैल थी—देखिए, 'संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियाँ' पृष्ठ ३२। अजीजन शमशुद्दीन की प्रेमिका एवं सुप्रसिद्ध नर्तकी थी, जो बाद में क्रांतिकारी बन गयी। देखें, 'नया समाज' वर्ष १०, अंक ४, पृष्ठ ३५०।

निवृत्त होकर वे दरबार में पधारे थे। सभासदों ने हर्षध्वनि से स्वागत किया। नाना साहब आसन पर विराजमान हुए। दरबार की हलचल शांत हो गयी। सन्नाटा छा गया। नाना साहब ने एक विहंगम दृष्टि संपूर्ण दरबार पर डाली। प्रत्येक अधिकारी के चेहरे का अध्ययन किया। इसके बाद उनकी पैनी दृष्टि अपनी पुत्री मैना के आरक्त मुखमंडल में समा गयी।

मैना सिहर उठी।

नाना साहब का हृदय भर आया। निगाहें मैना के चेहरे से फिसलकर धरती की ओर देखने लगीं। हृदय की धड़कनों ने प्रश्न किया—"क्या यह नादान लड़की इतना बड़ा उत्तरदायित्व संभाल लेगी।"

"अवश्य।" आत्मविश्वास ने उत्तर दिया, "पेशवा-वंश का एक अबोध शिशु भी उत्तरदायित्व सँभालने की क्षमता रखता है। यह तो चौदह वर्ष की है। कोंकण-ब्राह्मणों ने कभी अपने रक्त को लज्जित नहीं किया। इसके भी शरीर में वही रक्त है। जीवन में माँ गंगाबाई का आशीर्वाद है। सिंह-शावक को दहाड़ना नहीं सिखलाया जाता। उसके सामने पड़ते ही गजराज स्वयं अपना मार्ग बदल लेता है।

"और यह मैना ?"

नाना साहब ने मैना के चेहरे की ओर पुनः देखा। मैना फिर सिहर उठी। नाना साहब सोचने लगे—"मैना एक पक्षी है। पक्षी होते हुए भी वह कितना अनुकरणशील, चतुर एवं संयत होता है। जब वह मनुष्य की बोली बोल सकता है, तब यह साक्षात् मैना, अपने पूर्वजों का अनुकरण क्यों नहीं करेगी" सोचते-सोचते नाना साहब का चेहरा चमक उठा। आत्मा में एक स्वर्गिक आनन्द हिलोरें लेने लगा। उन्होंने सहमी दृष्टि से दरबारियों की ओर देखा।

दरबार में पूर्ण सन्नाटा था। केवल वायु में लहराते हुए केशरिया ध्वज की आवाज़ आ रही थी—फर्र....फर्र....फर्र ! बीच-बीच में वन्दनवारों के आम्र-पल्लव आपस में संघर्षण करके मर्मरा उठते थे।

मैंना श्वेत रंग की दुग्ध-धवल साड़ी और वैसी ही कंचुकी पहने थी। सघन, कुंचिता केशराशि का ढीला-ढाला जूड़ा गर्दन पर लोट रहा था। आँचल के छोर से शीश ढँका था। हाँ, माथे पर केशों का कुछ भाग दिखायी पड़ रहा था। शुभ्र परिधान में ढँकी हुई श्याम अलकें ऐसी लग रही थीं, मानो श्यामल घटाओं पर चाँदनी की धवल चूनर पड़ी है। आरक्त मुखमंडल पर पूर्ण शांति विराजमान थी। वायु के झोंकों में झीना पट झलझला रहा था। दो-एक चंचल लटें इधर-उधर फिसलने का प्रयत्न कर रही थीं। मैना की कुशल उँगलियाँ उन्हें सतर्कता से सँभाल लेती थीं। कानों में शिरीष के पुष्पों से भी छोटे रत्नजटित कर्णफूल थे, जिनकी मणियाँ रह-रहकर चमक उठती थीं। वह दरबार में देवकन्या-सी बैठी थी। वह रह-रहकर गंभीरतापूर्वक पिता के मुख की ओर देख लेती थी। उसी समय नाना साहब के मुखमंडल पर देवोपम आभा देदीप्यमान हो उठी। उन्होंने गुरु गंभीर कण्ठ से पुकारा, "मैना !"

मैना की छाती धड़क उठी। उसने दोनों हाथ जोड़कर पिता को नमन किया।

दरबारियों की झुकी हुई आँखें ऊपर उठीं। वे कभी मैना की ओर देखते, कभी श्रीमंत नाना साहब की ओर! नाना साहब संयत स्वरों में कह रहे थे, "बेटी ! मैं जानता हूँ कि तुम अभी अल्प वयस्क हो। तुम्हारे कंधे दुर्बल हैं। उनमें किसी भी गुरुतर भार को सँभालने की शक्ति नहीं। और यह सब समझते हुए भी, मैं तुम्हें एक उत्तरदायित्व सौंपने जा रहा हूँ।" इतना कहकर उन्होंने वात्सल्यपूर्ण नेत्रों से निहारा। मैना एकटक उन्हें देख रही थी। उसकी भोली आँखें प्रश्न-चिह्न बन गयी थीं। उसने गंभीरतापूर्वक धीरे से कहा, "आज्ञा पिताजी !"

"बेटी !" नाना साहब ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, "तुम देखती हो, यह विद्रोह की घड़ियाँ हैं। देश की आत्मा घायल हो चुकी है। चारों ओर तोपें गरज रही हैं। सहस्रों भारतीय हताहत हो चुके हैं। छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व मिट रहा है। किसी का राजमुकुट छिन रहा

है, तो किसी के वन्धु-वांधव ! एक ओर फिरंगी सेना है । सेना में कुशल सेनापति हैं, तोपें हैं । दूसरी ओर भूखे-प्यासे-अस्त्र-शस्त्र-हीन भारतीय ! एक जननी जन्मभूमि को रौंद रहें हैं । दूसरे उसकी रक्षा में आत्मोसर्ग कर रहे हैं । समझती ही हो कि इस आग और आँसू से लिखे जानेवाले इतिहास का नाम उत्सर्ग है । आग बुझ जाएगी । आँसू सूख जायँगे; किन्तु उत्सर्ग अमर रहेगा । इस कठिन समय में, मैं तुम्हारे हाथों में एक गुरुतर भार सौंप रहा हूँ । मुझे विश्वास है तुम मेरे रक्त को लज्जित न करोगी ।"

"वापू!" मैना नें गद्‌गद् कण्ठ से कहा, "आप की पुत्री आग और आँसू के इतिहास में उत्सर्ग वनेगी ! आप आज्ञा दें !"

"वेटी !" नाना साहव ने भावावेश में कहा, "मेरे सम्मुख क्रांति की भावी योजनाएँ हैं । मुझे उनको कार्यान्वित करना है । कह नहीं सकता, कहाँ-कहाँ जाना पड़े, कहाँ-कहाँ रहना पड़े । ऐसी स्थिति में मैं वंदीगृह की सभी फिरंगी महिलाओं एवं वच्चों की रक्षा का भार तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ । वोलो तैयार हो ?"

नाना साहव के इतना कहते ही मैना की भुजाएँ फड़क उठीं । सुडौल कलाइयों में चूड़ियाँ खनखना उठीं । उसके चेहरे पर आत्म-विश्वास झलक आया । चमकते हुए ललाट की रेखाएँ मिट गयीं । दिव्य मुखमंडल जगमगा उठा । वह दृढ़ता से वोली,—"वापू ! यह मेरा सौभाग्य है । अपनी पुत्री को आपने किसी योग्य तो समझा ! आज का दिन मेरे लिए—गौरव का दिन है । मैं पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ वचन देती हूँ कि आपका रक्त कंलकित न होने दूँगी । आप अपनी पुत्री पर····।" कहते-कहते भावावेश में उसकी साँस फूल आयी । गुलावी अधरों पर तुहिन-कण झलकने लगे । उसने आँचल के छोर से अधरों को पोंछकर वाक्य पूरा किया,—"पिताजी, आप अपनी पुत्री पर पूर्ण विश्वास करें ।"

इसके आगे वह कुछ नहीं कह सकी । उसका स्वर सभासदों की करतलध्वनि में विलीन हो गया ।

"पुत्री !" नाना साहव ने गद्गद् कंठ से कहा—"तुमसे यही आशा थी।"

श्रीमंत नाना साहव की—जय हो !

मैना देवी की—जय हो !

संपूर्ण दरवार जयनादों से गूंज उठा।

मैना का मुखमंडल आरक्त हो उठा। वक्षस्थल फूल गया। उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर शीश नीचे की ओर झुका लिया।

श्रीमंत नाना साहव की आत्मा पुलकित थी। फिर भी हृदय रह-रह-कर भर आता था। "उत्सर्ग" उन्होंने अपने आप सोचा—आग और आँसू के इतिहास में उत्सर्ग ! मैना ! उन्होंने मैना की ओर निहारा। वे पुनः सोचने लगे। जीवन के विगत दिन स्मृति-पटल पर उभर आये।— "वाजीराव द्वितीय सिंहासन से हटा दिये गये थे। वे गंगातट पर, विठूर में अपना शेष जीवन विता रहे थे। उनके साथ कई अन्य महाराष्ट्रीय परिवार भी थे। कुछ दिनों के वाद वाजीराव की शरण में और परिवार भी आ गये। इन परिवारों में उनके पिता, माधव राव, का भी परिवार था। तव किसी को स्वप्न में भी विश्वास न रहा होगा कि यही परिवार ...." सोचते-सोचते उन्होंने मैना की ओर निहारा। उन्हें लगा, अधूरा वाक्य पूरा हो गया। मैना गंभीरतापूर्वक नतमस्तक वैठी थी। नाना साहव उससे कुछ कहने ही जा रहे थे कि उनके शब्द ज्यों-के-त्यों रुक गये। सभी दरवारी चौकन्ने हो गये। ब्रिग्रेडियर ज्वालाप्रसाद एक लड़के को साथ लिये खड़े थे।

"श्रीमंत नाना साहव की जय हो !" ब्रिग्रेडियर ज्वालाप्रसाद ने जय-नाद करते हुए कहा,—"श्रीमंत, यह क़रीम अली का वही लड़का है, जिसने....।"

सभी सभासद् अर्थपूर्ण दृष्टि से ज्वालाप्रसाद एवं उस लड़के की ओर देखने लगे। ब्रिग्रेडियर साहव अपनी वात पूरी भी न कर पाये थे कि नाना साहव ने उछलकर लड़के को हृदय से लगा लिया। पूरे दरवार

में एक लहर-सी दौड़ गयी। आपस में कानाफूसी होने लगी। थोड़ी देर में सभी समझ गये कि यह काने करीम अली का वही लड़का है, जिसने नये यंत्र का—आविष्कार करके फिरंगियों के भवन-के-भवन ढहा दिये थे। नाना साहब उस बच्चे को थोड़ी देर तक छाती से चिपटाये रहे। फिर उसे यथोचित आसन देते हुए बोले,—"बेटा! इस छोटी उम्र में तुमने जो वैज्ञानिक आविष्कार करके वीरतापूर्ण कार्य किया है, उस पर संपूर्ण देश गर्व करेगा!" कुछ रुककर लड़के के गाल थपथपाते हुए पूछा, —"बेटा! तुम्हारे दिमाग में यह सूझ कैसे पैदा हुई?"

"श्रीमंत!" लड़के ने मृदुता से कहा,—"अल्लाह की मिहरबानी है! वर्ना मुझमें इतनी अक्ल कहाँ थी कि कोई ईज़ाद करता। उसी ने इस खाकसार को चोट दी और चोट ने मुझसे ईज़ाद कराया!"

"अभी तक तो सुनता था" नाना साहब बोले—"आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, किन्तु आज लग रहा है, परिभाषा बदल गयी है। हृदय की चोट से भी आविष्कार होते हैं? धन्य है वह देश, जहाँ तुम-जैसा आविष्कारक पैदा हुआ!" फिर कुछ रुककर लड़के से प्रश्न किया, मगर "तुम्हें चोट कैसे लगी?"

"श्रीमंत!" लड़के ने उत्तर दिया,—"मैं जंग में थके, जख्मी और प्यासे सिपाहियों को पानी पिलाया करता था। बच्चा था, और कुछ तो कर नहीं सकता था। मादरे-हिन्द की खिदमत का मैंने यही रास्ता ढूंढ़ा था। मैं चटाई बिछाकर, पानी लेकर बैठता। जो भी आता, उसे पिला देता। एक दिन एक नौजवान सिपाही आया। वह बहुत प्यासा था। मैंने उसे पानी दिया तो वह इन्कार करते हुए बोला—"मैं तुम्हारे नापाक हाथों का पानी नहीं पीऊँगा!"

"क्यों? मैंने पूछा।

"तुम इस काबिल नहीं कि तुम्हारे हाथ का पानी पिया जा सके!"

"वजह!"

"पूरा देश फिरंगियों से लोहा ले रहा है। भारतमाता को इस समय एक-एक बच्चे की आवश्यकता है। मगर तुम ?" सैनिक ने क्रोध से कहा,—"हाथ-पर-हाथ धरे बैठे हो। जैसे कहीं कुछ हो ही नहीं रहा। यह काम तो बहुत से लूले, लगड़े, अंधे-अपाहिज भी कर सकते हैं। तुम कायर हो, डरपोक हो। प्राण बचाकर यहाँ बैठे हो। तुम्हारे हाथ का पानी कौन पियेगा !"

इतना कह, वह बिना पानी पिये चला गया। उसकी बात से मुझे चोट पहुँची। मेरा दिल नफरत से भर गया। मैंने तोपखाने में नौकरी कर ली। वहीं मुझे बारुद की ताकत का अहसास हुआ। मैंने ताकतवर गोले ढालने शुरू किये। उन गोलों की मरम्मत आप देख ही चुके हैं। एक ही गोले के धमाके से बड़े-बड़े मकान ढह गये। फिरंगियों के झुंड खाक हो गये। किसी को खबर ही न मिल पायी कि गोला कहाँ से आया, कहाँ दगा और कहाँ उड़ गया !"

"बच्चे !" नाना साहब ने आत्मविभोर होकर कहा,—"मैं सब कुछ सुन चुका हूँ। देश तुम्हारे इस आविष्कार पर गर्व करेगा। यह मेरा सौभाग्य है कि तुम-सा महान्, वैज्ञानिक मेरे राज्य में है। तुम देश के गौरव हो। मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूँ।" इतना कहकर उन्होंने एक बहुमूल्य शाल तथा एक सौ एक अशर्फियाँ लड़के को समर्पित कर दीं।

लड़के ने श्रीमंत नाना साहब के चरणों में शीश झुका दिया। नाना साहब ने उसे--भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया। दरबार जय-घोष से गूंज उठा।

सन्ध्या की स्वर्णिम छाया में दरबार समाप्त हुआ। नाना साहब अंतः-पुर के मंत्रणा-कक्ष में चले गये। मैना एवं अजीमुल्ला खाँ उनके साथ थे। बाहर जयघोष से आकाश प्रकंपित होता रहा।

● ● ●

६

सरवर खाँ विठूर चला गया। उसके जाने के पश्चात् बेगम दिनभर अपने कक्ष में नहीं गयी '। जाने का मन भी नहीं हुआ। प्रातःकाल उसने देखा कि श्रीमन्त नाना साहब की सवारी जा रही है। उससे न रहा गया। उसने झरोखे से झाँककर देखा—नाना साहब एक विशालकाय हाथी पर विराजमान हैं। हाथी की पीठ पर चाँदी का हौदा रखा है। जो रेशमी रस्सों से कसा है। हौदे में गंगा-यमुनी काम है। श्रीमन्त के शीश पर सोने का छत्र है। मोतियों की झालरें प्रकाश में चमचमा रही हैं। चलते समय उनकी बहन श्यामाबाई ने उनकी आरती उतारी। माथे पर तिलक लगाया। अब भी हल्दी और चावल के कुछ कण नाना साहब के मस्तक पर चमक रहे हैं। मैना ने अपने पिता के चरण-स्पर्श किये। पिता ने आशीर्वाद दिया। सोम-चषक-सी मैना की बड़ी-बड़ी आँखें झुक गयीं। उसका हृदय भर आया।

बेगम को लगा, वह भी नीचे उतरकर सरवर खाँ की आरती उतार ले। माथे पर तिलक लगा दे। जी-भरकर भेंट ले। मगर, ऐसा न कर सकी। उसने एक गर्म निःश्वास छोड़कर दूसरी ओर दृष्टिपात किया। हाथी के पीछे घुड़सवारों की फौज थी। बेगम एक-एक को देखने लगी। अजीमुल्ला खाँ, ब्रिग्रेडियर ज्वालाप्रसाद, तांत्याटोपे, सरदार टिक्का सिंह, शमशुद्दीन····देखते-देखते उसकी फिसलती निगाह सरवर खाँ पर रुक गयी। उसने आँखें भरकर उसे देखा। सरवर खाँ सफेद चूड़ीदार पायजामा पहने था। उसके ऊपर हल्के भूरे रंग की अचकन। सिर पर बैंजनी पाग था। कमरबन्द में तलवार लटक रही थी। वह एक हाथ से घोड़े की लगाम पकड़े था। दूसरा हाथ मूँछों पर था। वह अपने प्रेमी की राजपूती शान पर निहाल हो गयी। वह खुदावन्द करीम से इस्तदुआ करने लगी कि सरवर खाँ महज एक बार ऊपर निहार दे। पर, उसने ऐसा नहीं

किया। वह अपनी ही शान में मस्त रहा। सहसा प्रस्थानसूचक गोला दगा। नाना साहव का हाथी चल पड़ा। उसके साथ ही अन्य लोग भी। गोले की आवाज सुनते ही टिक्का सिंह का घोड़ा भड़का। वह आगे के दोनों पैर उठाकर खड़ा हो गया। पीछे को पिछड़ा। शमशुद्दीन के घोड़े से टकराया। वह उछल गया। पीछे सरवर खाँ का घोड़ा था। वह भी हिनहिनाता हुआ दो पैरों से खड़ा हो गया। सरवर खाँ ने रास कड़ी कर ली। एक झटका-सा लगा। उसकी निगाहें अपने आप ऊपर उठ गयीं। उसने देखा—"दो भोली-भाली मासूम आँखें उसकी ओर देख रही हैं। आँसुओं का समन्दर उछल रहा है।.......।" सरवर खाँ आगे कुछ न देख सका। उसका अन्तस् भींग गया। निगाहें ऊपर उठीं। फिर वही मासूम आँखें! उसने आँखों-ही-आँखों से कुछ कहा। दोनों की आँखें मिलने से जो शव्द वना, वह 'अलविदा!' था।

घोड़ा उछलकर वाहर निकल गया।

वेगम खड़ी देखती रहीं। आँखों का समन्दर पलकों की सीमा को लाँघ गया-। उसने आँसू पोंछकर धीरे से अल्लाह का नाम लिया। एक वार फिर वाहर की ओर देखा। सम्पूर्ण सेना जा चुकी थी। केवल नागरिकों के झुण्ड शेष थे। उसने जनसमूह पर एक विहंगम दृष्टि फेंकी। एक व्यक्ति पर उसकी निगाहें रुक गयीं। वह नागरिकों के झुण्ड से अलग खड़ा था। रंग साँवला था। वह चुन्नटदार धोती तथा कुर्ता पहने था। वह वेगम को कुछ अजीव-सा लगा। उसके आगे दो-चार व्यक्ति अलग खड़े आपस में काना-फूसी कर रहे थे। वेगम लौट आयी। इसके पश्चात् अपने कक्ष में जाने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। वह दिनभर वाहर-ही-वाहर रही। रात के एक-एक दृश्य उसे परेशान करते रहे। एक-एक वात हृदय कुरेदती रही। वह दिनभर अफसोस करती रही कि उसने व्यर्थ ही सरवर खाँ से कह दिया था कि—"जिस दिल पर नाज था मुझे वह दिल नहीं रहा!" कल जिस शेर को उसने मजाक में कह दिया था, आज उसी पर आँसू वहा रही थी।

"वह दिल अभी वैसा ही है !" बेगम ने सोचा—नाहक मैंने उन्हें चोट पहुँचायी। वे मुझे कितना चाहते हैं ! अब भी उसी तरह जान निसार करते हैं। चलते समय किस अदा से उन्होंने मुझे देखा था। पता नहीं, अब कब तक दीदार हो ! मिलें या न मिलें।

बेगम को एक-एक बात याद आने लगी। वह कल्पना-सिन्धु में डूबने-उतराने लगी। उसे लगा—सरवर खाँ पास ही बैठा है। वह मुस्कुरा रही है। गालों में गड्ढे पड़ गये हैं। सरवर खाँ कह रहा है—"ये गड्ढे नहीं, साक़ी की लबरेज प्यालियाँ हैं। पिला दो एक जाम !" बेगम ने ठंढी साँस ली ! पिला दूँ एक जाम ! लो, पी लो !" उसने अपने आप हाथ बढ़ा दिया। सरवर खाँ की एक-एक हरकत याद आ गयी।" वह हँसी ! वह मुस्कान ! वह चितवन ! बालों पर उलझी हुई उँगलियाँ। गाल के तिल को कुरेदते हुए नाखून। लच्छेदार बातें। कहकहे। कहकहों के बीच गालिब की गजलें !.....सोचने-सोचते बेगम का हृदय हाहाकार कर उठा। वह बन्दीगृह में ही गुमसुम-सी लेट रही।

"अरी बेगम !" मैना चिल्लायी—देख, इधर देख ! यह बच्चा कैसा उछल रहा है ?"

बेगम के मन में तो आया कि कह दें—"भाड़ में जाएँ बच्चे और जहन्नुम में जाय नौकरी !" किन्तु वह कुछ बोल न सकी। चुपचाप पड़ी रही।

मैना से न रहा गया। वह बेगम के पास पहुँची। उसका दुपट्टा खींचती हुई बोली—"आज तुझे क्या हो गया है ? प्रातःकाल से ही ऐसी पड़ी है। कहीं किसी ने जादू-टोना तो नहीं कर दिया ?"

बेगम पूर्ववत् चुपचाप पड़ी रही।

मैना ने दुपट्टा झटके से खींच लिया। दुपट्टा खुलते ही उदास मुख-मंडल पर भींगीं हुई मासूम आँखें बरस पड़ीं।

"अरी !" मैना चौंक पड़ी,—"तुम रो रही हो ? उठो तो। बेगम ! बेगम !! तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हें मेरी शपथ है।" मैना ने बेगम का

हाथ पकड़कर खींच लिया। अब बेगम उठ बैठी। मैना की चीख-पुकार सुनकर रोजी भी आ गयी। बेगम की लच्छेदार बातों एवं चुटकुलों से वह उस पर लट्टू थी। उसने बेगम का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, "वेल बेगम ! टुमारा टबियत खराब हैं ?"

"नहीं !" मैना ने कहा,—"हाथ छोड़ दो। वह ठीक हैं। उसे अफसोस हो गया है !"

"अपसोस, कैसा अपसोस ?" रोजी ने पूछा।

बेगम आवेश में कुछ कहना ही चाहती थी कि उसी समय कोठरी से कुछ अंग्रेज बच्चों के रोने की आवाज आयी। मैना उधर झपटी।

"बेगम !" उसने कोठरी के द्वार पर पहुँचकर पुकारा—"इन्हें दूध मिला या नहीं ?"

"नहीं !"

बेगम को अपनी गलती का खयाल आया। वह कुनमुनाती हुई उठी। दूध की बाल्टी उठा लायी। कटोरा भर-भर देने लगी। बच्चों के प्राणों में प्राण आ गये। चिल्ल-पों समाप्त हुई। सबको दूध पिलाकर वह मैना के साथ अंतःपुर की ओर चली। मैना समझ गयी थी कि सरवर खाँ के जाने के बाद से बेगम उदास है। अतः वह उसे बातों में लगाये रही। बेगम की भी उदासी दूर हो चुकी थी। आँगन में पहुँचते ही उसे शरारत सूझी। उसने मैना से कहा, "देखा उस निगोड़ी रोजी को। मुझसे कैसा पूछ रही थी—तुम्हें 'अपसोस' हो गया है। मुझे अफसोस है, तो उसका क्या ? वह तो खुश है। नाचे लहंगा पहनकर !"

मैना विहँस उठी। बोली, "बेगम, तुझे विनोद सूझ रहा है और मुझे भूख लगी है। भोजन तैयार हो चुका है। इसी बीच कोई शेर तो सुना दे।" और सुन, उस निगोड़ी ने नहीं, मैंने पूछा था।

"वाह मैना रानी !" बेगम का चेहरा खिल उठा। बोली, "मुझे मुआफ करना—शेर और खाने से क्या तअल्लुक। शेर को खाना समझ रखा है या खाने को शेर, जो भूख मिट जायगी ?"

5803

"सो तो नहीं मिटेगी !" मैना ने हँसकर कहा-"तेरी तबीयत जरूर ठीक हो जायगी।"

"अच्छा, यह वात है !" वेगम की नस-नस थिरक उठी, "तो सुनिये शेर मुलाहिजा हो:—

"उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है !"

"क्या वात है !" मैना ने व्यंग्य किया-"तो मैं चली, तू अठखेलियाँ कर।"

वेगम ने ठहाका लगाया। मैना ने उठते-उठते कहा, "वेगम, तुझे मेरी शपथ है। कहीं बैठकर रोने मत लगना। मैं अभी आ रही हूँ।"

"जल्दी आना।" वेगम ने हँसते हुए कहा, "वर्ना मैं रो पड़ूँगी !"

"रो, खूब रो !" मैना ने जाते-जाते कहा।

वेगम पुनः हँस पड़ी। जब मैना आँखों से ओझल हो गयी, तो वह लेटकर मिर्ज़ा गालिब की गजलें गुनगुनाने लगी।

भगवान भास्कर का रथ-चक्र तेजी से अस्ताचल की ओर घूमता जा रहा था और धूप में शीतलता आ गयी थी। लू के थपेड़े शांत हो गये थे। चारों ओर सन्ध्या-पूर्व का वातावरण फैलता आ रहा था।

● ● ●

७

प्रथम जुलाई, १८५७ का प्रभात ! संपूर्ण ब्रह्मावर्त प्रसन्नता के सिंधु में हिलोरें ले रहा था। आज श्रीमंत नाना साहब का राजतिलक था।

प्रातःकाल से ही सभी वयसों और वर्गों के लोग बिठूर की गलियों में घूम रहे थे। छोटी-छोटी लड़कियाँ रंग-बिरंगी पोशाकें पहने, चपलता से उछल रही थीं। कानपुर से बिठूर तक उपहार देनेवालों का ताँता बँधा था। कानपुर के अभिनंदन समारोह में लोगों की मनोकामनाएँ अधूरी रह गयी थीं। अब वे अपनी अभिलाषा पूर्णरूपेण मूर्तिमान करने जा रहे थे। दुर्ग की किलेबन्दी का स्पर्श करके सुरसरि की पावन धारा वह रही थी। किले से टकराती हुई लहरों का कलकल निनाद नाना साहब का जयगान-सा कर रहा था। गगनचुम्बी मंदिरों में बजते हुए घंटों का रव ध्वनित हो रहा था। अगरु-धूम्र से संपूर्ण भू-खंड सुरभित था। कोसों तक फैली हुई पुण्यसलिला भागीरथी का पवित्र जल प्रशांत सिन्धु को चुनौती दे रहा था। किरणों के प्रकाश में मंदिरों के स्वर्णाभ कलश चमचमा रहे थे। दुर्ग के अन्तःपथ गुलाबजल के छिड़काव से महमहा रहे थे। सभाभवन में वंदनवारों की झालरें लटक रही थीं। फ़र्श पर बहुमूल्य कालीनें बिछी हुई थीं, रंग-बिरंगे झाड़-फानूस हीरों जैसे दमक रहे थे। रेशमी पर्दों पर पड़ी हुई रंगीन झालरें वायु के झोकों में रह-रह-कर सिहर उठती थीं। स्थान-स्थान पर गंगाजल से भरे हुए तथा आम्र-पल्लवों से सुसज्जित मंगल-कलश रखे थे। इसी चहल-पहल के मध्य तोप का एक गोला दगा। पेशवा का पुराना राजसिंहासन समारोह के साथ सभा-भवन में रखा गया। आज बहुत दिनों के बाद उसके भाग्य-सूर्य का पुनरोदय हुआ था।

दुर्ग के भीतर बाजे बज रहे थे। कोकिल-कण्ठी महिलाएँ हाथों में आरती के थाल सजाये मंगल-गान गा रही थीं। सैनिकों की पंक्तियाँ

संचलन के लिए खड़ी थीं। निश्चित समय पर नाना साहब सभा-भवन में पधारे। जन-समूह ने जय-जयकार किया।

दूसरी ओर हवन-कुण्ड में हवि जल रही थी। चतुर्दिक धुआँ छाया हुआ था। नाना साहब के यज्ञ-स्थल पर पधारते ही पण्डितों ने वेदमन्त्रों का उच्चारण किया। माथे पर तिलक लगाया। महिलाओं ने बढ़कर आरती उतारी।

नाना नाहब नतमस्तक खड़े हो गये।

तोपों की गड़गड़ाहट से स्थल गूँज उठा। गोलों की आवाज में महिलाओं के स्वर डूब गये। वाद्यों की ध्वनि फीकी पड़ गयी। जनसमूह का जयनाद तिरोहित हो गया। केवल तोपों की आवाज ही सुनायी पड़ती थी या चारों ओर विकीर्ण धूमराशि ही दिखायी पड़ती थी। नाना साहब राजसिंहासन पर विराजमान हुए। पण्डितों ने 'स्वस्तिवाचन' किया। भेंट-उपहार देनेवालों का ताँता लग गया। चारण एवं वन्दीजन जय-जयकार करने लगे। श्रीमन्त नाना साहब सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए बार-बार नतमस्तक हो रहे थे।

थोड़ी देर पश्चात् राजतिलक-समारोह समाप्त हुआ।

नाना साहब ने देखा, किले के प्रांगण में अपार जनसमूह एकत्रित है। क्रांतिकारी युवकों की एक टोली कुछ दूरी पर ढोलक, झाँझ, करताल बजाती गा रही है—

'फूलो तोरइया रे झांसी मां—
मेरठ मां फूला गुलाब
फूला केवरा रे दिल्ली मां—
फरंगी मारौ बीच मैदान !'

जन-समूह लोकगीत को तन्मयता से सुन रहा है! महिलाएँ मधुर स्वर में मंगल-गान गा रही हैं। बच्चे उछल रहे हैं। सैनिक पंक्तिबद्ध खड़े हैं। नाना साहब थोड़ी देर तक गीत सुनते रहे। सोचते रहे—झाँसी में क्रांति की बेल तोरई की तरह फैल गयी है। मेरठ में रक्तिम गुलाब

फूल उठा है। दिल्ली में वृद्ध बहादुरशाह सफेद केवड़े की तरह अपना सौरभ लुटा रहा है। चारों ओर से आवाज आ रही हैं--फिरंगियों को मारो ! मारो !! कितना सुन्दर लोकगीत है।

"श्रीमंत नाना साहब की जय हो !" क्रांतिकारियों की टोली ने गीत समाप्त किया। नाना साहब का शीश ऊपर उठा। तोप का एक धड़ाका हुआ। चारों ओर सन्नाटा छा गया। नाना साहब उपस्थित सभासदों एवं जनसमूह को संबोधित करते हुए बोले, "आज युगों के बाद हमारी मनोकामनाएँ पूरी हुई हैं। यह सिंहासन इस योग्य हुआ है कि इस पर इसका पेशवा विराजमान हो सके। आप सब लोग जानते हैं कि सं० १९०८ में, अर्थात् अब से ६ वर्ष पूर्व जब पेशवा की मृत्यु हुई थी, मैं केवल २६ वर्ष का था। इस अल्पायु में कम्पनी के शासकों ने मुझ पर आग बरसायी। मुझे राज्य का नहीं, केवल धन-संपत्ति का ही उत्तराधिकारी समझा। पेशवा की उपाधि से मैं वंचित रहा। राजनैतिक अधिकार भी मुझे नहीं मिल पाये। मेरी ही नहीं, यही दशा, झाँसी, सतारा, तंजौर आदि की तथा अवध के अनेकों राजघरानों की हुई। कम्पनी के शासकों की कुटिल नीति फैलने लगी। वे देश पर हावी होने लगे। उनकी संधियाँ, उनके घोषणा-पत्र हमारे देश के लिए अपमानजनक एवं घातक सिद्ध हुए। अपनी भारतमाता पददलित हुई। देश के कोने-कोने से प्रतिशोध की लपटें उठीं। उसका परिणाम जो कुछ भी हुआ, वह सब आपके सामने है। आज मैं पेशवा हो गया हूँ। मेरा राजतिलक भी हो चुका है। किन्तु, यह काँटों का ताज है। इसकी रक्षा आप सब के सहयोग से ही संभव है। मैं अपने साथियों का आभार प्रदर्शन करके उनका मूल्य घटाना नहीं चाहता। उन्होंने मातृभूमि के लिए जो कुछ किया है, इतिहास उस पर गर्व करेगा। फिर भी, मैं आप सबको सतर्क कर देना चाहता हूँ। कम्पनी के शासक अब भी सक्रिय हैं। किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। अतः इस समारोह में हमें आनेवाले झंझावात को नहीं भूल जाना चाहिए। हमें दूने उत्साह के साथ तूफानों

का सामना करना है। हमारा साहस ही देश की मर्यादा बढ़ावेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतमाता का एक-एक बच्चा योगदान करेगा, उत्सर्ग करेगा और अपने दुधमुँहे मुख से—'फिरंगी मारौ बीच मैदान' का उद्घोष करेगा। बस, मैं एक बार पुनः आपको अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए, सचेष्ट रहने की चेतावनी देता हूँ....।"

श्रीमंत नाना साहब की जय हो!

पेशवा की—जय हो!

जयनादों से ब्रह्मावर्त का कण-कण गूँज उठा।

नाना साहब शीश झुकाकर बैठ गये। उनके हृदय के स्पंदन की गति कुछ तेज हो गयी थी। भावावेग से धमनियों का रक्त-प्रवाह बढ़ गया था। मुख-मण्डल पर चमक आ गयी थी। ललाट पर उभरी चिन्ता की रेखाएँ मिट चुकी थीं। दरबार में पूर्ण सन्नाटा था। बाहर जय-जय-कार हो रही थी। इस शुभ समाचार की सूचना दिल्ली सम्राट् के पास भेज दी गयी।

तिलकोत्सव समाप्त हुआ। नाना साहब ने अपने सेनानियों के नाम संदेश भेजना प्रारंभ किया। प्रथम आज्ञा-पत्र उन्होंने कोतवाल हुलास सिंह को भेजते हुए लिखा—"....दिल्ली सम्राट् के सौभाग्य एवं ईश्वर की अनुकम्पा से पूना और सतारा के संपूर्ण अंग्रेजों की बलि हो गयी। वे इस समय यमराज के अतिथि हैं। दिल्ली में भी सम्राट् की सेनाओं ने सहस्रों अंग्रेजों को नरक-कुण्ड में धकेल दिया है। चारों ओर विजय-ध्वज फहरा रहा है। आपको इस आदेश-पत्र के साथ आज्ञा दी जाती है कि इस समाचार को ग्राम-ग्राम में डुग्गी पिटवाकर प्रख्यापित कर दें, जिससे सभी ग्राम्यवासी आमोद-प्रमोद मनायें। उनके रास्ते के कांटे टूट गये हैं....।"

कोतवाल हुलास सिंह ने वैसा ही किया। ग्राम-ग्राम में डुग्गी पीटी गयी। घर-घर संदेश सुनाया गया। जन-समूह प्रसन्नता से पुलक उठा।

नाच-गाने होने लगे । उत्सव मनाया जाने लगा । ग्रामवासियों के झुण्ड-के-झुण्ड ढोलक की थाप पर गाने लगे—

"फूली तोरइया रे झांसी माँ.......।"

नाना साहब कई दिनों तक बिठूर में ही रहकर अपने सेनानियों को आज्ञापत्र भेजते रहे। अंत में छह जुलाई को उन्होंने सैनिकों के नाम अपना महत्त्वपूर्ण घोषणा-पत्र भेजा। उससे सैनिकों में एक नया उत्साह आ गया। उनमें देश की आन पर मर मिटने की भावना जगी। वे देश-प्रेम की बलिवेदी पर प्राणों का उत्सर्ग करने को तैयार हो गये। नाना साहब गंभीरतापूर्वक उनकी गतिविधियों का निरीक्षण करते रहे। गुप्तचर उन्हें क्षण-क्षण सूचना देते रहे। इधर कुछ सूचनाएँ ऐसी प्राप्त हुई कि नाना साहब पुनः आशंकित हो उठे।

अर्धरात्रि का समय था। नीरव निशा साँय-साँय कर रही थी। बिठूर के दुर्ग को स्पर्श करता हुआ गंगा का मंद प्रवाह अपनी गति से गतिमान था। संपूर्ण नगरनिवासी अपनी पलकों में स्वप्न छिपाये सुख की नींद सो रहे थे। भीषण सन्नाटे में नाना साहब एवं अजीमुल्ला खाँ बारादरी में बैठे थे। दोनों की गुप्त वार्ता हो रही थी। गुप्तचरों द्वारा सूचना मिली थी कि फतेहपुर की क्रांतिकारी सेना डगमगा रही है। हैवलॉक तेजी से इधर बढ़ रहा है। नाना साहब हैवलॉक की गतिविधि से पहले से परि-चित थे। वे यह भी जानते थे कि 'पाँडु नदी' पर क्रांतिकारी सेना उसका सामना करेगी। हैवलॉक भी कम भयभीत नहीं था। उसने नील को सहायता के लिए लिखा था। आज यही सूचना नाना साहब को प्राप्त हुई थी। वे अजीमुल्ला के साथ विचार-मग्न बैठे थे। कोई युक्ति समझ में नहीं आ रही थी। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा, "आपत्ति सिर पर आ गयी है। हैवलॉक को रास्ते में ही रोक देना अच्छा है।"

"हाँ" मंत्री अजीमुल्ला ने उत्तर दिया—"श्रीमंत का विचार ठीक है। फतेहपुर के क्रांतिकारियों की सहायता आवश्यक है। ऐसा न करने पर वह तीर की तरह कानपुर तक आ जाएगा!"

"फिर ?" नाना साहब ने प्रश्न किया—"बालासाहब को भेज दूँ ?"

"यही मुनासिब है।" अजीमुल्ला खाँ ने संतोष की साँस ली—"मगर जल्दी कीजिए।"

वार्ता समाप्त हुई। नाना साहब उठकर अपने शयन-कक्ष में चले गए। अजीमुल्ला खाँ बाहर निकल आए। उन्होंने शमशुद्दीन खाँ को बुलाकर नाना साहब का आदेश सुनाया। शमशुद्दीन ने बाला साहब को सूचना दी। प्रातः काल बालासाहब, शमशुद्दीन के साथ एक विशाल सेना लेकर चल पड़े।

पाँडुनदी के तट पर दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई। बाला साहब के आ जाने से फतेहपुर के क्रांतिकारियों को बल मिला। उनका उत्साह बढ़ गया। दोनों सेनाओं में भीषण संग्राम हुआ। पाँडुनदी का पानी लाल पड़ गया। हैवलॉक के पास नील की सहायता आ गई थी। वह दुगुने उत्साह से लड़ रहा था। दोनों सेनाओं की जबरदस्त टक्कर हुई। किन्तु, न किसी को विजय मिली, न पराजय। हाँ, शमशुद्दीन इस युद्ध में काम आ गया। क्रांतिकारी सेना पीछे हटी और हैवलॉक फतेहपुर की ओर बढ़ा।

इस घटना का समाचार जब नाना साहब को मिला, तब वे हतप्रभ हो गए। हृदय को एक जबरदस्त धक्का लगा। उन्होंने चारों ओर क्रांतिकारियों को संदेश भेज-भेज कर सतर्क किया। विपत्ति दस्तक दे रही थी। कानपुर की रक्षा के लिए नाना साहब स्वयं उद्यत हुए। लखनऊ के सेनानियों के नाम पत्र भेजा, जिसकी ओजपूर्ण भाषा में लिखा था—

"वीर साथियो !

तुम्हें शत-शत मंगल कामनाएँ !

प्रयाग से हैवलॉक इधर बढ़ रहा है। उसके साथ एक विशाल सेना है। गोला-बारूद तथा अस्त्र-शस्त्र भी पर्याप्त हैं। तोपखाना भी है। वह वहाँ से चल पड़ा है। फतेहपुर के क्रांतिकारियों ने उसे यमलोक में भेजने के लिए उसका मार्ग अवरुद्ध किया था। दोनों ओर के सहस्रों सैनिक हताहत

हुए। बराबरी का सामना रहा। क्रांतिकारी वहाँ से हट गए हैं। मुझे पता लगा है कि अंग्रेजी सेना जलमार्ग से अग्नि बोटों द्वारा आ रही है। यह भी सूचना मिली है कि वे कानपुर से केवल सात कोस की दूरी पर हैं। मैं सेना समेत उन्हें रोकने के लिए तत्पर हूँ। हो सकता है, वे नदी पार करके 'बैसवारा' की ओर मुड़ जाएँ। वहाँ से कानपुर या दिल्ली की ओर प्रस्थान करें। अतः आप लोग उन्हें बैसवारे में रोक लें। इधर से हमारी सेनाएँ उन्हें दबाएँगी। वे बीच में पिस कर रह जाएँगे। यदि ऐसा नहीं किया जाता, तो दिल्ली तक उन्हें कोई रोक नहीं सकता। आप लोग इन्हें शिवराजपुर घाट में रोकने का प्रयत्न करें। ऐसा करने से वे गंगा पार न कर पावेंगे।"

नाना साहब के इस पत्र ने लखनऊ तथा बैसवारे के क्रांतिकारियों पर जादू का सा प्रभाव डाला। संपूर्ण बैसवारा एक साथ अँगड़ाई लेकर उठ बैठा। राना बेनीमाधव, राव रामबरण सिंह, दरियावसिंह, नरपत सिंह आदि सेनानी बैसवारे के पश्चिमी छोर पर आ डटे। किन्तु, अवसर हाथ से निकल चुका था। अंग्रेजी सेनाएँ कानपुर के निकट पहुँच चुकी थीं।

नाना साहब बिठूर से कानपुर आ धमके। उन्होंने नगर की सुरक्षा का प्रबंध किया। अंग्रेजों से लड़ने के लिए सेना तैयार की। उनके आते ही कानपुर में एक बार फिर हलचल मच गई। सहस्रों वीर गंगा के पवित्र जल को खून से लाल करने के लिए अपनी तलवारों की धार तेज करने लगे।

कानपुर पुनः क्रांतिकारियों का अड्डा बन गया।

गुप्त मंत्रणाएँ होने लगीं। योजनाएँ बनने लगीं। ह्वीलर की शक्ति कानपुर देख चुका था। अब हैवलॉक की बारी थी।

● ● ●

८

आवश्यकता से अधिक स्वतन्त्रता या अपेक्षातीत पद मिल जाने पर व्यक्ति उच्छृङ्खल हो जाता है। ठीक यही दशा बन्धन की है। आवश्यकता से अधिक बन्धन मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना देता है। जहाँ बन्धन और स्वतन्त्रता दोनों आवश्यकतानुरूप होते हैं, वहाँ मनुष्य मानवीय मर्यादा की सीमा में मर्यादित रहता है। इसीलिए कहा गया है—'अति सर्वत्र वर्जयेत !' अति सर्वत्र वर्जित है। चाहे वह व्यक्तिगत क्षेत्र हो, अथवा सामाजिक ! राजनैतिक हो या ऐतिहासिक ! अति का निषेध आवश्यक है।

मैना के सरल, निष्कपट एवं पवित्र व्यक्तित्व ने बन्दी अंग्रेज महिलाओं को स्वतन्त्रता दी। वही स्वतन्त्रता अब घातक हो चली थी। उन्होंने खाने, पीने, टहलने की सुविधाओं का दुरुपयोग करना प्रारम्भ कर दिया था। वे कुछ नये काण्ड भी रचने लगी थीं। इन काण्डों की नायिका थी—मिस रोजी !

रोजी ऊपर से देखने में अत्यधिक सरल और बहुत ही भोली भी प्रतीत होती थी। उसका स्वभाव इतना मधुर था कि अपनी मीठी-मीठी बातों से सबको वशीभूत कर लेती थी। उसके मनोहारी व्यक्तित्व में मोहिनी-शक्ति थी और अपने इस सम्मोहन का वह खुलकर प्रयोग करती थी। सबकी विश्वासपात्री बन जाती थी। सरलता, भोलापन, मिठास एवं आकर्षण के अतिरिक्त उसमें एक तत्त्व और था। वह था—हृदय की अपवित्रता ! इन्हीं पाँच तत्त्वों से बने उस नारी शरीर का नाम था—'मिस रोजी !'

सर्वप्रथम उसके व्यक्तित्व का प्रभाव नाना साहब पर पड़ा। जिस समय उसने—"नाना साहब लांग लिव" का नारा लगाया था। दुबारा उसके व्यक्तित्व के जादू ने मैना को वशीभूत किया। मैना उसे कछार में घुमाने क्या ले गयी, उसी की बनकर रह गयी। तीसरी बार उसकी

मोहिनी दृष्टि माधव सिंह पर पड़ी। वह क्षणभर के लिए माधव की कोठरी में क्या चली गयी, माधव सिंह उसे अपनी घरैतिन समझने लगा। इन सबसे अलग, किले में एक ऐसा व्यक्तित्व भी था, जिस पर रोजी का जादू कामयाब नहीं हुआ। वह थी-बेगम ! वह एक असाधारण महिला थी। उसमें मुखाकृति देखकर ही किसी के व्यक्तित्व को पहचानने की अद्भुत क्षमता थी। यही कारण है कि इतना घुल-मिल जाने के बावजूद रोजी की बीन उस 'नाग-कन्या' को नचा नहीं सकी। उस पर कोई रङ्ग चढ़ नहीं सका। वह ज्यों-की-त्यों बनी रही।

रोजी सचमुच एक अद्भुत लड़की थी। वह सबका विश्वासपात्री बनकर किले में विस्फोट करना चाहती थी। खेल-खेल में 'डूलन' बनने के लिए राजी हो जाना, लहँगा पहनना, ओढ़नी ओढ़ना, घूँघट निकालना, गहनों से अपने को सजाना—रोजी का मनोरञ्जन नहीं, एक चाल मात्र थी। वह हिन्दी भली-भाँति समझ लेती थी। लहँगा-ओढ़नी तथा गहनों का महत्त्व भी जानती थी। 'दुलहिन' शब्द से भी वह अपरिचित नहीं थी। फिर भी वह ऐसी भोली बन जाती, जैसे कुछ जानती ही न हो। उसके इन कार्यों के पीछे रहस्य था।

वह बंदिनी थी। अपनी जाति के प्रति वह उतनी ही वफादार थी, जितनी बेगम भारतीयता के प्रति पूर्वाग्रहित थी। रोजी जब किले में आयी थी, तब से इस प्रयत्न में रही कि यहाँ के समाचार वह नील अथवा हैवलॉक के पास कैसे भेजे। वह गुप्तचरी करना चाहती थी। उसने अनेकों बार मैना से किले के भीतर जाने की इच्छा प्रकट की थी। बेगम से उसका कक्ष देखने के लिए निवेदन किया था। मैना राजी भी हो गयी थी। बेगम को दाल में कुछ काला दिखायी पड़ा। वह टाल-मटोल कर गयी। संदेह था ही। वह रोजी की गतिविधि का अध्ययन करने लगी। मैना अब भी रोजी को नहीं समझ पायी थी। उसकी इस अबोधता पर बेगम ने उसे अलग ले जाकर कहा,—"मैना रानी ! तुम अभी नादान हो। तुम्हें अपने-पराये की वाकफियत नहीं ! तुम इसकी लच्छेदार बातों में

फँस गयी हो। तुम यह क्यों भूल जाती हो कि ये तुम्हारे दुश्मनों की औरतें हैं। इनमें से किसी का भाई मारा गया है, तो किसी का बाप, किसी का शौहर तलवार के घाट उतारा गया है, तो किसी का लड़का ! ऐसी हालत में इनके दिल में क्या है, तुम अच्छी तरह समझती हो। इनके दिल में बदला लेने की आग धधक रही है। इस समय ये मजबूर हैं। उसी मजबूरी से यह रोजी भी दीनता दिखा रही है ! वर्ना पता है ?" बेगम ने प्रश्नसूचक दृष्टि मैना के मुख पर डालते हुए कहा,—"ये हरामजादियाँ किले में आग लगाकर चली जातीं। इन्हें मुँह लगाना ठीक नहीं।"

बेगम ने पुनः मैना की ओर निहारा। वह चुपचाप शान्त भाव से सुन रही थी। पैर के अंगूठे धरती कुरेद रहे थे। बेगम ने व्यंग्य किया, —"मैना रानी ! यदि मुँह लगाना ही है, तो किसी ऐसे वीरबाँकुरे को लगाओ जो दरवाजे पर शहनाई बजवा दे ! हमें भी इनाम मिले और हमारा ओहदा बढ़े····।"

बेगम के इतना कहते ही मैना का सिर ऊपर उठा। गंभीर मुखमंडल पर हल्की-सी लाज की लालिमा छा गयी। अँगूठों ने धरती कुरेदना बंद कर दिया। उसने धीरे से कहा—"धत् !"

"धत् क्या ?" बेगम ने मस्ती से कहा—"मैं कोई झूठ बोल रही हूँ ? अपनी ओर देखो ! ये हसरतें कब तक सीने में दबाये रहोगी ? शहनाई की आवाज की हर खुशबू उम्मीदों के चमन में फूल खिला देती है। गुलशन में बहार आ जाती है····।"

मैना चुप रही। उसकी मौनता ने बेगम के प्रवाह को शिला की तरह मोड़ दिया। वह बात बदलती हुई बोली,—"तुम्हें क्या पता कि मेरे दिल में इन मेमों के लिए कितनी आग भरी है। ये बच्चे ?" बेगम ने एक ठण्ढी सांस ली,—"मैं समझती हूँ कि यह सब सांप के बच्चे हैं। फिर भी मैं कलेजा थामकर इन सब को दूध पिला आती हूँ। मैं जानती हूँ कि यह सब कुचली हुई, जहरीली नागिनें हैं। फिर भी, मैं इन्हें थपथपा

आती हूँ। कुछ तुम्हारी मुहब्बत का लिहाज, कुछ श्रीमंत साहब का हुक्म वर्ना....।"

"बेगम !" मैना ने गंभीरता से बात काटते हुए कहा,—"कुछ भी हो, पिताजी के आदेश का पालन तो करना ही है। तुमने अच्छा किया, जो मुझे सतर्क कर दिया, अन्यथा धोखा खा जाती !"

"मैना रानी !" बेगम ने उसी लहजे में कहा,—"चुपचाप सब कुछ देखती रहो। परेशान होने की जरूरत नहीं ! जब थोड़ा-सा भी खतरा देखूँगी, तो कैदखाने में आग लगा दूंगी ! जल मरेंगी सब उसी में !"

बेगम के इस वाक्य पर मैना को रोमांच हो उठा। बोली,—"बेगम। तुम किले में—नाना साहब का आदेश चलाओगी या अपना ?"

मैना के इस प्रश्न पर बेगम सिटपिटा गयी। उसका सिर अपने आप झुक गया। वह धीरे से बोली, "मैना रानी ! मेरे भी रहम में दया है। यकीन करो, ऐसा नहीं करूँगी। मैंने नाना साहब का नमक खाया है। नमकहरामी नहीं कर सकती। फिरंगियों ने जो बर्ताव हमारे मुल्क की औरतों के साथ किया है, उसे सुनकर कलेजा काँप उठता है। हमने तो अभी तक कुछ किया नहीं। अगर हम भी वैसा ही करें तब ?" कहती-कहती बेगम उबल पड़ी—"क्या कदम-कदम पर श्रीमंत साहब का हुक्म लेना पड़ेगा ?"

मैना मुस्कुरा उठी। नम्रता से बोली, "नहीं बेगम ! तुम वैसा न करना। वे सब इस समय राक्षस हो गये हैं। हम वैसे नहीं बन सकते। हम उनकी तरह भोले-भाले मासूम बच्चों के खून से अपने हाथ कैसे लाल करेंगे ? निर्दोष महिलाओं को आग में भूनेंगे ! छिः ! छि !! मैना ने घृणा से कहा, "सुना है फिरंगी बड़े निर्दयी हैं। उन्होंने हिन्दुस्तानी बच्चों की टाँगें पकड़-पकड़कर चीर डाला है। औरतों को बाँधकर पेड़ों में लटकाया है। नील ने तो हद कर दी है। पेट के बच्चों तक को बाहर खिचवा लिया है। नाखूनों में बाँस के फर्चे गड़वाये हैं। स्तन कटवाये हैं। और पता नहीं क्या-क्या किया है।" मैना की आँखें भर आयीं। हृदय में

करुणा का सिन्धु हिलोरें लेने लगा। उसने आँचल के छोर से आँसू पोंछते हुए बेगम का हाथ पकड़कर कहा, "बेगम! मुझे क्षमा करना! तुम्हें मेरी शपथ है। तुम इन बच्चों को, इन औरतों को, कष्ट न देना!"

"नहीं मैना!" बेगम ने गंभीरता से कहा, "मैं हैवान थोड़े हूँ। मेरे भी सीने में तुम्हारे जैसा दिल है। मैं भी औरत हूँ। कसम खाकर कहती हूँ; कुछ न करूँगी!"

"हाँ बेगम!" मैना ने दुःखी होते हुए कहा—"एक नारी होने के नाते मुझे इन नारियों से पूर्ण सहानुभूति है।"

"अच्छा!" बेगम ने कहा—"मैना रानी! तुम जाकर आराम करो। मैं उन्हें दूध दे आऊँ!"

मैगा बोझिल हृदय से अपने कक्ष की ओर चल पड़ी।

मैना की भावुकता पर बेगम थोड़ी देर तक खड़ी विसूरती रही। सोचती-विचारती रही। उसे रह-रहकर पता नहीं कैसा लग रहा था। कसम तो उसने अवश्य खा ली थी, किन्तु उसे अपने पर ही विश्वास नहीं हो रहा था। सोचती-सोचती वह काला रेशमी बुर्का छोड़कर बंदी-गृह की ओर चल पड़ी। आज कुछ देर हो गयी थी। उसने जल्दी-जल्दी बच्चों को दूध वितरित किया। औरतों को गोश्त-चपाती दी। भोजन एवं दूध बाँटते समय वह बीच-बीच में हँसी-मजाक भी करती जाती थी। बच्चों के गाल थपथपाकर उन्हें उठा लेती थी। कभी किसी बच्चे को दोनों हाथों से उछालकर पुनः थाम लेती। कभी किसी को इतना गुदगुदाती कि वह हँसते-हँसते लोट-पोट जाता। अंग्रेज महिलाएँ उसके इस व्यवहार पर मुस्कुरा उठतीं। जब वह किसी बच्चे के पेट में उँगली कोंच कर धार से "भेड़ी" कहती, तो सभी खिलखिलाकर हँस पड़तीं! बेगम की उन्मुक्त हँसी उनकी खिलखिलाहट में समा जाती। सबको रोटियाँ वितरित करने के बाद उसने पूछा, "अब कोई बाकी तो नहीं रही?" और ध्यान से महिलाओं के मुख की ओर देखने लगी। उसे कुछ-कुछ सूनापन महसूस हो रहा था। अकस्मात् उसे रोजी का ध्यान आया।

वह वहाँ नहीं थी। वह गोश्त-चपाती भी लेने नहीं आयी। वेगम ने जोर से पुकारा--"रोजी !"

कोई उत्तर नही मिला। वेगम ने विनोदपूर्ण मुद्रा में कहा, "अरी दुल्हन ! आज खाजा-वाना नहीं खाओगी क्या ? देखो तो, पानी वरसने-वाला है।"

"उसकी टवियट खराव है।" एक अंग्रेज महिला नें कहा, "वह कोठरी में परा है !"

"पड़ी रहने दो !" वेगम ने लापरवाही से कहा, "कोठरी में उसका तवियट ठीक हो जाएगी। माधव को अभी भेजे देती हूँ। वह दवा दे देगा।" और रोजी की कोठरी की ओर निहारा। वह वंद थी। वेगम को कुछ संदेह हो गया। फिर भी वह कुछ वोली नहीं। केवल मज़ाक में कहने लगी, "मैं माधव को भेज रही हूँ। रोगी अच्छा हो जायगा।"

वेगम के इतना कहते ही अंग्रेज महिलाएँ विस्मय से एक-दूसरी का मुख देखने लगीं। वेगम वाहर निकल आयी। माधव की कोठरी तक गयी। कोठरी वंद थी। वह तत्काल ही लौट पड़ी। आगे वढ़ने का साहस न कर सकी। सामने ही वताशा वुआ की कोठरी थी। वताशा वुआ गजाधर ड्योढ़ीदार की वूढ़ी पत्नी थी। वेगम लौट पड़ी।

आकाश पर काली घटा छायी थी। पुरवाई के मादक झोंके रह-रह-कर आ रहे थे। ऊमस भी कम न थी। शरीर के जिस भाग में हवा लगती, वह तो सूखा रहता, शेष भाग पसीने से तर ! लगता था पूरा नगर पानी और पसीनें में डूव जाएगा। वेगम ने नकाव उलट दिया। विस्फारित नेत्रों से नील गगन की ओर देखा। वादल घुड़दौड़ मचाये थे। वेगम को लगा, जैसे वे पेड़ों-फुनगी पर फिसल रहे हों। वादल खूव नजदीक आ गये थे। उसने दोनों हाथ उठाकर कहा—"हे इन्दर मह-राज ! वरसो ! खूव वरसो !! सड़कों गलियों, मकानों का खून धुल जाए। कानपुर पाक हो जाए। कितनी गंदगी फैली है चारों तरफ !.... वरसो ! खूव वरसो !! सरावोर कर दो धरती को ! हे इन्दर महराज....।"

इसके वाद ही, वेगम ने ज्योंही नीचे की ओर सिर झुकाया—देखा, किले की पृष्ठ भागवाली खिड़की के निकट एक व्यक्ति खड़ा है। वेगम चौंक पड़ी। वह व्यक्ति पीछे की ओर खिसका।

"कोई भेदिया है!" वेगम ने अपने आप प्रश्न किया—"मगर यह तो फिरंगी-सा नहीं लगता। हिन्दुस्तानी है, हिन्दुस्तानी! बिल्कुल काला आदमी!" वेगम ने पुनः उसकी ओर निहारा—यह तो अपने देश का नहीं है। लम्बी चुन्नटदार धोती पहने है। ऊपर सफेद ढीला-ढाला कुर्ता! रंग साँवला है। पर, अच्छा लगता है। चेहरा गोल, मगर खोपड़ी का पिछला हिस्सा चिपटा है। यह किस मुल्क का आदमी है?—बंगाली है, बंगाली!! वेगम ने स्वगत कहा—इस तरह के बहुत से आदमियों को मैंने यहाँ देखा है। यह जरूर बंगाली है। पर, यह बंगाली यहाँ क्यों आया?

वह थोड़ा और आगे बढ़ी। उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे इस आदमी को उसने कहीं देखा है। एकदम पहचानी शक्ल-ओ-सूरत! वेगम सोचने लगी। तभी उसे याद आया—जब नाना साहब की सवारी बिठूर जा रही थी, उसने इसे देखा था। यह भीड़ से थोड़ा हटकर खड़ा था। उसे वहीं संदेह हो गया था। आज वही व्यक्ति किले के पीछे की ओर सरपत-पुंजों से मिला खड़ा है।

यह चाहता क्या है? वेगम का संदेह बढ़ गया। किराये का टट्टू तो नहीं है। इससे पूँछू या किले में जाकर खबर कर दूँ!

वेगम कुछ निर्णय न कर सकी। उसने साहस से काम लिया। आगे वढ़कर दृढ़ता से पूछा—"आप यहाँ किसे ढूंढ़ रहे हैं?"

"हम ढूंढ़ता किसी को नहीं!" उसने सिटपिटाते हुए उत्तर दिया—मिलना चाहटा है!"

"किससे?" वेगम ने प्रश्न किया—"श्रीमंत नाना साहब से!"

वह आदमी चुप रहा।

"बोलता क्यों नहीं ! बेगम ने डपटकर पूछा—"किससे मिलना चाहता है ?"

"नाम नहीं जानता !" उसने हाथ जोड़कर कहा—"उसका फादर हमारे साथ कलकटा की कंपनी में काम करता है। उसकी लड़की को हम जानता है। मिलने आया हैं। इतना कहकर वह पीछे की ओर भागा।

"ओह !" बेगम ने कहा, बातें बनाता है। चोट्टा कहीं का ! भेदिया है भेदिया !! बेगम चिल्लायी—"पकड़ो इसे !"

बेगम के चिल्लाते ही वह खंदक में कूद पड़ा और ऊँचे-नीचे कगारों में समा गया।

बेगम हाथ मलती, खड़ी रह गयी। वह सोचती रही—अगर यह भेदिया है, तो मैंने इसे नाहक छोड़ दिया। लड़ मरती इसी के साथ। निकल गया। किस्मत का अच्छा था। श्रीमंत साहब सुनेंगे, तो मुझे फाँसी पर लटका देंगे। लेकिन, करती क्या ? इतना समय तो था नहीं कि किले में खबर करती। खुद पकड़ती, तो वह हमला कर देता। मारकर यहीं फेंक देता। अकेली मैं उसका कर ही क्या सकती थी ! अब तो मौका हाथ से निकल गया। इसी तरह वह देर तक सोचती, विसूरती और पश्चात्ताप करती रही।

घटाएँ बरसने को आतुर हो रही थीं। उन्हीं घटाओं की तरह बेगम का हृदय भी भर आया था। उसे लग रहा था, जैसे उसने जीवन में आज प्रथम बार नाना साहब के साथ विश्वासघात किया है। वह मन ही-मन पछता रही थी। वह बार-बार उस खंदक की ओर देख रही थी, जिसमें वह कूदा था। पर अब वह कहाँ ? वह तो कब का अदृश्य हो चुका था। बेगम ने देखा, आस-पास पैरों के ताजे निशान बने थे। वह घूम-घूमकर देखने लगी। कई स्थानों पर वैसे ही निशान मिले। एक स्थान पर तो ऐसा लगा, जैसे कोई रात-भर बैठा रहा हो। लेटने और बैठने के साफ चिह्न थे। अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि यह गुप्तचर ही है और धोखा देकर निकल गया है।

वेगम खड़ी सोच ही रही थी कि उसी समय मिट्टी के ढेले मे लिपटा हुआ एक कागज खंदक में आ गिरा। वह चौंक पड़ी। कागज दुर्ग के भीतर से आया था। महिला वंदीगृह से इस प्रकार कागज का आना आश्चर्य की वात थी। वेगम माथापच्ची करने लगी। कुछ समझ में नहीं आया। कुछ समय पूर्व, जव वह खाना खिलाने गयी थी, तव रोजी नहीं मिली। वह अपनी कोठरी में थी। कोठरी के द्वार बंद थे। तभी वेगम को संदेह हो गया था। इस समय उस संदेह की पुष्टि हो रही थी। उसने झाँककर देखा, कागज का वह गोला गहरे खंदक में लुढ़क गया था। वेगम से न रहा गया। उसने अपनी जूतियाँ उतारीं, बुर्का अलग रख दिया और सरपत एवं कुश के पुंजें पकड़-पकड़कर वह धीरे-धीरे खंदक में उतरी। कागज का गोला उसने हाथ में उठाया। वहाँ भी उसे कुछ पग-चिह्न दिखायी पड़े। वह कागज का गोला लेकर गिरती-पड़ती, उठती सँभलती किसी प्रकार वाहर निकली। वाहर आकर उसने उसे खोला। टेड़े-मेढ़े अक्षरों में कुछ लिखा था। लिपि न हिन्दीं थी, न उर्दू न अरवी न फारसी! वेगम समझ गयी, यह अग्रेजी है। वह गुप्तचर इसी पत्र को लेने आया था। मगर देर हो गयी। पता नहीं, कव से यहाँ बैठा रहा होगा। वंदीगृह में भी ये लोग किस प्रकार इतना बड़ा जाल फैला लेती हैं वेगम हैरत में पड़ गयी। खड़ी-खड़ी सोचने लगी। उसके समक्ष कभी रोजी क़ा चेहरा आ जाता, कभी उस गुप्तचर का। वह काँप उठी।

पुरवाई का एक तेज झोंका आया। झोंके के साथ-साथ बूंदें टपटपा उठीं। काली घटाएँ चारों ओर घिरने लगीं। दूसरे झोंके के साथ-साथ वर्षा और तेज हो गयी। वेगम ने जल्दी से जूतियाँ पहनी। बुर्का ओढ़ा और कागज का टुकड़ा मुट्ठी में दवाकर झपटती हुई दुर्ग के भीतर चली गयी।

● ● ●

९

"एक बंगाली भेदिया पकड़ा गया है !"

संपूर्ण दुर्ग में यह समाचार विद्युत्-वेग से फैल गया । कोई कहता, "वह कलकत्ते से यहाँ खबर लेने आया था ।" कोई इसका खंडन करते हुए कहता, "अरे नहीं, यह तो कानपुर का ही है । सैकड़ों बार छावनी में देखा गया है ।" नगर में इस समाचार से सनसनी फैल गयी । भाँति-भाँति की अटलकबाजियाँ चलने लगीं ।

नाना साहब विठूर से लौट आये थे । इस अप्रत्याशित समाचार से उन्हें धक्का लगा । उन्होंने अपने सेनापति को तत्काल ही आदेश दिया, "रहस्यमय भेदियों को कड़े-से-कड़ा दंड दिया जाय ।"

आदेश-पत्र प्रसारित हुआ । किले-भर में तहलका मच गया । बीबी-घर पर चौकसी बढ़ा दी गयी । इलाहाबाद की छठीं रेजीमेंट के सैनिक पहरे पर लगा दिये गये । पुराने पहरेदार हट गये । महिला बंदीगृह चारों ओर से घिर गया । अकस्मात् ही इस परिवर्तन से बेगम सकपका गयी । उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या हो गया है । अंग्रेज मेमों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं । रोजी का चेहरा पीला पड़ गया । आशंका से उसका हृदय भर-भर आता था । साँस फूल उठती थी । अपने ही हाथों उसने अपने सर्वनाश का द्वार खोल दिया था । उसकी दशा उस चोर की-सी थी, जो चोरी के पश्चात् अपने को निर्दोष सिद्ध करने का अभिनय करे । अन्य अंग्रेज महिलाएँ भी मातम-सा मना रही थीं । उनकी यह दशा देख, बच्चे बिलखने लगे । सब को सांत्वना देनेवाली बेगम स्वयं घबड़ायी हुई नजर आ रही थी । साँझ का भोजन एवं दूध वितरित करके वह शीघ्र ही अंतःपुर में लौट आयी । वह मैना से मिलने को आतुर हो रही थी ।

वर्षा से भींगा हुआ दुर्ग स्फटिक मणि-सा स्वच्छ हो गया था। पानी बरसकर निकल गया था। पुरवाई के शीतल झोंके रह-रहकर आ रहे थे। फानूसों के मन्द प्रकाश में दुर्ग जगमगा रहा था। मैना आँगन में लगे तुलसी के बिरवे में दीपक जला रही थी। वायु के झोंके दीपक जलने ही न देते थे। किसी प्रकार वह जल पाया। मैना ने दोनों हाथ जोड़कर तुलसीमाता को शीश झुकाया। दीपाशिखा सिहर उठी। उसने आंचल की ओट कर दी। वायु के झोंके चले गये। मैना उठी। उसे बेगम आती हुई दिखायी पड़ी। वह रुक गयी। बेगम को संबोधित करके बोली, "बेगम ! आज तो गजब हो गया !"

"क्या हुआ ?" बेगम ने जिज्ञासा से पूछा, "मैनारानी, खैरियत तो है ?"

तुमने आज सबेरे मुझसे जो कुछ कहा था मैना बोली, "वह अक्षरशः सत्य था। सचमुच हमलोग साँपों को दूध पिला रहे हैं। गजब कर दिया इन मेमों ने। पहरे के भीतर रहने पर भी यह षड्यंत्र !"

"और पिलाओ दूध !" बेगम व्यंग्य से बोली, "खुली हवा में थोड़ा टहला लाया करो, तबियत बहल जायगी। मन प्रसन्न हो जाएगा। सेहत ठीक रहेगी। हैजे का असर नहीं होगा। मैं तो कब की चिल्ला रही थी कि हैजे से इन्हें मरने दो। जमीन का भार हल्का हो जायगा। फिर कुछ रुककर पूछा—"बात तो बताओ आखिर क्या हुआ ?"

"यें बन्दीगृह से बाहर चिट्ठियाँ भेजती रही हैं।" मैना ने उदासी से कहा, "अभी तक पता नहीं लग सका कि चिट्ठी भेजनेवाली कौन हैं ? किन्तु यह निश्चित है कि यहाँ से पत्र बाहर गये हैं। इलाहाबाद, लखनऊ, कलकत्ता........।"

"आँय!" बेगम ने आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबायी, "क्या कहा ? इलाहाबाद, लखनऊ, कलकत्ता....।"

×संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियाँ, पृष्ठ ३१।

"हाँ !" मैना बोली—"ठीक कह रही हूँ। तुझे कुछ पता है यह काम कौन कर रहा है ?

"न ?" बेगम ने सिर हिलाया।

"एक बंगाली भेदिया !" मैना ने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा।

"बंगाली भेदिया ?" बेगम ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"हाँ, हाँ !" मैना बोली, "बंगाली भेदिया ! कोई संदेह है ?"

"न !" बेगम ने कहा, "मुझे कोई संदेह नहीं।

"बेगम !" मैना गंभीरता से बोली, "मैं तो इस षड्यंत्र का समाचार सुनते ही काँप उठी। देह में आग लग गयी। मर्यादा का निर्वाह करना पड़ रहा है अन्यथा आज ही सबको तोपों से उड़वा देती। पता है, तुझे आज एक गुप्तचर पकड़ा गया है।"

बेगम को एक धक्का-सा लगा। जैसे, उस बंगाली युवक की मूर्ति सके सामने आ खड़ी हुई। साँवला रंग, लंबी चुन्नटदार धोती तथा ढीला-ढाला कुर्ता। बेगम ने अपने मनोभावों को दबाते हुए पूछा— "वह कहाँ है मैनारानी ! किसने पकड़ा ?"

"वन्दीगृह में है।" मैना बोली, "अभी विस्तृत विवरण मुझे ज्ञात नहीं हो पाया। केवल इतना पता लग सका है कि पानी बरसने के पहले कछार में एक रहस्यम बंगाली भेदिया पकड़ा गया है। वह दुर्ग की ओर से आ रहा था।" और चुप हो गयी।

बेगम के हृदय में जो आशंका उठी थी, उसकी पुष्टि हो गयी। उसने सोचा—हो-न हो यह वही व्यक्ति है। उसने अपने भावों को छिपाते हुए कहा, " मैनारानी, पता लगवाइये। मैं कपड़े बदलकर अभी आती हूँ। कुछ और बातें हैं। लौटकर बतलाऊँगी ! इज़ाजत दीजिये।

इतना कहकर बेगम अपने कक्ष की ओर चल पड़ी।

"बेगम !" मैना ने धीरे से कहा, "शीघ्र आना। मैं यहीं पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।"

"बहुत जल्दी !" बेगम बोली, "इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। मैं अभी आयी।" कहकर वह दबे पैरों से अपने कक्ष में चली गयी।

बेगम के जाने के पश्चात् मैना ने आकाश की ओर निहारा। घटाएँ घुमड़ रही थीं। सनसनाती हुई पुरवाई चल रही थी। मैना आँगन में टहलने लगी।

आकाश का कोना-कोना मेघाच्छन्न था। बादल घुड़दौड़ मचाये थे। बीच-बीच में रह-रहकर बिजली चमक उठती थी। बिजली की चमक के साथ-साथ जोर का गर्जन हो उठता था। बादलों के संघर्षण से शून्य क्षितिज में तेज प्रकाश-रेखा खिंच जाती थी। धरती काँप उठती थी। हवा के झोंके मैना के तन में सिहरन पैदा कर रहे थे। उसका आँचल रह-रहकर उड़ जाता था। बाल बिखर जाते थे। उसने आँचल का छोर कसकर कमर में खोंस लिया। उन्मुक्त अलकों को समेटकर बाँध लिया। भोली आँखों से उसने मेघाच्छादित आकाश की ओर निहारा। तारकगण छिप-से गये थे। घोर अन्धकार बढ़ता हुआ चला आ रहा था। मैना अधिक देर तक इस प्रलयंकर दृश्य को न देख सकी। उसने निगाह नीची कर ली। उसने तुलसी के बिरवे में जो दीपक जलाया था, उसकी लौ लगातार झिलमिलाने लगी थी। मैना को लगा—ये घुमड़ती घटाएँ विप्लव की आँधियाँ हैं। वायु के ये झोंके विपदाओं के सूचक हैं। यह नन्हीं-सी दीपिका भारतीयों की जीवन-ज्योति है, जिसे ये आँधियाँ, ये तूफान नष्ट कर देने पर तुले हैं। वह तड़प रही है, झिलमिला रही है, वायु के थपेड़ों में काँप रही है, सिहर रही है, फिर भी बुझने का नाम नहीं लेती। अबाध गति से जल रही है। अन्धकार की छाती में प्रकाश पैदा कर रही है। यह हमारी स्वतन्त्रता की दीपशिखा है। नाथ! इसे जलने देना। यह बुझने न पाये।" मैना ने दोनों हाथ जोड़कर आकाश की ओर निहारा।

बादल गरज उठे। बिजली की चमक से चकाचौंध हो गयी। वायु और तेज चलने लगी। मैना ने घूमकर निहारा—दीपक झिलमिला रहा

था। उसने दौड़कर उसे अपने आँचल में छिपा लिया। दीपक आँचल की छाया में सिहर उठा। वायु का झोंका धीमा पड़ गया। मैना ने दीपक रख दिया और मुस्कुरा उठी। स्नेह से बोली—"मेरी आशाओं की दीप-शिखा—जलो! जलो! जलो! तुम करोड़ों भारतीयों की स्वतन्त्रता की अमर ज्योति हो! इन तूफानों में बुझ न जाना। हजारों देशवाशी तुम्हारी ज्योति को अक्षुण्ण रखने के लिए जीवनदान देंगे। सहस्रों माताएँ तुझ पर अपने आँचल की छाया करेंगी। तुम बुझना नहीं। जलती रहना।"

दीपक अब भी झिलमिला रहा था।

मैना ने दोनों हाथ जोड़कर पुकारा—"हे परमेश्वर, दीनानाथ! हे अशरण शरण! मेरे हाथों से जलाया हुआ यह दीपक बुझने न पाये। तुम इसकी रक्षा करना........।"

इसी समय वायु का एक झोंका आया। दीपक फफककर बुझ गया।

मैना ने नीचे की ओर निहारा—अन्धकार! महा अन्धकार!

दीपक बुझा पड़ा था। मैना के अंग-प्रत्यंग शिथिल पड़ गये। उसके भावुक हृदय को एक गहरा आघात पहुँचा। वह रो उठी। हाथ जोड़-कर पुनः बोली—"हे जगदाधार! तुमने मेरी प्रार्थना ठुकरा दी। एक छोटा-सा दीपक भी तुमसे न देखा गया। उसकी ज्योति बुझ गयी। अन्धकार फैल गया। क्या हमारे भाग्य में अन्धकार ही बदा है? हमारे देशवासियों की यही दशा होगी? वे सब-के-सब बुझ जाएँगे। ये प्रलय की घटाएँ, ये काल के बवण्डर क्या इस नन्हें-से दीप के लिए ही उठे हैं। हे प्रभु!........।"

मैना अधिक बोल न सकी। उसका स्वर अवरुद्ध हो गया। उसने नीचे की ओर निहारा; दीपक बुझा पड़ा था। भीषण अन्धकार, वातावरण साँय-साँय कर रहा था। उसका सिर चकरा उठा, पैर लड़खड़ा गये। वह काँपकर गिरना ही चाहती थी कि दो सबल हाथों ने उसे सँभाल लिया।

"मैना रानी !" अंधकार में एक करुण स्वर गूँज उठा, "तुम्हें क्या हो गया है ?"

"कुछ नही बेगम !" मैना धीरे से बोली, "मुझे चक्कर आ गया था........।"

बेगम सहारा देकर मैना को कक्ष में ले गयी। अनेक परिचारिकाएँ दौड़ी आयीं। कोई सिर पर चंदन का लेप करती, तो कोई पंखा झलती। कोई माथे पर केशर लगाने लगी, तो कोई गुलाबजल के छींटे मारने लगी। मैना की आँखें बंद थीं। साँस तेजी से चल रही थी। परिचारिकाएँ घबड़ा उठीं। मलय की पावन शीतलता पाकर मैना की चेतना जगी। धीरे-धीरे उसकी अलसित आँखें खुलने लगीं।

"मैना रानी !" बेगम ने परेशान होते हुए पूछा—"क्या बात है ?"

"बेगम !" मैना झिझककर उठ बैठी। आश्चर्य से बोली,—"अरे ! यह क्या हो रहा है ?"

"मैना रानी !" बेगम ने संतोष की साँस लेते हुए कहा, "मरीज की हवा हो रही है।"

मैना विहँस उठी। बोली, "मैं एकदम स्वस्थ हूँ। एक स्वप्न-सा देख रही थी। तभी संभवतः चक्कर आ गया था। अब मैं ठीक हूँ। परेशान न होओ !"

बेगम आश्वस्त होकर मैना का मुख देखने लगी।

"दीपक बुझ गया !" मैना के होंठ बुदबुदाये। शरीर में एक लहर-सी उठी। वह काँपकर शान्त हो गयी। बेगम सब कुछ चुपचाप देखती रही, सुनती रही।

"मैं घबड़ा रही हूँ।" बेगम ने कहा—"कौन-सा दीपक बुझ गया ? तुम क्या कह रही हो !"

"बेगम !" मैना बोली, "कुछ नहीं। घबड़ाओ मत। एक बुझा हुआ दीपक सहस्रों दीपकों को जलने का उत्साह प्रदान करता है। छोड़ो

इसे ।" कहती हुई मैना उठ बैठी । बोली, "उस भेदियेवाली आवश्यक बातें तो बताओ !"

मैना की स्वस्थ मनःस्थिति ने बेगम को आश्वस्त कर दिया । उसके चेहरे की मायूसी दूर हो गयी । वह प्रसन्नता से मैना की ओर देखने लगी ।

मैना शान्त, गंभीर एवं प्रसन्नमुद्रा में बैठी थी ।

बेगम ने दोपहर में रोजी के खाना न खाने से लेकर उस बंगाली युवक तक की घटना, विस्तारपूर्वक बताते हुए कहा—"मुझे शक है । यह वही बंगाली युवक है तथा पत्र भेजनेवाली रोजी के सिवा कोई और नहीं है ।"

"क्यों ?" मैना ने प्रश्न किया, "तुम्हें रोजी पर ही क्यों संदेह है ! कोई अन्य महिला भी ऐसा कर सकती है ।"

बेगम ने कहा—"हाँ, आपका अनुमान ठीक है । पर, मेरे पास सबूत है ।"

"कैसा सबूत ?" मैना ने पूछा, "कब से सप्रमाण बातें करने लगी !"

"मैनारानी !" बेगम हँसकर बोली –"हाथ कंगन को आरसी क्या? यह लीजिये !" फिर अपने दुपट्टे से पत्र और मिट्टी का ढेला खोलते हुए कहा—"इससे बढ़कर सबूत और क्या हो सकता है ?"

मैना ने उसे उलट-पलटकर देखा । अंग्रेजी में कुछ लिखा था । मैना उसे ध्यान से देखती रही । फिर बोली– "इसे मैं पढ़ तो सकती नहीं । यह भी नहीं बता सकती कि यह किसका लिखा हुआ है । लेकिन इतना अवश्य कह सकती हूँ कि कालपी का बना हुआ वही कागज है जिसका प्रयोग हमारे यहाँ होता है ।"

"और यह ढेला ?" बेगम ने कहा–" इसे भी पहचानो !"

"यह तो दुर्ग के भीतर का ही है !" मैना बोली–"देखती नहीं, इसमें कंकरीट और पुराने चूने की छर्रियाँ हैं ।"

बेगम ने गौर से देखा—सचमुच उसकी मिट्टी में चूने एवं कंकरीट की छर्रियाँ मिली हुई थीं। वह गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करती हुई बोली—"मुझे ताज्जुब है कि रोजी को यह कागज मिला कहाँ से ?"

"मिला होगा कहीं से !" मैना ने लापरवाही से कुछ सोचते हुए कहा—" उसकी चिन्ता छोड़ दो। हो सकता है, कहीं से पा गयी हो।

"माधव ने दिया होगा !" बेगम ने चुटकी ली— "नयी दुलहिन से उसकी खूब पटती है।"

"माधव ने नहीं।" मैना ने हँसकर कहा—"तुमने दिया है।"

"मैंने ?"

"हाँ, हाँ, तुमने !" मैना ने दृढ़ता से कहा—"तुम्हीं ने दिया है।"

"गलत ! बिल्कुल गलत !!" बेगम ताव से बोली— "मैं उस मुहझौंसी को कागज दे सकती हूँ । झूठ न बोलो मैनारानी।"

मैना हँस पड़ी। बोली—"बेगम, उस दिन विनोद में रोजी को पहनाने के लिए बताशा बुआ के यहाँ से गहने कौन लाया था ?"

"मैं !"

"वे गहने किस चीज में लिपटे थे ?"

"कागज में ?"

"वह कागज क्या हुआ ?"

अब बेगम को ध्यान आया । कागज उसने वहीं छोड़ दिया था। उसे अपनी गलती पर जितना पश्चात्ताप हुआ, रोजी की बुद्धि पर उतना ही आश्चर्य ! बेगम सोचने लगी—चले थे हमलोग उसे बेवकूफ बनाने, उसने हमीं को बना दिया। कितनी होशियार लड़की है। वाह री रोजी ! कमाल कर दिया तूने ।"

"क्या सोच रही हो ?" मैना ने प्रश्न किया—"सही है न मेरी बात !"

"हाँ" बेगम ने सिर हिलाया—"मैं इस हकीक़त को इन्कार नहीं कर सकती।"

वह बहुत चालाक लड़की है । सत्तर घाट का पानी पिये है। मगर उसे स्याही कहाँ मिली ?"

मैना पुनः हँस पड़ी । बोली--"वंदीगृह में कोयले और पानी की कमी थोड़े है। देखती नहीं, इस स्याही का रंग ।"

बेगम ने गौर से देखा--सचमुच वह फीकी स्याही कोयले और पानी से बनी थी।

दोनों क्षणभर तक उस कागज और ढेले को देखती रही। रोजी के स्वभाव एवं आचरण की विषमता पर आश्चर्य करती रही। अन्त में निश्चय हुआ कि यह पत्र श्रीमंत साहब के पास भेज दिया जाय । पता लग जायेगा कि क्या लिखा है । इसे अपने पास रखना ठीक नहीं । इस निश्चय के पश्चात् बेगम अपने कक्ष में लौट आयी। मैना कागज लेकर श्रीमंत साहब के कक्ष की ओर चली गयी।

अपने कक्ष के द्वार पर पहुँचकर बेगम ठिठक गयी। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। कक्ष में दीपक जल रहा था। द्वार अधखुले पड़े थे। उसने कंपित हाथों से कक्ष का द्वार खोलकर झाँका- "सरवर खाँ लेटा हुआ था।"

बेगम पुलक उठी। प्रसन्नता से बोली- "आ गये ?"

"हाँ" सरवर खाँ ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया--"शमा की कशिश परवाना ही जानता है!"

बेगम तिरछी आँखें करके मुस्कुरा उठी।

सरवर खाँ उठकर बैठ गया।

बेगम ने धीरे से कक्ष के कपाट बंद कर लिये।

झरोखे से पुरवाई के मादक झोंके आ रहे थे । काली घटाएँ अब थिरक-थिरक कर बरसने लगी थीं। बिजली की चमक एवं बादलों की गरज में भी रात की नीरवता अलसने लगी थी। केवल पहरेदार पहरा दे रहे थे। इस बरसात में भी महिला वन्दीगृह के चारों ओर छठीं रेजी-

मेंट के सैनिक सतर्कता से पहरा दे रहे थे। शेष चारों ओर भीषण सन्नाटा था। नाना साहब और मैना गम्भीरमुद्रा में बैठे थे। सामने कागज एवं मिट्टी का ढेला पड़ा था।

● ● ●

१०

हैवलॉक अपने दल-बल सहित कानपुर के निकट आ चुका था। उसके गुप्तचर चारों ओर सक्रिय थे। अंग्रेज बन्दी महिलाओं ने सुविधा और स्वतन्त्रता का जो दुरुपयोग किया था, वह नाना साहब के लिए घातक सिद्ध हुआ। दुर्ग के अनेकों समाचार रहस्यमय भेदियों द्वारा अंग्रेजों तक पहुँच चुके थे। इन समाचारों से उन्हें बहुत बल मिला। परिस्थितियाँ समझ में आ गयीं। भारतीयों के स्वभाव एवं दुर्बलता का पता लग गया। योजनाएँ स्पष्ट हो गयीं। गुप्त कार्यक्रम प्रकट हो गये। कानपुर की भयानकता दूर हो गयी। आतंक जाता रहा। वहाँ की स्थिति का एक धुंधला रेखाचित्र सामने आ गया।

हैवलॉक अपने शिविर में बैठा था। वहाँ से उसे कानपुर के मन्दिरों के कंगूरे स्पष्ट दिखायी पड़ रहे थे। उसका हृदय रह-रहकर मचल उठता था। उसे एक ही धुन थी—कानपुर पर अपने को किस प्रकार पुनर्प्रतिष्ठित किया जाय। नाना साहब का नाम स्मरण आते ही वह काँप उठता था। कानपुर में ह्वीलर के अतःपतन की कहानी उसने सुनी थी। नाना साहब की वीरता एवं युद्धकौशल से भी वह परिचित हो चुका था। उनकी

कार्य-कुशलता का वह लोहा मान चुका था। यही कारण था कि उसने एक नयी चाल चली थी। उसने कानपुर की बन्दी अंग्रेज महिलाओं की स्थिति का पता लगाया। उसे ज्ञात हुआ कि उन्हें वहाँ अत्यधिक सुविधा एवं स्वतन्त्रता हैं। उसने अवसर का लाभ उठाने के लिए कुछ भारतीयों को अपने पक्ष में कर लिया। उन्हें भाँति-भाँति के प्रलोभन देकर कानपुर भेजा। इनमें कुछ तो नाना साहब के तथाकथित सहयोगी थे। कुछ बंगाली थे, जो कानपुर में ही रहते थे। इस प्रकार गुप्तचरों का एक अच्छा खासा गिरोह बन गया। यह गिरोह किसी-न-किसी प्रकार दुर्ग तक पहुँचता, बन्दी अंग्रेज महिलाओं के पत्र प्राप्त करता और उन पत्रों को हैवलॉक एवं नील के पास इलाहाबाद तक पहुँचाता रहा। इन पत्रों में नगर की सामान्य जानकारी के साथ-साथ कुछ मानचित्र भी थे। हैवलॉक को इससे बड़ी सहायता मिली। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि यदि कानपुर पर चढ़ाई की जाए तो विजय अवश्यम्भावी है। फलस्वरूप वह फतेहपुर को रौंदता हुआ कानपुर पर आ धमका।

"फतेहपुर?" हैवलॉक के चेहरे पर एक क्षीण मुसकान दौड़ गयी। पांडु नदी का भीषण-संग्राम उसे याद आया। वह सोचने लगा—यदि प्रयाग से जेनरल नील की सेना न आ जाती, तो मेरी भी वही दशा होती, जो ह्वीलर की हुई है। आतमसमर्पण सूचक सफेद झंडा फहराना पड़ता। नाना साहब हमारी छाती पर चढ़ बैठता, हमें रौंद डालता। किन्तु, यह रेनॉड! कितना बहादुर एवं वफादार सेनापति है। नवयुवक होते हुए भी अनुभवी एवं परिपक्व है। फिर उसने एक गर्म निःश्वास छोड़कर शिविर की ओर देखा। रेनॉड विचारमग्न बैठा था। उसने उसे सम्बोधित करके पूछा—"मि० रेनॉड!"

रेनॉड चौंक पड़ा। अदब से उठ खड़ा हुआ। बोला, "आज्ञा, श्रीमान्!"

"वह बंगाली गुप्तचर लौटा या नहीं?" हैवलॉक ने उसे बैठने का संकेत करते हुए पूछा।

"अभी तो नहीं आया !" रेनॉड ने उत्तर दिया—"मगर आता ही होगा।"

"ठीक है !" हैवलॉक ने कहा, "आते ही खबर दे देना !" फिर कुछ सोचते हुए गम्भीरता से कहा, "अब तक तो उसे आ जाना चाहिए। पता नहीं क्यों नहीं आया।"

"ईश्वर जाने !" रेनॉड ने उत्तर दिया, "कुछ कहा नहीं जा सकता !"

हैवलॉक चुप हो गया। कुछ क्षणों तक दोनों मौन रहे। थोड़ी देर बाद हैवलॉक आत्मविश्वास से बोला, "मि० रेनॉड ! कानपुर का रेखा-चित्र मेरे पास है। वह आवे या न आवे। कोई चिन्ता नहीं। जब पांडु नदी पर नाना की सेना पराजित हो गयी, तब यहाँ भी मैदान साफ है !"

"धोखे में न रहिएगा !" रेनॉड ने आगे कहा, "पांडु नदी की विजय के पीछे गुप्तचरों का हाथा। विद्रोहियों के भेदिये आकर मिल गये थे। यदि ऐसा न होता, तो हम क्या करते ? उनकी योजनाओं का पता कैसे लगा पाते ! श्रीमन् !" रेनॉड ने व्यंग्य से कहा, "यदि भेदिये आकर हमसे न मिलते, तो वह गोली बालासाहब को नहीं, मुझे या आप को लगती !"

रेनॉड के इतना कहते ही हैवलॉक हँस पड़ा। बोला, "ठीक कहते हो। वहाँ बहुत मदद मिल गयी थी। नहीं तो ब्रिगेडियर ज्वालाप्रसाद और उसका क्या नाम ?" हैवलॉक ने कुछ सोचते हुए पूछा।

"टिक्का सिंह !" रेनॉड ने कहा !

"हाँ, हाँ !" हैवलॉक हँस पड़ा। बोला, "अजीब नाम है। क्या बताया टिक्का सिंह !"

"जी हाँ !"

"दोनों ने सोच रखा था कि चुटकी बजाते ही हैवलॉक को ह्वीलर बना देंगे। उड़ा देंगे धमकियों से ! मगर रह गये बेचारे मुँह की खाकर !" इतना कहकर उसने भीषण अट्टहास किया। रेनॉड की हँसी भी उसी के अट्टहास में समा गयी।

"देखा हिकमत उल्ला खाँ का हाल !" हैवलॉक ने गम्भीरता से कहा, "हमने ही उसे डिप्टी मजिस्ट्रेट वनाया था और वही हमारे खिलाफ विद्रोहियों की सेना को लेकर लड़ने आया था। कितना वदमाश है। इन हिन्दुस्तानियों पर बिल्कुल विश्वास न करना चाहिए।"

"और गुप्तचरों पर !" रेनॉड ने चुटकी ली, "हिन्दुस्तानी गुप्तचर बड़े सच्चे हैं। कितनी सही खबर देते हैं।"

"जानते हो !" हैवलॉक ने कहा, "उनके सामने पैसे का लालच है। ताल्लुक की भूख है। वे सोचते हैं, कम्पनी सरकार गदर समाप्त होने पर उन्हें राजा वना देगी। वे इसी प्रलोभन में प्राण दे रहे हैं। वे राजा वनेंगे,, राजा !" व्यंग्य करते हुए उसने पुनः अट्टहास किया।

"कुछ भी हो !" रेनॉड बोला, "मुझे तो सबसे बड़ी प्रसन्नता इस वात की है कि फतेहपुर का मजिस्ट्रेट विद्रोहियों के चंगुल में आकर भी बच गया।"

"क्यों, उसे तो पुनः मजिस्ट्रेट बना दिया गया ?" हैवलॉक ने प्रश्न किया।

"हाँ, श्रीमान् !" रेनॉड ने उत्तर दिया, "वह तो विलकुल पागल हो गया था। जैसे ही हमारी सेनाओं ने फतेहपुर में प्रवेश किया, वह सेना की एक टुकड़ी लेकर चिल्लाया, "फतेहपुर लूट लो ! आग लगा दो !"

'सचमुच !' हैवलॉक ने आश्चर्य से पूछा, "फतेहपुर में तो सिख रेजी-मेण्ट ने आग लगायी थी। गाँव-के-गाँव जलाये थे। क्या यह उसी का आदेश था ?"

"श्रीमान् !" रेनॉड ने हँसकर कहा, "यह उसी का आदेश था। वेचारा एक बार का जला-भुना था। इस वार उसने गाँव-के-गाँव साफ करवा दिये !"

दोनों फतेहपुर के युद्ध की रोचक बातें कर ही रहे थे कि एक आदमी आता दिखायी पड़ा। वह खानसामे की पोशाक पहने था।

बातें बन्द हो गयीं। दोनों उस नवागन्तुक को ध्यान से देखने लगे। वह बड़ी तेज़ी से चला आ रहा था। उम्र में कुछ अधिक होने पर भी वह स्वस्थ था। उसके अवयवों में एक अजीब स्फूर्ति थी। मांसपेशियाँ सुदृढ़ थीं। शरीर गठा हुआ था। अङ्ग-प्रत्यङ्ग पुष्ट थे। हैवलॉक एवं रेनॉड दोनों उसे गौर से देख रहे थे। वह झपटता हुआ हैवलॉक के सामने आकर खड़ा हो गया। फौजी ढङ्ग से उसने सैल्यूट बजाया। हैवलॉक सैल्यूट का उत्तर देकर उस रहस्यमय व्यक्ति को ध्यान से देखने लगा। आगन्तुक ने इधर-उधर दृष्टिपात किया। सेनाएँ अपनी तैयारी में लगी थीं। तोपें सजायी जा रही थीं। बैलगाड़ियों में रसद एवं आवश्यक सामान लादा जा रहा था। उसने पुनः हैवलॉक की ओर विस्मय से देखा।

"वेल!" हैवलॉक ने गम्भीरता से पूछा, "टुम क्या चाहटा है?"

"मैं सेनापति हैवलॉक....।" कहते-कहते आगन्तुक रुक गया।

"कहाँ से आटा है?"

"लखनऊ से!"

"ओ।" हैवलॉक उछल पड़ा। उसे लखनऊ का कोई समाचार नहीं मिला था। संपूर्ण अंग्रेजी सेना इस समय रेजीडेंसी में कैद थी। बाहर सूचना देनेवाला एक भी अंग्रेज न था। विवश होकर सेनापति इंगलिश ने इस भारतीय से सेवा ली। इसे प्रलोभन दिया। यह बेचारा प्राणों की बाजी लगाकर यहाँ आया। इसका नाम अंगद था। यह अंग्रेजी सेना में पहले काम कर चुका था। अब पेंशन के टुकड़ों पर जीवित था। और आज वही नमक अदा करने आया था। हैवलॉक का परिचय प्राप्त होते ही उसने उसे इंगलिश का पत्र निकालकर दे दिया। हैवलॉक ने उसे पढ़ा। अंगद को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए कहा, "वेल अंगड, हम टुमसे बहोत खुश है। टुम बरा बहादुर हैं। शाबाश!" फिर उसने अंगद की पीठ थप-थपायी। अंगद की छाती फूल उठी। उसने हाथ जोड़े। शीश झुकाया।

"कहो! कहो!!" हैवलॉक ने कहा,—"कुछ कहना चाहटा है?"

"अन्नदाता !" अंगद दीन स्वर से बोला,—"मैं कम्पनी सरकार का नमक बहुत खा चुका हूँ। कई वर्ष तक ताबेदारी की है। मैं चाहता हूँ कि सरकार की कृपादृष्टि बनी रहे।

"बहोत अच्छा !" हैवलॉक रेनॉड की ओर देखकर बोला,—"हम टुमको इनाम डेगा। टुमें राजा बनाग्रेगा। खूब मेहनत करते रहो।"

"परवरदिगार !" अंगद ने कृत-कृत्य होते हुए कहा,—"लखनऊ की दशा बहुत खराब है। चारों ओर पहरा लगा है। कोई आ-जा नहीं सकता। सभी अंग्रेजी रेजीडेंसी में कैद हैं। मैं किसी प्रकार प्राण बचा-कर यहाँ तक आ पाया हूँ।"

"हम जानटा है !" हैवलॉक ने पूछा, कोई नया बाट है ?"

"सरकार !" अंगद ने धीरे से कहा,—"नाना साहब का पत्र वहाँ पहुँच गया हैं। बड़ी हलचल मची है। लगता है, कोई भी अंग्रेज वहाँ जीवित न रहेगा। इसका प्रभाव पूरे अवध में पड़ा है। सभी राजे, मह-राजे, ताल्लुकेदार लखनऊ पर चढ़ाई करने की सोच रहे हैं। आप कैद अंग्रेजों की मदद कीजिए....।"

"हम मदद करेगा !" हैवलॉक ने बात काटते हुए कहा,—"लेटर में सब कुछ लिखा है। धीरे से बाट करो। यहाँ के पेड़ भी बातें सुनटे हैं।"

अंगद चुप हो गया।

हैवलॉक ने पत्र रेनॉड की ओर बढ़ा दिया। रेनॉड ने उसे पढ़ा। वह उसका उत्तर तैयार करने लगा।

"वेल फ्रेण्ड !" हैवलॉक अंगद की ओर मुखातिब होते हुए बोला।

अंगद ने पुनः शीश झुकाया। हाथ जोड़ा और नमन किया।

"टुम यहाँ रुकेगा ?" हैंवलॉक ने प्रश्न किया।

"नहीं !" अंगद ने शीश हिलाया,—"मैं अभी वापस जाना चाहता हूँ सरकार ! सब लोग इन्तजार में होंगे। मैं देर करता हूँ, तो सब घुट-घुटकर मर जाएँगे। मेरे सकुशल लौटने पर उनमें आशा का संचार होगा। साहस बढ़ेगा। मेरा रुकना ठीक नहीं !"

टुम ठीक बोलटा है !" हैवलॉक ने अंगद की वफादारी की प्रशंसा करते हुए कहा,--"बरा ब्रेव आदमी है। हम अभी लेटर का जवाब डेटा हैं। टुम जल्डी पहोंचाना। शाबाश।" फिर उसकी पीठ ठोंकते हुए उसके कान में धीरे से कहा,—"टुम यहाँ से खूब होशियारी से जाना। गली-गली में भेदिया है। टुमे डेखटे ही नाना को खबर कर डेगा। नाना टुमको मार डालेगा। अच्छा !"

अंगद ने हाथ जोड़कर स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया।

हैवलॉक उसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हुए पुनः यथास्थान बैठ गया। रेनॉड पत्र लिख चुका था। उसने पत्र हैवलॉक की ओर बढ़ा दिया। हैवलॉक ने उसे पढ़ा। पढ़कर कुछ संशोधन किया। अन्त में हस्ताक्षर करके उसे अंगद को सौंपते हुए कहा,—"मेरे अच्छे डोस्ट !"

अङ्गद ने हाथ फैला दिया। हैवलॉक ने उसे पत्र देते हुए पुनः सतर्क किया। सावधान रहने की चेतावनी दी। अङ्गद फौजी सलाम बजाकर चल पड़ा।

अङ्गद के जाने के बाद हैवलॉक एवं रेनॉड बड़ी देर तक आपस में बातें करते रहे। दो क्षण पूर्व हैवलॉक द्वारा कही गयी बात पर चुटकी लेते हुए रेनॉड ने कहा,—"अब भी आपको भारतीयों पर विश्वास नहीं ?"

हैवलॉक मुस्कुरा उठा। उसे अङ्गद की वफादारी ने चकित कर दिया था।

परेड का समय हो गया था। सेनाएँ तैयार खड़ी थीं। सामान बैल-गाड़ियों, ऊँटों एवं टट्टुओं पर लद चुका था। हैवलॉक, रेनॉड को साथ लेकर परेड पर गया। सामानों का—निरीक्षण किया। कुछ अफसरों को एकान्त में बुलाकर उसने कानपुर का नक्शा निकाला। यह मानचित्र उसे बन्दी अंग्रेज औरतों द्वारा मिला था। एक भारतीय गुप्तचर इसे लाया था। हैवलॉक अधिकारियों सहित जमीन पर बैठ गया। नक्शे की आकृति

उसने जमीन पर बनायी। सभी अधिकारी चारों ओर बैठकर देखने लगे। वह गंभीरतापूर्वक सबको समझाता हुआ बोला,--"देखो, यह ग्रैंडट्रंक रोड है। इस स्थान से दूसरी सड़क कानपुर को जाती है। दोनों सड़कों के बीच में एक गाँव है। उससे कुछ दूरी पर दूसरा गाँव है। सड़क के उस पार तीसरा। जहाँ पर ये दोनों सड़कें मिलती हैं, उससे थोड़ा और आगे चले चलो। दोनों, यहाँ तक !" उसने उँगली रखकर बताया। यह दाहिना भाग है। हमें यहीं से आक्रमण करना है। समझे ! इलाहाबादवाली सड़क के पास ही से हमें प्रवेश करना है। यहाँ पर पैदल रहेंगे। यहाँ घुड़सवार, यहाँ तोपखाना और यहाँ सामान—समझ गये !"

"हाँ ! हाँ !! श्रीमान् !" सभी सेनानी एक स्वर में बोल उठे,— "समझ में आ गया।"

हैवलॉक ने दूसरा कागज दिखाते हुए कहा,—"यह दुर्ग का नक्शा है। यहीं पर तमाम अंग्रेज औरतें, बच्चे वन्दी हैं। इस नक्शे के विषय में बाद में बताऊँगा। इसका नाम है—बीबीघर ! याद कर लो !" फिर उसने कागज के टुकड़े को मोड़कर जेब में रख लिया। जमीन पर बनाये गये नक्शे को जूते से रगड़ दिया। सब लोग अपने-अपने शिविर में चले गये। हैवलॉक, रेनॉड से बातें करता हुआ अपने खेमे की ओर चल पड़ा। वह वहाँ पहुँच भी न पाया था कि एक गुप्तचर ने खबर दी,—"बङ्गाली युवक पकड़ गया है और नाना साहब की कैद में है।"

रेनॉड, जो अभी-अभी प्रसन्नतापूर्वक बातें कर रहा था, इस समाचार से हतप्रभ हो गया। वह मन-ही-मन परेशान हो उठा। एक बार रोजी की मनमोहक मूर्ति उसकी आँखों में पुनः झूम उठी। रोजी, जो ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की ओर से भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करने आयी थी। रोजी, जो गुलाब की तरह कोमल थी—उसे सर्वप्रथम कलकत्ते में मिली थी। वहीं दोनों का परिचय हुआ। घनिष्ठता बढ़ी। किन्तु

अब ? दोंनो विद्रोह की लहरों में इधर-उधर भटक रहे हैं। किसी प्रकार पता भी लग पाया, हो गुप्तचर ही पकड़ लिया गया।

रेनॉड ने एक ठण्ढी साँस ली। वह खोया-खोया-सा हैवलॉक के साथ शिविर में चला गया।

● ● ●

११

नाना साहव का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। धमनियों का गर्म खून रह-रहकर उवल उठता था। सभी दरवारी यथास्थान बैंठे थे। सभी के चेहरे पर गंभीरता एवं आँखों में उत्सुकता थी। नाना साहब के मुखमंडल की ओर देखने का किसी को साहस न होता था। जिस समय से वह वंगाली गुप्तचर बन्दी वनाया गया था, नाना साहव का मन उद्विग्न हो उठा था। वे क्रोधपूर्ण मुद्रा में बैंठे सोच रहे थे—यह भी देश के लाल हैं। भारतमाता ने इनको पाला-पोसा है, हलराया-दुलराया है, अपना दूध पिलाया है, अन्न दिया है, इनका तन वस्त्रों से ढँका है, वड़ा किया है। जिस दिन ये पैदा हुए होगें, माँ को पुत्रवती होने का गौरव प्राप्त हुआ होगा। और आज ?—नाना साहव का मन घृणा से भर गया। आत्मा हाहाकार कर उठी—आज आपत्ति का समय है। इस समय ये उसी माँ की पीठ में छूरा भोंक रहे हैं। अपने सहस्रों भाइयों के गले पर खंजर चलवा रहे हैं। इन्हें न तो देश के लिए

दर्द है, न देशवासियों के प्रति हमदर्दी ! विषम परिस्थितियों में भी गद्दारी कर रहे हैं।

सोचते-सोचते नाना साहब की विचारधारा अतीत की ओर मुड़ गयी। घटनाएँ उभरने लगीं। वे विचारमग्न हो सोच रहे थे—मैंने इतिहास में पढ़ा था, विभीषण एक है ! जयचंद एक है ! मीरज़ाफर एक है ! किन्तु इस समय तो नगर-नगर में विभीषण हैं। गाँव-गाँव जयचंद हैं। घर-घर मीरजाफर हैं। किस पर विश्वास करूँ ? किसे गद्दार समझूँ और किसे देशभक्त ?

सोचते-सोचते नाना साहब की आँखों के डोरे पुनः लाल पड़ गये। उन्होंने आवेश में पुकारा, "सरवर खाँ !"

"श्रीमंत की जय हो !" सरवर खाँ ने हाथ जोड़कर शीश झुकाया।

"उन सभी रहस्यमय भेदियों को मेरे सम्मुख उपस्थित किया जाय !" नाना साहब भावावेग में बोले; "जिन्होंने देश के साथ विश्वास-घात किया है। वे भारतीय हों अथवा अंग्रेज, बच्चे हों या बूढ़े, पुरुष हों या महिला ! इतिहास उन्हें भले ही क्षमा कर दे, किन्तु पेशवा का रक्त उन्हें क्षमा नहीं करेगा।"

आज्ञा पाते ही सरवर खाँ दरबार से बाहर चला गया। थोड़ी देर में वह तीन-चार भारतीय, कुछ अंग्रेज पुरुष एवं महिलाओं को सेना के पहरे में ले आया। सभी के हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी थीं। पैर बेड़ियों से जकड़े थे। सब-के-सब कठघरे में एक ओर खड़े कर दिये गये। पुरुषों में वह बंगाली युवक भी था तथा महिलाओं में रोजी !

नाना साहब ने घृणा से एक बार सब की ओर निहारा। बन्दियों के शरीर थरथरा उठे। बेड़ियाँ खनखनाकर मौन हो गयीं।

नाना साहब के आदेश पर बेगम को बुलाया गया। वह पहले से ही पीछे के हॉल में उपस्थित थी। काला बुर्का ओढ़कर बाहर निकली। नाना साहब ने उसे लक्ष्य करके कहा, "बेगम ! इन बन्दियों में तू उस व्यक्ति को पहचान सकती है, जो तुझे किले के पृष्ठ भाग पर मिला था।"

"श्रीमंत ! बेगम ने वंदियों की ओर दृष्टपात करते हुए कहा, "कैदी तीन हैं।"

नाना साहव ने उस बंगाली युवक की ओर ध्यान से देखा। उसने लज्जा से शीश झुका लिया। इसके वाद नाना साहव ने अन्य व्यक्तियों को वुलाया। सव की शिनाख्त हुई। प्रमाण उपस्थित किये गये। केवल वह सजल नेत्रों से नाना साहव की ओर निहार रही थी। नाना साहव के हाथ में उस समय कागज का वही टुकड़ा था, जो वेगम को ढेले में लिपटा मिला था। अजीमुल्ला खाँ ने उस पत्र को पढ़कर नाना साहव को समझाया। पत्र में किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। अतः प्रमाण नहीं मिल रहा था। नाना साहव ने रोजी की ओर वक्र दृष्टि से देखा। रोजी काँपं कर रह गयी। नाना साहव ने आवेश में पुकारा "रोजी।"

"नाना साहव लांग लिव !" रोजी ने अपना पुराना ब्रह्मास्त्र छोड़ा।

"भाड़ में जाय नाना।" नाना साहव ने सक्रोध कहा, "एक ओर मेरे सर्वनाश की साजिश कर रही है और दूसरी ओर चिरजीवी होने का वरदान दे रही है। देखो यह पत्र, किसका लिखा है ?"

"हम नहीं जानटा !" रोजी ने कहा—"हम वेगुनाह हैं। माफी चाहटा है।" उसका स्वर काँप गया।

"इसकी हथकड़ी खोल दो !" नाना साहव ने आदेश दिया।

"नाना साहव लाँग लिव !" हथकड़ी खुलने का आदेश होते ही रोजी चिल्ला उठी।

सैनिक ने वढ़कर उसकी हथकड़ी खोल दी। नाना साहव ने उसे अपने पास बुलाया और उसे कलम, दावात एवं कागज देकर कहा,—"इस पर अंग्रेजी में कुछ लिखो !" रोजी ने चार-छः पंक्तियाँ लिखीं। सभी पंक्तियों में नाना साहव की दया एवं करुणा की भूरि-भूरि प्रशंसा थी। नाना साहव ने उसे अजीमुल्ला खाँ की ओर वढ़ाते हुए कहा,—"खाँ साहव, दोनों कागजों की हस्तलिपि मिलाकर अपना निर्णय दीजिए !"

खाँ साहब ने पत्र पढ़ा। वे मुस्कुरा उठे। हस्तलिपि मिलाने के बाद बोले,—"श्रीमंत, हस्तलिपि मिल नहीं रही।"

"क्यों?" नाना साहब ने आश्चर्य से पूछा? क्या यह रोजी का लिखा नहीं है?"

"हो सकता है, उसी का लिखा हो!" अजीमुल्ला खाँ ने गम्भीरता से कहा—"किन्तु हस्तलिपि मिल नहीं रही एक आदमी कई क़िस्म के हरफ़ों का इस्तेमाल कर सकता है।"

नाना साहब असमंजस में पड़ गये। उन्होंने बिना प्रमाण मिले रोजी-को दण्ड देना उचित न समझा। फलतः उसे अन्य महिलाओं के साथ बंदी-गृह में वापस भेजते हुए कहा,—"रोजी, मैं तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण नहीं पा रहा। छान-बीन कर लेने के बाद ही निर्णय दूँगा। यद्यपि मुझे तुम पर विश्वास नहीं है। यह कागज और यह मिट्टी का ढेला यहीं का है। फिर भी अभी हस्तलिपि के विषय में पर्यवेक्षण करना है। तुम जा सकती हो।"

रोजी शीश झुकाकर, सैनिकों के पहरे में, महिला वंदीगृह की ओर चल पड़ी। उसके जाने के पश्चात् नाना साहब के आदेश से शेष अपरा-धियों को दंड दिया गया। सरेआम उनके सिर धड़ से अलग कर दिये गये। लाशें तड़फने लगीं। विद्रोहियों ने अट्टहास किया, "कानपुर, जयचंद एवं मीरज़ाफर से खाली हो गया।"

नाना साहब के विरोधी तत्त्व एक बार पुनः काँप उठे।

दरबार अभी लगा हुआ था। गुप्तचर क्षण-प्रति-क्षण सूचनाएँ दे रहे थे। उसी समय एक गुप्तचर आया। उसने नाना साहब को कुछ सूचना दी। वे गंभीर मुद्रा में दरबार से उठकर अपने मंत्रणा-कक्ष की ओर जाने लगे। उनके साथ बालासाहब, तांत्याटोपे और अजीमुल्ला खाँ भी थे। जाते-जाते उन्होंने सरवर खाँ से कहा—"खां साहब! मैं तुम्हारे इस उपकार से जीवन-भर उऋण नहीं हो सकता।"

सरवर खाँ खड़ा हो गया। दोनों हाथ जोड़कर उसने शीश झुकाते हुए कहा, "श्रीमंत! यह तो मेरा फर्ज था। आपके इक़बाल से मैं इस

दुष्ट को पकड़ पाया। यह खुदा का शुक्र है जो उसने मुझे इतनी इज्जत बख्शी वर्ना....।" वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि नाना साहब मंत्रणा-कक्ष में चले गये।

सरवर खाँ की तारीफ सुनते ही बेगम प्रसन्नता से पुलक उठी। वह हैरत में पड़ गयी। सोचने लगी—इन्होंने कौन-सा ऐसा काम कर डाला जो श्रीमंत साहब इतने खुश हैं। मुझसे भी नहीं बताया। कल शाम को ही जब आये, तब बड़े खुश नजर आ रहे थे। मुझे मौका भी नहीं मिल सका कि कुछ पूछ सकूँ। थोड़ी देर तक गप्पें लड़ाते रहे। फिर श्रीमंत साहब ने बुला लिया। पता नहीं, रात-भर कहाँ रहे। आज इस समय दरबार में दिखायी पड़े हैं। आते ही पूछूंगी। अवश्य पूछूंगी।

दिन ढल चुका था। सन्ध्या होने में अभी कुछ देर थी। फिर भी, बेगम की उत्सुकता-भरी निगाहों को ऐसा लग रहा था—जैसे रात हो गयी हो। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले। कमरे की सफाई की। खाने का सामान ठीक किया। बिस्तरे को झाड़ा-पोंछा। दरी के ऊपर एक सुंदर रंगीन चद्दर बिछाया। तकिये का गिलाफ बदला। कक्ष ठीक कर लेने के बाद उसने सभी चीजों को देखा। सब यथास्थान थीं। उसने एक लंबी साँस ली। चौंकती हुई आगे बढ़ी—अरे! अभी चिराग़ तो जलाया ही नहीं! वह धड़कते हृदय से दीपक जलाने जा ही रही थी कि किसी ने व्यंग्य से कहा, "साँझ होने में देर है। अभी से चिराग क्यों जला रही हो?"

बेगम ने घूमकर निहारा—सरवर खाँ था।

वह शरमा गयी। बात बनाती हुई बोली, "किले की ऊँची-ऊँची दीवारों में पता ही नहीं लगता कि आफताब कब उठा और कब झुक गया।"

"पता भला क्यों लगेगा" सरवर खाँ बोला—

"शब कि वो मजलिस, फुरोजे-खल्वते नायूस था!
रिश्तये हर शमअ, खारे किस्वते, फानूस था!"

"ज़रूर ! ज़रूर !!" बेगम ने आँखे नचाते हुए कहा, "पता भी है आपको ?"

"क्या ?" सरवर खाँ ने विस्मय से पूछा।

"शम्मा हर रंगये जलती है सहर होने तक !" बेगम ने उत्तर दिया।

"मगर शाम के पहले किस रंग में जलती है ?" सरवर खाँ ने सुरूर-भरी नजरों से बेगम की ओर देखते हुए व्यंग्य किया।

"दिल के रंग में !" बेगम ने तपाक से उत्तर दिया।

"वल्लाह !" सरवर खाँ चिल्ला उठा—

"आशिक़ी सब्र तलब और तमन्ना बेताब !
दिल का क्या रंग करूँ, खूने ज़िगर होने तक !"

उसके इस शेर पर बेगम खिलखिला पड़ी। बोली, "घबड़ाइए नहीं। खूने जिगर की नौबत न आएगी। इंशा अल्लाह तब तक सुलह हो जाएगी !"

दोनों ने 'सुलह' शब्द पर एक साथ अट्टहास किया। बेगम कुछ सोचती हुई बोली, "अरे, मैं तो हंसी-मजाक में पूछना ही भूल गयी। आज आपको शाबाशी क्यों मिल गयी ?"

सरवर खाँ ने मुस्कराकर एक ठण्ढी साँस ली। उसका मस्तक गर्व से उन्नत हो गया। बोला, "बड़ी लम्बी कहानी है। सोचा था, सबसे पहले तुम्हें बताऊँगा। मगर श्रीमन्त साहब का हुक्म हो गया कि किसी को कानों-कान खबर न हो, नहीं तो भेद खुल जाएगा। हमलोग रात-भर परेशान रहे। आखिरकार कामयाबी मिल ही गयी। तीन-चार जासूस और पकड़े गये।"

"कहाँ ?" बेगम ने प्रश्न किया।

"कुछ किले में, कुछ बाहर !" सरवर खाँ बोला, "मै बिठूर से वापस आ रहा था। उसी समय मुझे लगा—किले के पिछवाड़े से कछार की तरफ एक आदमी भागा जा रहा है। मुझे शक हो गया। मैंने घोड़ा उधर

ही मोड़ दिया। मुझे देखकर वह सकपकाया। मेरा सन्देह और वढ़ा। मैंने उसे रोककर पूछा; "कहाँ से आ रहे हो ?"

"गोला से ?" वह डरता हुआ बोला।

मैंने डपटकर कहा, "उल्लू के पट्ठे ! यह गोला क्या है ? तोप का गोला ?"

"नहीं !" उसने सिर हिलाया।

"गोलाघाट ?" मैंने पूछा।

"हाँ, हाँ" वह डरता हुआ बोला।

नाना साहब का नाम सुनते ही उसकी रूह फना हो गयी। गिड़गिड़ाता हुआ बोला, "मुझे वहाँ न ले जाओ। मैं तुमको इनाम दूंगा।" इतना कह-कर उसने अशर्फियों का एक थैला निकाला उसकी इस हरकत पर मुझे पक्का यकीन हो गया कि हो-न-हो यह जासूस ही है। मैं उसे पकड़कर दरवार में लाया। वहाँ जब उसकी खूब पिटाई हुई, तब उसने कवूल किया कि वह जासूस है। हैवलॉक को वह किले की खवरें बरावर देता रहा है। आज भी जासूसी करने आया था। इसके आगे उसने कुछ भी वताने से इन्कार कर दिया। केवल यही बकता रहा। उसका फादर हमारी कंपनी में काम करता है। उसकी लड़की को हम जानटा है। मिलने आया है।" पता नही वह लड़की कौन है ?

"मैं वताऊँ !" बेगम बोली"—वह रोजी है !"

"नहीं !" सरवर खाँ ने उत्तर दिया—"रात में जव खाँ साहव ने तीन-चार फिरंगी लड़कियों को खड़ा करके पूछा कि किसका फादर कलकत्ता में है, तव वह कुछ वता न सका। कभी मिस नॉरमान की ओर इशारा करता कभी रोजी की ओर ! असलियत यह है कि वह किसी को पहचानता नहीं। इसमें कुछ रहस्य है। वहुत कोशिश करने पर भी वह खुल नहीं सका। अव तो वह कत्ल ही कर दिया गया।"

"आप लोग नहीं समझते !" बेगम बोली, "यह रोजी जहर की पुड़िया है। रोज टहलने जाती थी। वहीं इससे भेंट हो गयी होगी। वर्ना ढेले में लपेटकर खत भेजने के क्या मानी !"

"क्या कहा ?" सरवर खाँ ने पूछा, "खत उसी ने भेजा था।"

"हा" बेगम ने संपूर्ण किस्सा वताते हुए कहा, "आज भी नाना साहव ने उसे छोड़ दिया। इन लोगों ने वहुत वड़ा साजिश कर रखी है।"

"हाँ !" सरवर खाँ बोला, "कानपुर की पूरी खबरें इलाहाबाद तक पहुँची हैं। ताज्जुव होता है इनके कारनामों को देखकर !"

बेगम गंभीर वनी बैठी रही।

सरवर खाँ कहता गया, "पता है तुम्हें कुछ ! पांडु नदी पर हमारी फौजों के हटने की वजह यही थी। हमारे सभी भेद खुल गये थे, वर्ना हम हारते नहीं और फतेहपुर पर ही आफत वरपा होता।"

"फतेहपुर ?" बेगम ने पूछा, "वहाँ क्या हुआ ?"

-'काविले बयान नहीं !" सरवर खाँ ने दुःखी मन ने कहा, "आज नाना साहव वता रहे थे। जव हमारी फौजें वहाँ से हट गयीं, तव अंग्रेजों ने फतेहपुर पर हमला किया। गाँव-के-गाँव फूंक दिये। शहर जला दिया। सरेआम औरतों को, वच्चों को घसीटा। उनका कत्ल किया। इज्जत लूटी। कहाँ तक कहूँ........।"कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू आ गये। बोला, "औरतों की जो वेइज्जती फतेहपुर और इलाहाबाद में की गयी है, वह जुवान पर लाने के काविल नहीं, सिर्फ दिल तड़प कर रह जाता है। बड़े वेरहम हैं ये सव ! किसी को छोड़ते नहीं। न मासूस वच्चों पर तरस खाते हैं, न वेगुनाह औरतों पर ! हैवान हैं, हैंवान ! इनमें इन्सानियत का नामोनिशान नहीं।"

"एक वे हैं" बेगम ने हथेली नचाते हुए कहा, "दूसरे आप ! आज भी उस हरामजादी को छोड़ दिया। मेरा वस चले तो मैं एक-एक का खून पी लूँ। हलाल कर डालूं सवों को !"

"बेगम !" सरवर खाँ ने गम्भीरता से कहा, "बात तो ठीक कहती हो। मुझे भी कभी-कभी ऐसा ही लगता है। दिल चाहता है, इन आस्तीन के साँपों को कुचलकर रख दूँ। दरियाये गंगा की धारा लाल कर दूँ। मगर दिल मसोसकर रह जाता हूँ। श्रीमन्त साहब का हुक्म! कुछ कहते नहीं बनता!"

उसकी बातों से बेगम को कुछ प्रोत्साहन मिला। बोली, "कुछ भी हो। मैं इलाहाबाद और फतेहपुर का बदला लेकर रहूँगी। अगर मर्द औरतों के ऊपर हाथ उठाना गुनाह समझते हैं, तो अब औरतें ही अपने हाथ खून से लाल करेंगी!"

"पगली !" सरवर खाँ ने मुस्कुराते हुए कहा, "हमलोग श्रीमन्त साहब के हुक्म के खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते!"

"क्यों ?" बेगम ने पूछा, "सतीचौरा घाट में जो कुछ हुआ, उसके लिए नाना साहब ने किसे हुक्म दिया था? कर्नल एवर्ट की बीवी की हत्या क्या नाना साहब के हुक्म से हुई है?"

"नही !" सरवर खाँ बोला, "जो हो गया, वह हो गया। अब कुछ भी नहीं हो सकता। नाना साहब का सख्त हुक्म है। भला कोई चूँ तो करे!........।"

वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि बेगम उबल पड़ी, "हमें इलाहाबाद और फतेहपुर की अपनी बहनों का बदला लेना है। हम लेंगे! श्रीमन्त साहब इजाजत नहीं देते, तो मैं जाती हूँ ....।"

और अपना काला रेशमी बुर्का ओढ़कर कक्ष के बाहर निकल गयी।

सरवर खाँ चुपचाप बैठा रहा। वह कभी जाती हुई बेगम की ओर देखता, कभी कक्ष के अन्धकार की ओर। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह क्षणभर में क्या हो गया।

● ● ●

१२

प्रभात होने के पूर्व ही कानपुर में हलचल मच गयी। नगर के दक्षिणी भाग पर हैवलॉक ने आक्रमण कर दिया था। नाना साहब को उसकी गतिविधि की सूचना थी। आक्रमण के विषय में तो उन्हें उसी समय जानकारी हो गयी थी, जब वे रहस्यमय भेदियों को दण्ड दे रहे थे। परिणाम स्वरूप वह गुप्त मन्त्रणा-कक्ष में चले गये थे। कानपुर में अंग्रेज भेदियों का जाल-सा बिछा हुआ था। नाना साहब को अपना रहस्य खुल जाने की आशंका थी। वे शाम को ही बिठूर चले गये थे। उनके जाने के पश्चात् ही बीबीघर में यह सब हो गया। पहरे पर तैनात छठीं रेजीमेंट के सैनिकों ने धड़ाका सुना। चीख-पुकार सुनी। वे वन्दीगृह की ओर भागे। वहाँ अनेकों स्त्री-पुरुष घायल एवं मृत अवस्था में पड़े थे। सैनिक यह सब देखकर स्तब्ध हो गये। वन्दीगृह की संरक्षिका बेगम का कहीं पता नहीं था। सैनिकों का सन्देह बढ़ा। वे बाहर निकले। कछार की ओर भागते हुए कुछ व्यक्ति उन्हें दिखायी पड़े। उन्होंने उन्हें गोली का लक्ष्य बनाया। धाँय ! धाँय !! धाँय !!! की आवाज़ हुई। क्षणभर पश्चात् सन्नाटा छा गया। अन्धकार में पता न लग सका कि कौन मरा, कौन घायल हुआ। केवल एक चीख सुनायी पड़ी। और शान्ति छा गयी। सैनिक पहरे पर लौटे; तो उन्हें तत्काल ही युद्ध में जाने का आदेश मिला। दुर्ग खाली हो गया। सम्पूर्ण नगर में बेगम चर्चा का विषय बन गयी।

१५ जुलाई की रात प्रेतिनी हो गयी।

एक ओर बीबीघर में यह सब हो रहा था, दूसरी ओर नाना साहब बिठूर के राजभवन में बैठे थे। उनके साथ उनके छोटे भाई बालासाहब, भतीजा राव साहब, त्यांत्याटोपे तथा अन्य सरदार एवं सेनापति थे। आगामी योजनाओं पर विचार-विमर्श हो रहा था। बहुत तर्क-वितर्क के

वाद जब कोई रास्ता न निकला, तब नाना साहब ने प्रस्ताव किया, "इस समय तो यही मुनासिब है कि हम बिना लड़े कानपुर खाली कर दें !"

"नहीं !" तांत्याटोपे ने क्षोभ से कहा, "श्रीमन्त, मुझे क्षमा करें। मैं आपके विचार से पूर्णरूपेण असहमत हूँ।"

तांत्या के इतना कहते ही नाना साहब के गम्भीर मुखमण्डल पर एक आभा-सी चमक उठी। बोले, "मैं स्वयं भी अपने प्रस्ताव से सन्तुष्ट नहीं हूँ। किन्तु परिस्थितियाँ ऐसी हैं, जिनकी वजह से मैंने ऐसा प्रस्ताव रक्खा है। इस प्रस्ताव के पीछे मेरी मनोभावना कुछ दूसरी है।" उन्होंने स्पष्टीकरण किया, "कानपुर खाली करके, वैसवारा या अन्य किसी स्थान पर मोर्चा लगाया जाय।"

"श्रीमन्त !" तांत्या ने कहा, "यह उचित नहीं। हम कानपुर खाली नहीं करेंगे !"

"तो इस आक्रमण का करारा प्रतिवाद करें ?" नाना साहब ने प्रश्न किया।

"हाँ" तांत्या ने कहा, "हैवलॉक आज सुबह तक आक्रमण कर देगा। यही उचित हैं।"

तांत्याटोपे के विचारों का अन्य लोगों ने भी समर्थन किया। कक्ष के सन्नाटे में एक साथ कई आवाजें गूंज उठीं, "हम करारा प्रतिवाद करेंगे !"

प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पारित हो गया।

रातोंरात सभी सेनानी कानपुर पहुँचे। प्रभात होने के पूर्व ही सब सेनाएँ बुला ली गयीं। नगर के दक्षिणी भाग पर नाना साहब ने मोर्चे-बन्दी की। आगे तीन भीमकाय तोपें लगा दी गयीं। पंक्तिबद्ध सैनिकों का व्यूह बनाया गया। नाना साहब अपने सफेद घोड़े पर सवार होकर हर पंक्ति के साथ घूम रहे और सैनिकों को निर्देश दे रहे थे। उसी समय उन्हें अंग्रेजी सेना दिखायी पड़ी। वह चुपचाप खड़ी थी। हैवलॉक कुछ समझा रहा था। नाना साहब को आशंका हुई। उनके मन में विचार उठा—यह

दुष्ट हाथ में तलवार लेकर क्या समझा रहा है। कोई नयी योजना बना रहा होगा ?

वास्तव में नाना साहब की आशंका ठीक थी। हैवलॉक को नाना साहब की व्यूह-रचना की जानकारी हो गयी थी। उसके गुप्तचर रात से ही सक्रिय थे। पहले तो उसे कोई खबर ही नहीं मिल पायी। न नाना साहब की, न सेना की। वह रातभर परेशान रहा। तड़के पता लगा— नाना साहब आ गये हैं। व्यूह-रचना कर रहे हैं। इस व्यूह-रचना के समाचार से वह आश्चर्य में पड़ गया। मैदानेजंग में उसने लम्बी उम्र गुजारी थी। हैंवलॉक रण-नीति का पण्डित था। मगर अब उसे पता लगा कि नाना उससे भी बड़ा आचार्य है। फलस्वरूप उसके समक्ष एक गम्भीर समस्या आ गयी। वह समझ नहीं पा रहा था कि आक्रमण किस ओर से करें। सोचते-सोचते सहसा उसका चेहरा चमक उठा। एक नयी युक्ति समझ में आ गयी थी। वह अपने सैनिकों को वही समझा रहा था।

सूरज मध्य आकाश में था। क्रांतिकारियों में अचानक खलबली-सी मच गयी। बायीं ओर से अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया था। उनका यह आक्रमण बहुत ही सुनियोजित एवं जोरदार था। उसे रोकने के लिए नाना साहब की तोपें आग उगलने लगीं। अंग्रेजी तोपें अभी तक नहीं आयी थीं। जब तक वे आवें-आवें, क्रांतिकारियों की तोपों ने धूम मचा दी। प्रलय के दृश्य दिखायी पड़ने लगे। तोप के गोलों के साथ रुंड-मुंड कट-कर आकाश में उछलने लगे। अंग्रेजी सेना धराशायी होने लगी। नाना साहब का घोड़ा नाच उठा। वे सबको प्रोत्साहित करने लगे।

"हर-हर महादेव !"

संपूर्ण सेना एक स्वर से चिल्ला उठी। नाना साहब के प्रोत्साहन देने पर सैनिकों का उत्साह द्विगुणित हो गया। वे अपनी तोपों के साथ आगे बढ़े।

"नाना साहब की जय हो !"

आकाश गूंज उठा। रणक्षेत्र में धमाचौकड़ी मच गयी। नाना साहव ने अपने घोड़े को एड़ लगायी। वह हिनहिनाता हुआ उछला और सैनिकों की दूसरी पंक्ति में समा गया। उसके दुग्धोपम श्वेत शरीर पर पड़े हुए खून के छींटे ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो चन्द्रिकामण्डित शुभ्र गगन पर सहस्त्रों मंगल तारे एक साथ उदित हो आये हैं। वह दूसरी पंक्ति से उछलकर तीसरी में पहुँचा।

"हर-हर महादेव!" का गगनभेदी स्वर फिर गूंज उठा। क्रांतिकारियों की सेना और आगे वढ़ी। हैवलॉक घवड़ा उठा। मुसीवत का समय था। पर, उसने साहस से काम लिया। विद्रोहियों के वढ़ाव से उसका खून खौल उठा। वह प्राण हथेली पर रख, आगे वढ़ा। सामने हायलण्डर सैनिक थे। उसने उनको ललकारा। सैनिकों का जोश वढ़ा। हैवलॉक उन्हें चीरता हुआ आगे निकल गया। उसके इस साहस से सैनिक भी आगे वढ़े। तोपें, जहाँ से आग उगल रही थीं, वे उसी ओर वढ़े। सब-के-सब टूट पड़े। तोपें आग उगलती रहीं। हैवलॉक गोलों की उन वौछारों में आगे वढ़ता ही गया। उसे न आहत सैनिकों की परवाह थी, न गोलों की चिन्ता! वह युद्धान्ध हो मृत्यु को चुनौती दे रहा था और सैनिकों को ललकारता हुआ निर्भीकता से आगे वढ़ रहा था। सैनिक भी प्राणों पर खेलने लगे। हैंवलॉक अब विद्रोहियों की सेना के निकट था।

अंग्रेजी फौजों की यह दशा देख, क्रांतिकारियों की सेना घवड़ा उठी। इस संगठित एवं आश्चर्यजनक आक्रमण के समक्ष उनकी एक न चली। वे छिन्न-भिन्न होने लगे। अव हैवलॉक की सैनाएँ दो भागों में विभाजित हो गयीं। उन्होंने आमने-सामने लड़ना छोड़कर दायें-वायें दोनों ओर से क्रांतिकारियों को धर दबोचा। दोनों सेनाएँ एकाकर हो गयीं। 'हर-हर महादेव' तथा 'नाना साहव की जय' से युद्धस्थल काँप-काँप उठता था। रक्त के फव्वारे छूट रहे थे। आहतों की कराह, तोपों की गरज, उछलते-रुण्ड-मुण्डों से एक अजीव दृश्य उपस्थित हो गया था। लगता था, तांडव-नर्तन हो रहा है। रणचण्डी उछल-उछलकर अपना खप्पर भर रही है। न

तो कोई किसी की ओर देखनेवाला था, न सहायता करनेवाला। दोनों सेनाएँ एक दूसरी से इस प्रकार उलझ गयी थीं कि अपना-पराया नहीं सूझ रहा था। न अंग्रेजी सेना हटने का नाम लेती, न क्रांतिकारी सेना। घायल सिपाही उठ-उठकर लड़ने का प्रयत्न करते। गिर जाते। फिर उठते। गिरते ही घोड़ों की टापें, तोपों के गोलें एवं रक्त-रंजित तलवारें उन्हें पुनः धराशायी कर देतीं। इस अन्धा-धुन्ध रण में न कहीं नाना साहब का पता था, न हैवलॉक का। कभी-कभी जयघोष अवश्य धरती कँपा देते थे।

इसी समय नाना साहब पुनः प्रकट हो गये। उन्होंने अपने घोड़े को एड़ लगायी। घोड़ा उछल गया। वह सैनिक-समूह को चीरता-फाड़ता, राह बनाता हुआ तीर की तरह आगे बढ़ा।

"नाना साहब की जय हो!"

क्रांतिकारी सेना ने गुरु-गम्भीर गर्जन किया।

नाना साहब ने पुनः ललकारा। स्थिति विषम थी। दोनों ओर से अंग्रेजी सेनाएँ उन्हें दबा रही थीं। बीच में क्रांतिकारियों की सेना पिस रही थी। हैवलॉक प्रकट हो गया। वह घूम-घूमकर सैनिकों को प्रोत्साहित करने लगा। उसका संपूर्ण शरीर रक्त से लथपथ था। चेहरा विकृत-सा हो गया था। प्रोत्साहन पाते ही अंग्रेजी सेना ने पुनः एक धक्का दिया। क्रांतिकारियों के पैर उखड़ गये। वे पीछे हटे। साँझ हो रही थी। दिनभर युद्ध करते-करते किसी को अपनी स्थिति का ज्ञान न था। उनके पैर उखड़ते ही अंग्रेजी सेना दूने उत्साह से आगे बढ़ी। उसने कांतिकारियों को धर दबोचा। भगदड़ मच गयी। मैदान साफ हो गया।

अंग्रेजी सेना के जयघोष के साथ-साथ बिगुल बज उठे।

लहू से लथपथ हैवलॉक ने बढ़कर यूनियन जैक फहरा दिया। जिस कानपुर पर नाना साहब ने प्राणों पर खेलकर केशरिया झंडा फहराया था, वहीं यूनियन जैक मस्ती से झूमने लगा। अंग्रेजों की विजय का समाचार सुनते ही चारों ओर हाहाकार मच गया। सब की आशाओं पर

पानी फिर गया। ह्वीलर के सपने, हैवलॉक ने पूरे कर दिये थे। वह विजय से उन्मत्त, अपनी सेना को बधाई देते हुए चिल्लाया—"नाना कहाँ है ?" किन्तु नाना वहाँ कहाँ ? वे तो बिठूर पहुँच चुके थे।

कानपुर की इस पराजय से विद्रोही निराश हो गये। नाना साहब के दिव्य ललाट पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आयीं। इस समय उनके पास पाँच सहस्र सैनिक तथा पैतालिस-तोपें थीं। उन्होंने वहाँ रुकना खतरे से खाली न समझा। बिठूर पहुँचकर उन्होंने अपने राजकोष तथा परिवार समेत बाहर जाने की तैयारी कीं। वे सेना समेत किसी निरापद स्थान पर पहुँचकर अंग्रेजों से पुनः युद्ध करना चाहते थे। रातोंरात तैयारी पूरी की गयी। प्रभात होने से पूर्व ही वे बिठूर छोड़ देना चाहते थे। अंग्रेजों को अभी इस बात की खबर नहीं थी कि नाना कहाँ है। जब तैयारी पूरी हो चुकी, तो नाना साहब का कलेजा 'धक्' से करके रह गया। उनकी प्यारी बेटी मैंना अभी कानपुर में ही थी। उसका स्मरण आते ही उनके नेत्र सजल हो आये। मैना के कोमल कंधों पर उन्होंने उत्तरदायित्व का गुरुतर भार सौंपा था।

"क्या मैं मैना को छोड़कर चला जाऊँ ?

"नहीं ! "नाना साहब सोचने लगे—बड़ी विषम परिस्थिति आ गयी हैं। क्या करूँ ? मैंना किस प्रकार मिले ! पता नहीं ये पापी मेरी बेटी की क्या दुर्दशा करें ! मैं उसे छोड़कर नहीं जाऊँगा। उन्होंने पुकारा, "माधव सिंह !"

माधव सिंह, जो जाने की तैयारी में व्यस्त था, सामान छोड़कर उनकी ओर दौड़ा। हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। नाना साहब ने गीले नेत्रों से उसकी ओर देखा। माधव सिंह की पलकें झुक गयीं। नाना साहब ने दुःखी स्वर में कहा, "माधव !"

"आज्ञा श्रीमंत !"

नाना साहब चुप हो गये। उनके कण्ठ से बोल ही नहीं निकल रहे थे। बड़ी कठिनाई से उन्होंने कहा, "माधव ! क्या मैना को छोड़कर चले चलें।"

माधव चुप रहा। मैंना का नाम सुनते ही उसकी छाती धड़क उठी। उसे उसके हास्य-विनोद याद हो आये। रोजी को दुल्हन बनाकर उसने कैसा उपहास किया था। माधव सोचता रहा, सोचता रहा।

"क्या सोच रहे हो माधव !" नाना साहब ने दुःखी स्वर में पूछा।

"श्रीमंत !" माधव सिंह ने कहा, "मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। आप आदेश दें !"

"मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है।" नाना साहब ने कहा, "तुम तत्काल ही कानपुर जाकर उसे प्रभात होने के पूर्व ही निकाल लाओ !"

"आज्ञा शिरोधार्य है !" माधव ने शीश झुकाया, "आशीर्वाद दें !"

" भगवान तुम्हारी रक्षा करे !" नाना साहब ने बड़ी कठिनाई से कहा।

माधव सिंह चुपचाप कक्ष के बाहर निकल गया। बाहर आकर उसने सोचा—घोड़ा ले जाऊँ अथवा नहीं। घोड़े पर जाने में खतरा है।

"होगा !" माधव ने अपने आप उत्तर दिया—"आगे ले जाकर कहीं छोड़ दूँगा। वापसी में ले लूँगा, अन्यथा प्रभात होने के पूर्व आ न सकूँगा। वह घोड़े की पीठ पर उछलकर चढ़ गया। घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

माधव सिंह के जाने के पश्चात् नाना साहब रातभर चिन्तातुर रहे। उसकी प्रतीक्षा करते रहे, विचारों में डूबते-उतराते रहे। पुत्री-रूप रह-रहकर सामने झूमता रहा। उसकी बातें, उसकी उन्मुक्त हँसी, निष्कपट व्यवहार और देश-भक्ति! उसके सभी गुण उनको रह-रहकर स्मरण आते रहे। वे सोच रहे थे—पता नहीं, माधव वहाँ तक सकुशल पहुँच पावे या नहीं। कहीं हैवलॉक के सैनिक उसे पकड़ न लें। उस बेचारे की दुर्दशा न करें। हो सकता है हत्या भी कर दें। उसकी लाश को चौकी पर टंगवा दें। और अगर मैना ही पकड़ ली गयी हो, तब ?

नाना साहब उठ खड़े हुए। कक्ष में टहलने लगे। धीरे-धीरे रात बीतने लगी। माधव सिंह नहीं लौटा। किसी प्रकार का खटका होते ही नाना

साहब चिल्ला उठते—"माधव सिंह !" किन्तु वहाँ माधव कहाँ ? वे चुप हो जाते । सोचने लगते—अब पहुँच गया होगा । आता ही होगा । फिर खटका होता, वे चौंककर पुकारते—"माधव !"

नाना साहब पूरी रात माधव की प्रतीक्षा करते रहे । बारंबार चौंकते रहे । उठ-उठकर झाँकते रहे । सोचते रहे—यदि पकड़ न गया होगा, तो अब पहुँच गया होगा । मैना उसके साथ आती होगी । मैना के साथ ही कहीं पकड़ा गया तब ? सोचते-सोचते उनकी विचारधारा ने पल्टा खाया—तो गजब हो जायेगा । हे परमेश्वर ! उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर शीश झुकाया—हे भोलानाथ !

सामने मंदिरों के कंगूरे चमचमा रहे थे । नाना साहब विह्वल होकर चिल्ला उठे—"कौन-सा दिन दिखा दिया भोले बाबा ! मुझे अपने प्राणों का मोह नहीं है । किन्तु वह बालिका ! आह ! उन्होंने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा—"मैना बेटी ! तुम्हारा पिता भूखा है, आज उसके पास बैठकर भोजन न करोगी ! तुम कहाँ हो ? कैसे मिलोगी ? एक बार तुम्हें जी भर-कर देख लेता । कुछ भी हो ! तुम वीरांगना हो ! पूर्वजों के खून को लाज रखने में समर्थ हो । मैं व्यर्थ ही तुम्हारी चिन्ता कर रहा हूँ ।" सोचते-सोचते उनके सजल नेत्र बरसने लगे । उन्हें बार-बार मैना की याद आती रही । हृदय में वात्सल्य उमड़ता रहा । पर करते क्या ? विवशता थी ।

धीरे-धीरे रात्रि का अन्तिम प्रहर आ गया । माधव सिंह अभी तक लौटा नहीं था । नाना साहब से न रहा गया । उन्होंने उसका पता लगाने को यत्र-तत्र सैनिक भेजे । कहीं कुछ भी पता न लग सका । सैनिक लौट आये ।

उसी समय गुप्तचरों ने सूचना दी—"कल अंग्रेज सैनिक बिठूर पर आक्रमण करेंगे !"

यह समाचार पाते ही नाना साहब असमंजस में पड़ गये । मातृभूमि के समक्ष उन्होने बेटी की परवाह न की । वे विवश होकर राजकोष, महिलाओं तथा अन्य आवश्यक सामान समेत चल पड़े । चलते समय

उन्होंने बिठूर की धरती को प्रणाम किया। मंदिरों के दरवाजों में वन्द शिव की प्रतिमा को शीश झुकाया। जननी जन्मभूमि की रज माथे से लगायी।

सामने पुण्यसलिला भागीरथी की अजस्र धारा प्रवाहित हो रही थी। उन्होंने उस पतितपावनी से हाथ जोड़कर विनय की–"हे तरण-तारणी ! माँ सुरसरि ! मैं जा रहा हूँ। विदा दो माँ ! तुम्हारा यह पावन जल मुझे अब न मिल सकेगा। मिलेगा भी, तो उसमें बिठूर की धरती की गन्ध न होगी। मैं अपनी प्रिय पुत्री को तुम्हारे भरोसे छोड़े जा रहा हूँ। यदि उसे कहीं स्थान न मिले, तो भगवती ! तुम उसे अपने पवित्र आँचल में स्थान दे देना। नाना तुम्हारा कृतज्ञ रहेगा।........।"

कहते-कहते नाना के नेत्रों के खारे आँसू गंगा की धारा में टपक पड़े– टप् ! टप् !! और धीरे से वन्दना के बोल फूटे—"मनोहरोत्तुंग चलतरंग। गंगा ममांगान्यमली करोतु !"

गंगा का शांत प्रवाह उद्वेलित हो उठा—

लहरों ने भीषण हाहाकार किया।

नाना साहब बोझिल हृदय एवं अश्रुप्लावित आँखों से गंगा-पार हो गये। उन्होंने फिर मुड़कर पीछे की ओर नहीं देखा। गंगा की लहरें वैसे ही हाहाकार करती रहीं। नौका उछलती रही। पर नाना तो जैसे वीत-राग बन गये थे। सामने अपरिचित देश था। पीछे परिचित बिठूर। और चारों ओर खूनी इतिहास बिखरा पड़ा था।

● ● ●

१३

रात्रि में अचानक विस्फोट की आवाज सुनकर मैना चौंक पड़ी। अभी तक वह सोयी न थी। बेगम के जाने के बाद वह उधेड़बुन में पड़ी रही। रह-रहकर उसका हृदय आशंका से भर उठता था। बेगम के एक-एक शब्द याद आ रहे थे। "क्या सचमुच हम काले सांपों को दूध पिला रहे हैं ?" मैना ने अपने-आप प्रश्न किया। बेगम का क्रोधपूर्ण आरक्त मुखमंडल उसके नयनों में नाच उठा। मानो वह कह रही है—"मैना रानी ! अगर किले के भीतर रहकर बाहर खबर भेजने वाले बेगुनाह हैं, खुफियागीरी करनेवाले 'निरदोस' हैं, चिट्ठियाँ भेजनेवाले निरदोस हैं, हमारी फौजों को शिकस्त देने का साज़िश रचनेवाले बेगुनाह हैं, तो मैं पूछती हूँ—फिर गुनहगार कौन है ? मैं या तुम ?"

"गुनहगार तो यही हैं।" मैना ने स्वगत उत्तर दिया—"किन्तु इन्हें दंड देनेवाले हम कौन हैं, बेगम कौन है ? श्रीमंत साहब जो उचित समझेंगे, करेंगे ! किन्तु बेगम ! उतावली हो रही है उतावली ! अज़ीजन के पास भी हो आयी है। पता नहीं, वह क्या करना चाहती है ? सब को एक साथ आग में भूनना चाहती है।"

"नहीं !" मैना के विचारों ने पल्टा खाया। वह ऐसा नहीं करेगी। शपथ खाकर गयी है। उसने विश्वास दिलाया है—"मैं तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ कुछ न करूँगी। फिर भी........।"

यह 'फिर भी' क्या है ? मैना ने अपने-आप प्रश्न किया।

उसी समय विस्फोट का धड़ाका हुआ। मैना समझ गयी—"फिर भी' यही है। वह बौखलायी-सी कक्ष के बाहर निकल आयी। महिला बंदीगृह की ओर झपटी। धड़ाका वहीं हुआ था। कुछ परिचारिकाएँ उसके पीछे-पीछे चल पड़ीं। मैना ने आगे बढ़कर पुकारा—"बेगम !"

कोई आवाज़ नहीं आयी । मैना ने धड़कते हृदय से वंदीगृह का द्वार खोला । वहाँ का दृश्य देखते ही वह सन्न रह गयी । आँगन में कुछ स्त्री-बच्चों के शव क्षत-विक्षत पड़े थे, जिनमें अंग्रेज महिलाओं के अतिरिक्त कुछ परिचारिकाएँ भी हैं । आँगन में एक विषैली गैस-सा धुआँ छाया हुआ है । दुर्ग की दीवारों में दरार-सी पड़ गयी है । मैना दो क्षणों तक चकित आँखों से यह सब देखती रही । वह धीरे-धीरे आगे वढ़ी । किसी का हाथ उड़ गया था, तो किसी का पैर ! किसी का पेट फट गया था, तो किसी का सिर । उसने ध्यान से देखा, सभी के शरीर विकृत हो गये थे । बंदीगृह की सेविकाओं में एक भी न वची थीं । गर्मी से व्याकुल होकर जितनी आँगन में थीं, सभी स्वाहा हो गयी थीं ।

उसी समय उसका ध्यान दूसरी ओर गया । उसे कुछ आहट-सी सुनायी पड़ी । वह आगे वढ़ी । सामने कोठरी थी । उसने झाँककर देखा—कुछ अंग्रेज महिलाएँ एवं बच्चे दुबके खड़े हैं । उसने एक संतोष की साँस ली । उसे देखते ही रोजी आगे बढ़ी । वह इतनी घबरायी थी कि बोल ही नहीं फूट रहे थे । डरती-डरती वह मैना की ओर बढ़ी । मैना ने झपटकर उसे छाती से लगा लिया । रोजी के हाथ-पैर अब भी काँप रहे थे । चेतनाशक्ति क्षीण हो चुकी थी । वह मैना से लिपट गयी । अंतस् का सहज स्नेह एवं गरमाहट पाकर रोजी को कुछ शांति मिली । उसकी साँसें तेजी से चलने लगीं ।

"रोजी !" मैना ने उसके रेशमी बालों पर हाथ फेरते हुए पूछा, "यह क्या हुआ ?"

रोजी ने अपना सिर ऊपर उठाया । भोली आँखों से मैना की ओर निहारा और पुनः अपना मुख उसके आँचल में छिपा लिया । मैना उसे छाती से लगाये रही । उसकी पीठ तथा बालों पर हाथ फेरती रही । आज उसे फिरंगी युवती से छू जाने का न भय था, न स्पर्श-दोष में स्नान की आवश्यकता । मानवता का सहज भाव उसके अंतस् में उमड़ आया था । उसने दोनों हाथों से पकड़कर रोजी का सिर ऊपर उठाया । रोजी

ने मैना की ओर निहारा। उसके चेहरे पर ममता के पावन भाव उमड़ रहे थे। रोजी सिसक पड़ी।

"रोजी !" मैनो ने उसे खींचते हुए कहा—"मेरे साथ बाहर हवा में चलो। यहाँ तो दम घुट रहा है।"

रोजी बाहर निकल आयी। उसके साथ अन्य अंग्रेज बच्चे एवं स्त्रियाँ भी बाहर आ गयीं। बाहर निकलते ही मैना ने देखा–छठी रेजीमेंट के सैनिक खड़े थे। मैना को देखते ही वे एक ओर हट गये। वह सब के साथ बाहर निकली। लाशों को देखती हुई आगे बढ़ी। सैनिकों से वह कुछ बोली नहीं। चुपचाप गंभीर मुद्रा में बंदीगृह के बाहर निकल गयी। आगे-आगे वह तथा पीछे-पीछे बची हुई महिलाओं का झुण्ड ! बाहर निकलकर मैना ने धीरे से एक सेविका से कहा, "छठी रेजीमेंट के सैनिकों से कह दे कि इन लाशों को यहाँ से हटवा दें !"

सेविका आदेश पाते ही लौट गयी। उसने सैनिकों को मैना की आज्ञा बतायी।

"कहाँ फेंकें ?" एक सैनिक ने दूसरे से पूछा, "कल तक तो यह यहाँ दुर्गन्धि पैदा कर देंगीं। संपूर्ण दुर्ग में बीमारी फैल जाएगी।"

"कछार में फेंक दो !" दूसरे ने उत्तर दिया।

"नहीं !" तीसरे ने कहा, "वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है। सामने जो सूखा कुआँ पड़ा हैं, उसी में फेंकवाकर ऊपर से मिट्टी डलवा दो। इन लाशों को जो भी पशु खाएगा, वह मर जाएगा। इनमें विषैली गैस का प्रभाव है। वातावरण दूपित होने के पूर्व ही इन्हें पटवा देना अच्छा है।"

बात सब की समझ में आ गयी। सभी लाशें कुएँ में फेंक दी गयीं। वहाँ केवल खून-ही-खून शेष रह गया था। खून की भी सफाई होने जा रही थी कि उसी समय नाना साहब का आदेश मिला, "सभी सेनाएँ नगर के दक्षिणी भाग पर आ जाएँ।"

दमामा बज उठा । जो सैनिक जहाँ था, वहीं से चल पड़ा । थोड़ी देर में पूरी फौज एकत्रित हो गयी । सेनापति ने आदेश पढ़ा । नाना साहब का जयनाद करती हुई सेना कूच कर गयी ।

सेविका जब लौटकर कक्ष में पहुँची, तो उसने देखा—मैना दुर्ग के प्रांगण में अंग्रेज महिलाओं एवं बच्चों को लिये बैठी है । उन्हें समझा रहा है—"रोजी ! तुम घबड़ाओ नहीं ! मेरे अनजाने में किसी बदमाश ने यह सब कर डाला है । मैं सबेरा होते ही उसका पता लगवाऊँगी । उसे दण्ड दिलवाऊँगी । मुझे इस काण्ड पर दुःख है ।

"हम यहाँ नहीं रहना चाहटा !" रोजी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "सिस्टर ! बडमास हमें मार डालेगा । हमें कहीं दूसरी जगह भेज डो !"

"रोजी !" मैना ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "मेरे जीते-जी तुम्हारा कोई बाल बाँका नहीं कर सकता । इसीलिए मैं तुम्हें अपने दुर्ग के भीतर लायी हूँ । यहाँ कोई नहीं आ सकता । विश्वास करो । मैं श्रीमंत साहब के पास अभी सूचना भेजती हूँ ।"

मैना की बातों से धीरे-धीरे रोजी को विश्वास हुआ । फिर भी उसकी घबड़ाहट नहीं दूर हुई । मैना उसे समझाती रही, "रोजी ! हम सब मनुष्य हैं । एक मनुष्य का धर्म है दूसरे मनुष्य की रक्षा करना । देश-काल की सीमाओं की संकीर्णता को छोड़ो । मानवता के पुजारी को वे नहीं बाँध सकती । जहाँ मानवता है, वहीं मनुष्य की पूजा होती है । सब का देश अलग-अलग है, तो क्या हुआ ? हम सभी मनुष्य हैं । आज परिस्थितियों ने हमें तुमसे अलग कर दिया है । शासन एवं सत्ता के वश में अंग्रेज मानवता भूल गये हैं । पर सोचो, इन स्वार्थों से अलग होते ही हम सब एक हैं । हम सब उस आग के गोले की तरह हैं, जो शतधा फट गया है, जिसकी चिनगारियाँ छिटक-छिटककर बिखर गयी हैं । कोई भारतवर्ष में गिरी है, तो कोई विलायत में । कोई यूनान में गिरी है, कोई मिस्र में ! किन्तु, यह सब एक ही आग के गोले के टुकड़े हैं । कभी सब एक थे । आज अलग-अलग

हैं। यह विषमता अधिक दिनों तक नहीं रह सकेगी। कभी सब पुनः एक होगी। भेद केवल देश का है, रंग का हैं, शरीर की रचना का है, आत्मा का नहीं। सब की आत्मा एक है। हम तुम एक हैं। दोनों की रगों में मानव का खून प्रवाहित है। दोनों मनुष्य हैं। तुम घवड़ाती क्यों हो? मुझे अपने उत्तरदायित्व का पूर्ण ध्यान है। कोई तुम्हारी छाया तक नहीं छू सकता। मुझ पर विश्वास करो। तुम जहाँ कहोगी, तुम्हें पहुँचा दिया जाएगा। किन्तु श्रीमंत साहब की आज्ञा से! हमलोग तुम्हारा अहित नहीं चाहते। अन्यथा तुम इतने दिनों तक यहाँ रह ही नहीं सकती थी। यदि हमें तुम्हें मारना ही होता, तो अब तक काम तमाम हो गया होता। जो कुछ हुआ है, वह अनजाने में हो गया है। तुम घवड़ाओ नहीं। शांति से रहो। मैं अपने प्राणों की वाजी लगाकर भी तुम्हारी रक्षा करूँगी। तुम विश्वास करो। रोजी! तुम विश्वास करो। कहते-कहते मैना का गला भर आया। उसने रोजी को समेटकर वाँहों में भर लिया। रोजी सिसक उठी।

उसी समय एक सेविका ने नाना साहब की पराजय की सूचना मैना को दी।

दिन चढ़ चुका था। मैना कभी वेगम का स्मरण करती, कभी अज़ीजन का। कभी रोजी का मुख देखती, कभी बच्चों का। पराजय के समाचार से उसका मस्तिष्क चेतनाहीन हो गया था।

मैना की आत्मा रह-रहकर काँप उठती। अब पता नहीं क्या हो? कौन-सा दिन देखना पड़े? सोचती-सोचती वह उदास हो गयी। आँगन-वाला तुलसी का बिरवा वायु में डोल रहा था। उसके पास ही बुझा हुआ दीपक पड़ा था। मैना ने उस दीपक की ओर निहारा।

भारतीयों का जीवन—दीप!

मैना काँप उठी।

दीपक वायु के झोंकों में बुझ गया है। वह उसे बचा न सकी। उसके नेत्र छलछला आये। उसने आँचल के छोर से भींगी पलकें पोंछकर रोजी की ओर निहारा। वह उसे विस्मय से देख रही थी।

रोजी की छाती धड़क उठी।

"हे इश्वर !" मैना ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर सामने की ओर देखा, रोजी रो रही थी। मैना ने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया।

वायु का एक तेज झोंका आया। दोनों के शरीर सिहर उठे।

"सिस्टर !" रोजी ने स्नेह से कहा।

"रोजी !" मैना धीरे से बोली।

दोनों चुप हो गयी। दोनों के अंतस् में भावों का सिन्धु उमड़ रहा था, किन्तु बोल नहीं फूट सके। युद्ध के विषय में मैना ने रोजी से कुछ भी बताना उचित नहीं समझा। बीबीघर हत्याकाण्ड की चर्चा नगर का प्रमुख विषय बनी थी। मैना चिंतित मुद्रा में रोजी के पास बैठी थी। तभी बुर्के में लिपटी बेगम ने बंदीगृह में प्रवेश किया। आँगन खून से भरा था। किसी विस्फोटक पदार्थ की गंध आ रही थी। बेगम का चेहरा पीला पड़ गया। उसका परिश्रम व्यर्थ गया। करीम अली के वैज्ञानिक लड़के को उसने रात-भर ढूँढ़ा, मगर वह मिला नहीं, मिलते-मिलते मिला भी तो उसकी लाश ! कछार में जहाँ से विस्फोट किया गया था, वहीं उसकी लाश पड़ी थी। बेगम और अजीजन दोनों समझ गयी—धोखा हो गया है। वे लौट आयीं। सरवर खाँ रातभर कसाइयों के मुहल्ले का चक्कर लगाता रहा। बेगम बंदीगृह में थोड़ी देर तक खड़ी रही। मैना उससे कुछ बोली नहीं। बेगम एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर बाहर निकल गयी। उसका हृदय आत्म-ग्लानि से भर गया था।

● ● ●

१४

अंग्रेजी सेनाएँ विजय के पश्चात् कानपुर में आतंक मचाये थी। संपूर्ण नगर भयभीत, आंतकित एवं घवड़ाया हुआ था। सभी के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। पता नहीं अंग्रेज कौन-सी दुर्दशा करें ? अधिकांश व्यक्ति अपने मकानों को छोड़कर रातों-रात गायब हो गये थे। कुछ दृढ़प्रतिज्ञ क्रांतिकारी यत्र-तत्र छिपे थे। कुछ नाना साहब की खोज में नगर से बाहर चले गये थे। कुछ कछार में बैठे थे। नगर के दक्षिणी भाग पर, जहाँ युद्ध हुआ था, लाशों पर हजारों गिद्ध, कौए मँड़रा रहे थे। भूखे श्वान एवं शृगालों के झुण्ड आपस में लड़-झगड़ रहे थे। कोई किसी की ठठरी घसीट रहा था तो कोई किसी की आँतें पंजों से खोद-खोदकर खा रहा था। कोई किसी की खोपड़ी लिये भागा जा रहा था तो कोई किसी का पेट फाड़ रहा था। कोई किसी की आँखें निकाल रहा था, तो कोई खून से लथपथ तोप के गोलों को खोपड़ी समझकर अपने दाँत तोड़ रहा था। कमजोर कुत्तों की निकट जाने की हिम्मत न पड़ती थी। वे भूमि में पड़े शोणित को जीभ निकाल-निकालकर चाट रहे थे। बड़ा ही वीभत्स दृश्य था।

हैवलॉक को जितनी प्रसन्नता कानपुर-विजय पर थी, उससे अधिक चिन्ता भी बीबीघर में बन्द अंग्रेज पुरुष, महिलाओं एवं बच्चों की थी। वह उन्हीं को मुक्त कराने कानपुर आया था। पता नहीं बन्दीगृह से कितनी गुप्त सूचनाएँ इन बंदियों ने दी थी।

"यदि ये सूचनाएँ न मिलतीं, तब ?" हैवलॉक बैठा सोच रहा था—यह दिन देखने को न मिलता। गढ़ी का नक्शा ? कानपुर की जानकारी करानेवाला वह मानचित्र !" उसने अपनी जेब से दोनों मानचित्रों को बाहर निकाला। उन्हें ध्यान से देखते हुए सोचने लगा—कितनी चतुरता

से ये बनाये गये हैं। कहीं भी कोई त्रुटि नहीं होने पायी। सबसे अधिक चतुरता तो इन्हें भेजने में की गयी है।

सोचते-सोचते उसका मुखमंडल चमक उठा। वह उठकर खड़ा हो गया और बीबीघर जाने के विषय में सोचने लगा। वहाँ सब बन्द होंगे। विजय का समाचार सुनते ही पुलक उठेंगे। प्रसन्नता से नाचने लगेंगे। मैं जाते ही सबका आभार प्रदर्शन करूँगा। गुलदस्ते भेंट करूँगा। पुरस्कार दूँगा। धन्यवाद एवं कृतज्ञता की बौछार से सब को सराबोर कर दूँगा। कितने प्रसन्न होंगे सब ? किसी को अपना पिता मिल जाएगा, कोई अपने भाई को पा जाएगा। कोई अपने बच्चे को छाती से चिपटाएगा। कोई अपने प्रेमी को....।" सोचता हुआ हैवलॉक विहँस पड़ा। वह अपने शिविर से बाहर निकल आया। रेनॉड के शिविर की ओर चला। रेनॉड रातभर रोजी की चिन्ता में परेशान रहा। उसका वश चलता तो वह रात में ही बीबीघर चला जाता। पर, विवशता थी। भय था। कहीं विद्रोहियों की सेना न छिपी हो। बेचैनी से किसी प्रकार बेचारे की रात कटी। अपने शिविर के द्वार पर हैवलॉक को देख, वह बाहर निकला।

"गुड मार्निंग, सर !"

"गुड मार्निंग !" हैवलॉक तथा रेनॉड, दोनों के हाथ एक दूसरे के हाथो में आबद्ध हो गये।

"क्या हो रहा है ? हैवलॉक ने प्रश्न किया।

"कुछ नहीं !" रेनॉड ने कहा—"सेना को आदेश देने जा रहा था कि वह नगर लूट लें !"

इस उत्तर से हैवलॉक को कोई प्रसन्नता नहीं हुई। बोला, "यह तो होगा ही, पहले बीबीघर के कैदियों को तो बाहर निकालो।"

रेनॉड को मुँहमांगी मुराद मिल गयीं। वह यही कहना भी चाहता था। पर, कह न सका था। उसने तत्काल ही सेना को तैयार होने का आदेश दिया। सेना सजने लगी।

हैवलॉक, रेनॉड के साथ बीबीघर की ओर चला। नक्शा उसके पास था ही। इस समय नक्शा देखने की जरूरत नहीं पड़ी। राह बतानेवालों की कमी नहीं थी। सब-के-सब बीबीघर में पहुँचे। बन्दीगृह के द्वार बन्द थे। सेना ने द्वार तोड़कर रास्ता साफ किया। आगे-आगे हैवलॉक, उसके पीछे रेनॉड तथा बाद में सेना ने प्रवेश किया। हैवलॉक जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता हुआ आँगन में पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह चिल्ला उठा—"ओ माई गॉड ! यह क्या है ?"

रेनॉड झपटकर आगे आया।

दोनों ने एक साथ देखा—पूरा आँगन खून से सराबोर है। रक्त की गाढ़ी पर्त जमकर सूख गयी है। बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ पड़ गयी हैं। यह सब देखते-देखते दोनों की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। अधिक कुछ भी न देख सके। हैवलॉक ने सहमी आँखों से रेनॉड की ओर निहारा। उनके नयन छलछला आये थे। उसने भींगी आँखें ऊपर उठाकर हैवलॉक की ओर देखा। दोनों काँप उठे। चुपचाप बाहर निकल आये।

हैवलॉक बाहर आकर थोड़ी देर तक खड़ा-खड़ा सोचता रहा। विसूरता रहा, पश्चात्ताप करता रहा। उसे ऐसी आशा न थी। वह समझ गया कि यह सब उसके ही कुकृत्यों का दुष्परिणाम है। इलाहाबाद और फतेहपुर में उसने जो कुछ किया है, उसी का बदला है। फिर भी रह-रहकर उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता था। सिर चकरा उठता था। वह अधिक देर तक खड़ा न रह सका। बैठ गया। उसे लगा—कानपुर की विजय, पराजय में बदल गयी है। प्रसन्नता दुःख में परिवर्तित हो गयी है। आशा, निराशा में परिणत हो गयी है। वह विक्षिप्त-सा बैठा रहा। आश्वस्त होते ही चिल्लाया—"रेनॉड !"

रेनॉड जो स्वयं घनीभूत पीड़ा से पीड़ित था, चौंक पड़ा। अदब से हैवलॉक के सामने खड़ा हो गया।

"रेनॉड !" हैवलॉक पुनः चिल्लाया।

"आज्ञा, श्रीमन् !" रेनॉड ने दुःखी मन से पूछा।

सेना को आदेश दे दो कि वह पूरा शहर लूट ले। क्रांतिकारियों को गोली से उड़ा दे। नगर के सभी ....।" कहते-कहते वह रुक गया, फिर कुछ सोचता हुआ बोला।

"नाना ब्राह्मण है न ?"

"हाँ, श्रीमन्" रेनॉड ने उत्तर दिया।

"ठीक ! ठीक !!" हैवलॉक बोला, "नगर के सभी ब्राह्मणों को पकड़-पकड़कर मेरे पास लाया जाए, मैं भूल रहा था।"

आदेश पाते ही सेना पिल पड़ी। मारती-पीटती, लूटती-फूँकती, इज्जत-अस्मत पर आक्रमण करती वह कानपुर नगर को रौंदने लगी। जिसके माथे पर चन्दन-तिलक दिखायी पड़ता, वही पकड़ लिया जाता। चाहे वह ब्राह्मण हो अथवा शूद्र। सेना की दृष्टि में सभी चंदन लगानेवाले ब्राह्मण थे। नगर के ब्राह्मणों, पुजारियों एवं पुरोहितों को पकड़-पकड़कर हैवलॉक के सामने लाया जाने लगा। थोड़ी देर में ब्राह्मणों का एक झुण्ड एकत्रित हो गया।

हैवलॉक ने अपनी खूनी आँखों से एक बार इन बलि-पशुओं की ओर देखा। सभी स्तंमित, भयभीत एवं घबड़ाये-से खड़े थे। उसने क्रोध से कहा, "उतारो इनके कपड़े !"

सैनिकों ने बढ़कर कपड़े उतार लिये।

सबों की पिटाई हुई। संपूर्ण शिविर में चिल्ल-पों मच गयी। जी-भर पिटवा लेने के पश्चात् हैवलॉक चिल्लाया—"इन्हें मेरे साथ लाओ !"

सैनिकों के संरक्षण में सब-के-सब उसके पीछे-पीछे चल पड़े। आगे-आगे वह, पीछे-पीछे ब्राह्मणों का झुण्ड। वह सब को लेकर बीबीघर में घुसा।

उसी समय एक सैनिक ने सूचना दी, "सब की लाशें कुएँ में पड़ी हैं।"

"कहाँ ?" हैवलॉक ने पूछा।

"थोड़ी दूर पर !" सैनिक बोला, "कुआँ लाशों से पट गया है।"

"अच्छा !" हैवलॉक ने कहा—"अभी देखता हूँ। पहले इनसे निपट लूँ !"

इतना कहकर उसने ब्राह्मणों की ओर निहारा।

ब्राह्मणों का समूह काँप उठा।

"चाटो इसे !" हैवलॉक चिल्लाया—"आँगन में जमी खून की पपड़ियों को जीभ से चाट-चाटकर साफ करो !"

इतना सुनते ही ब्राह्मणों की आतमा काँप उठी। उन्हें लगा—"यदि धरती फट जाती तो उसी में समा जाते।"

हैवलॉक गरज उठा—"चाटो इसे !"

ब्राह्मण समाज शीश झुकाये खड़ा रहा।

"चाटो इसे !" हैवलॉक चिल्लाया—" नाना ब्राह्मण था। उसने हमारे स्त्री-बच्चों का खून किया। यह वही खून है। मैं इस खून को ब्राह्मणों से चटवाकर साफ कराऊँगा। चाटो इसे ! निकालो जीभ !" हैवलॉक पागलों को भाँति उछल-उछलकर चिल्लाने लगा।

ब्राह्मण वर्ग टस-से-मस नहीं हुआ। पूर्ववत् खड़ा रहा।

"चाटो इसे ! चाटो इसे !! निकालो जीभ !!!" हैवलॉक चिल्लाया "—रेनॉड !"

रेनॉड झुण्ड से निकलकर सामने आया।

"पिटाई करो इनकी। कोड़े लगवाओ !"

"चटाख ! चटाख !!" कोड़े चटकने लगे। आदेश पाते ही सैनिकों के झुण्ड-के-झुण्ड निर्दोष ब्राह्मणों पर टूट पड़े। वे उन्हें पीटते जाते थे और चिल्लाते जाते थे—"चाटो इसे ! चाटो इसे !!"

"हे ईश्वर !" ब्राह्मणों का झुण्ड आर्त्त स्वर में चिल्लाया, "त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !!

"चटाख ! चटाख !!" कोड़े चटक रहे थे।

"हे दीनानाथ प्रभो—त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !!

"शिव हो ! शिव हो !!"

राम ! राम !! राम !!!

त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !!

ब्राह्मणों की इस दारुण पुकार में सैनिकों का स्वर—चाटो इसे ! निकालो जीभ !" डूबकर रह गया ।*

केवल 'त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !!' की आवाज सुनायी पड़ती रही ।

हैवलॉक बाहर निकल आया । सैनिकों ने आग लगा दी थी । काली-काली धूम्र शिखाएँ आकाश को छूने लगी थीं । जनरव एवं कोलाहल में संपूर्ण नगर डूब गया था । हैवलॉक कुछ सैनिकों के साथ कुएँ की ओर चला । उसने झाँककर देखा—कुएँ में सैकड़ों लाशें पड़ी थीं । उसकी आँखों के आगे एक बार फिर अँधेरा छा गया । कुछ दिखायी ही नहीं पड़ा । वह आँखें मींचकर देखने लगा । फिर वही हाल ! आँखों के आगे अँधेरा घना हो गया । वह समझ ही नहीं सका कि इसमें अंग्रेजों के साथ भारतीयों की भी लाशे हैं । उसने परमपिता ईसा का नाम लेकर कुएँ के पास एक क्रॉस लगा दिया तथा काँपते हाथों से लिख दिया—"मेमोरियल वेल !"

रेनॉड अश्रुपूरित नेत्रों से खड़ा-खड़ा सब कुछ देखता रहा ।

थोड़ी देर में सेना को विठूर की ओर जाने का आदेश मिला । रेनॉड सेना लेकर विठूर को ध्वस्त करने चल पड़ा ।

---

*वीबीगढ़ में भूमि पर खून के पपड़े बने थे । वह रक्त अंग्रेजों का होने की आशंका अंग्रेज अधिकारियों को हुई । तब कानपुर के बहुत-से ब्राह्मणों को पकड़ मंगाया गया । ...... उन्हें खून के पपड़े चाटने पर मजबूर किया गया ।—'भारतीय स्वातंत्र्य समर' पृष्ठ २९९ ।

● ● ●

बरसात के कारण कछार में हरियाली छा गयी थी। हरे-भरे जवांस-पुञ्ज तो सूख गये थे, मन्दार के पत्ते भी पियरा गये थे। किन्तु, उनके स्थान पर नये-नये पौधे उग आये थे। चकवँड़, लटजीरा, लिलबबरी, बबई, मकोइया आदि ने तो रास्तों को ढँक लिया था। सूखी हुई खेकसे की बेलें फिर लहलहा उठी थीं और अमरबेलि की तरह पलाश के पेड़ों पर फैल रही थीं। तोरई तथा यत्र-तत्र कुन्दरू और कौआलिलनी की बौंड़ी फ़ैल रही थी। सरपत-पुञ्जों में हरियाली उतर आयी थी। झाऊ की झाड़ियों के सुआपंखी पत्ते गहगहा उठे थे। यह सब होते हुए भी गर्मी कम न थी। सूर्य निकलता, तो अंगार बरस पड़ते, लताएँ मुरझा जातीं। बेलें लटक जातीं, चकवँड़ के पत्ते सिकुड़ जाते। त्राहि-त्राहि मच जाती। चरवाहे पशुओं को छोड़कर चिलमल की शीतल छाया में पड़े-पड़े बिरहा अलापा करते। कछार के तीखे-नुकीले काँटे अब मुलायम पड़ गये थे। कुछ तो सड़ भी गये थे। जो बाकी बचे थे, उनमें बेधने की शक्ति नहीं रह गयी थी।

माधव सिंह टीलों, झाड़ियों एवं झाऊ के पेड़ों में अपने को छिपाता हुआ चला जा रहा था। पैरों में झरबेरी एवं बबूल के अनेकों काँटे चुभ गये थे। पर, टूटे न थे। मुलायम होने के कारण हाथ से खींचने पर निकल आये थे। कहीं-कहीं तोरई की बेलें उसका रास्ता रोक लेतीं। वह उन्हें नोचकर मार्ग प्रशस्त करता। आगे बढ़ता। शीश पर सूर्य तप रहा था। वह गर्मी एवं जागरण से थक गया था। अब उससे चला नहीं जाता था। शरीर की हड्डी-हड्डी कसक रही थी। दो दिनों से उसे अन्न का एक दाना भी नहीं मिला था। प्यास से कण्ठ सूख रहा था। वह गंगा की तलहटी में कूद गया। वहीं उसने हाथ-पैर धोया। दन्तमञ्जन किया और एक ही साँस में दस-पन्द्रह चुल्लू गंगाजल पी गया। जल पीते

ही थोड़ी-सी शान्ति मिली। वह तट पर खेलती हुई लहरों में पैर डुबोकर बैठ गया। गंगा की निर्मल लहरें उसके पैरों पर लोटती रहीं। लोट-लोटकर खेलती रहीं। वह पैर के तलुवे धो-धोकर चुभे हुए काँटे निकालने लगा। छोटे-छोटे काँटों की फुनगियाँ टूट गयी थीं। वह उन्हें दबा-दबाकर निकालने लगा। एक, दो, तीन....अनेकों काँटे तलवों में झलक उठे। कुछ छोटे, कुछ बड़े। वह तल्लीनता से काँटे निकाल ही रहा था कि किसी की सिसकियाँ सुनायी पड़ीं। सिसकियाँ सुनते ही काँटा निकालनेवाला हाथ रुक गया। माधव का ध्यान-भंग हो चुका था।

वह उठकर खड़ा हो गया। भौचक्का-सा इधर-उधर देखने लगा। सामने रेत में झाऊ की झाड़ियों की एक लम्बी पट्टी चली गयी थी सिसकियाँ उधर से ही आ रही थीं। माधव सिंह से न रहा गया। उसे लगा, जैसे किसी नारी की सिसकियाँ हों। वह आगे बढ़ा। हृदय में एक तूफान उठा —"कहीं मैना तो नहीं है ?"

माधव सिंह का अन्तस् आशंका से भर गया। वह धीरे-धीरे झाऊ की झाड़ियों की ओर चला। सिसकियाँ तेज हो गयी थीं। वह झाड़ियों को चीरता-फाड़ता आगे बढ़ा। उसके पैरों की आहट पाते ही बटेरों के झुण्ड एक झाड़ी से फड़फड़ाते हुए उड़े। माधव चौंक पड़ा। कुछ कछुए निकल-निकलकर गंगा की धारा में कूदने लगे। कुण्ड में तैरता हुआ सुरखाव का एक जोड़ा पीछे की ओर मुड़ गया। माधव खड़ा हो गया। ध्यान से देखने लगा। कुछ सफेद-सी वस्तु, उसे हरी-हरी झाड़ियों में झलकती दिखायी पड़ी। वह आगे बढ़ा। फिर ठिठक गया। एक काला साँप फुफकारता हुआ सर्र से निकल गया। माधव काँप उठा। झाड़ियों को चीरता हुआ वह आगे बढ़ा। सिसकियाँ अव स्पष्ट हो गयी थीं। सामने ही वह सफेद वस्तु थी। माधव सिंह ठिठक गया। ध्यान से देखने लगा। देखते-देखते उसने पुकारा—"अरे वताशा बुआ !" वह वताशा बुआ को पहचान गया था। "वही तो है !" उसने जल्दी-जल्दी पैर वढ़ाये। निकट पहुँच कर धीरे से पुकारा—"बुआ ?"

बताशा बुआ ने घूमकर माधव सिंह की ओर देखा। उनकी बूढ़ी आँखों से अश्रुधारा बह चली। वह गोद में अपने पति गजाधर ड्योढीदार का शव लिये बैठी सिसक रही थीं। माधव को देखते ही बताशा बुआ को एक सहारा मिला। उनकी सिसकियाँ रुदन में परिणत हो गयीं। वह चीत्कार कर उठी। उसकी इस दयनीय दशा पर माधव के भी नेत्र छल-छला उठे। वह बताशा बुआ के निकट जाकर बैठ गया। उन्हें सांत्वना देने लगा। थोड़ी देर में बताशा बुआ के आँसू थमे। हिचकियाँ रुकीं। माधव ने दुःखी स्वर में पूछा—"कैसे क्या हो गया बुआ ?"

"क्या बताऊँ बेटा !" बताशा ने रोते हुए कहा—"रात में जब पता लगा कि फिरंगी सेना से श्रीमंत साहब की फौजें हार गयीं, तब गढ़ी में भगदड़ मच गयी। जो जहाँ था, वहीं से भाग चला। पूरी गढ़ी खाली हो गयी। केवल वही अंग्रेज मेमें बाकी रह गयी थीं या मैना बिटिया। और सब भग आये थे।"

बताशा ने सिसकते हुए आप बीती सुनायी।

"कौन अंग्रेज मेमें ?" माधव सिंह ने आश्चर्य से पूछा—"क्या अब भी वहाँ कोई बाकी बची थी ? सुना था वहाँ.......।"

"हाँ ! हाँ !!" बताशा बुआ ने कहा, "ठीक हीं सुना था। मगर कुछ बाकी रह गयी हैं। रात में एक धड़ाका हुआ। चिनगारियाँ उड़ी थीं। फिर पता नहीं, क्या-से-क्या हो गया। सुना तमाम नौकर-चाकर, अंग्रेज स्त्री-पुरुष-बच्चे, परिचारिकाएँ मर गयीं। रोजी तथा कुछ और अंग्रेज औरतें बच गयी हैं।"

"और बेगम ?" माधव सिंह ने प्रश्न किया—"वह कहाँ गयीं ?"

"भगवान के घर !" बताशा बुआ ने कहा, "पता लगा है, वह रात-भर कहीं गायब रही है। सवेरा होते ही गढ़ी में आयी। वहाँ खून पड़ा था। चुपचाप लौट गयी। लाशों को सैनिकों ने कुएँ में फेंक दिया था। बेगम शर्म के मारे मैना बिटिया को मुँह न दिखा सकी। मैंने सुना है,

वह कुएँ में कूदकर मर गयी ।" कहते-कहते वताशा बुआ वोली, "वेगम जीते-जी उन्हीं लाशों में समा गयी !" और चीत्कार कर उठी ।

बताशा बुआ को चिल्लाते देख, माधव सिंह ने धीरे से कहा, "चुप रहो बुआ ! चुप रहो । अंग्रेजों के सिपाही कछार में घूम रहे हैं ।"

अंग्रेजों का नाम सुनते ही वताशा बुआ चुप हो गयीं । उनकी सिसकी वंद हो गयी ।

माधव ने पूछा, "सरवर खाँ कहाँ गया ?"

"मैं नहीं जानती !" वताशा बुआ ने अपने पति की लाश देखकर रोते हुए कहा,—"वह भी रात-भर गायव रहा हैं । आया ही नहीं । सबेरे से लड़ाई शुरू हो गयी । वहीं गया होगा । मर-कट गया होगा ।"

वताशा बुआ अव काफी आश्वस्त हो चुकी थीं । माधव ने अब, उनके पति के विषय में प्रश्न करना उचित समझा । वताशा बुआ धीरे-धीरे सिसक रही थी । माधव ने पूछा,—"बुआ, गजाधर दादा को कैसे क्या हुआ ?"

अपने पति का नाम सुनते ही वताशा बुआ पुनः रोने लगी । रोती-हुई वोलीं,—अंग्रेजों की विजय का समाचार जब हमें मिला, तव हम निराश हो गये । किले में भगदड़ मची ही थी । रात के भीषण सन्नाटे में हम दोनों एक साथ भागे ।" बताशा बुआ ने रोकर बताया,—"जल्द-वाजी में मैं अपने गहने भी लेना भूल गयी । पता नहीं, वे किसके हाथ लगे । उसमें मेरी माँ कीं दी हुई हुमेंल थी । मरते समय उन्होंने अपनी यह चिन्हानी मुझे दी थी । वह भी हाथ से चली गयी....।" फिर लम्वी सांस लेते हुए कहा,—"सोचा, किसी तरह गङ्गा पार करके वैसवारे की तरफ चले जाएँगे । पता नहीं कैसे क्या हुआ ! परमेश्वर की इच्छा । उससे मेरा सुहाग न देखा गया । टीले से इनका पैर फिसला । ये लुढ़कते हुए नीचे गिरे । पता नहीं कितनी गहराई में चले गये । मैं तो काँप उठी । रोती-चिल्लाती नीचे पहुँची । देखा, इनका 'वोल-वाका' वन्द था । नाक और मुँह से खून गिर रहा था । मैंने इनका हाथ अपने हाथ में लिया । नाड़ी की गति देखी । वह धीरे-धीरे चल रही थी । मैं इन्हें किसी प्रकार

उठाकर झाड़ी के भीतर तक ले आयी। रात-भर लिये बैठी रही। नब्ज देखती रही। आँचल से हवा करती और गङ्गाजल पिलाती रही। मगर …।" बताशा बुआ ने रोकर कहा,—"जो होनी थी, हो गयी। घड़ी-भर पहले ये मुझे छोड़कर चले गये। माधव भैया ? मैं अभागिन रह गयी। बताओ अब क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ?" कहती हुई वह माधव से लिपट गयी।

"बुआ !" माधव ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा,—"जो हुआ, सो हुआ। दुनिया में कोई अमर नहीं है। एक दिन हम सब को उसी देश में जाना है। इनकी शव को रोक रखना ठीक नहीं। जानती हो ? गङ्गा का किनारा है। भूत-प्रेत चुड़ैलें रात होते ही परेशानी करेंगी। अभी दिन है। चलो, उठो। इन्हें दफन कर दें।"

माधव के मुख से इतना सुनते ही बताशा बुआ पुनः रोने लगी। माधव खड़ा-खड़ा चुपचाप सोच रहा था—जिस व्यक्ति की अन्त्येष्टि-क्रिया राजसी सम्मान से होती, उसी की लाश को आज कोई कंधा देनेवाला नहीं है।

"माधव !" एक आवाज गूँज उठी—"घबड़ाओ नहीं, मैं हूँ !"

माधव ने घूमकर देखा—"सरवर खाँ खड़ा था।"

माधव प्रसन्नता से पुलक उठा। बोला,—"खाँ साहब, यहाँ कैसे ?"

सरवर खाँ चुपचाप झाड़ी में बैठ गया। बोला,—"मैं रात-भर बेगम को ढूँढ़ता रहा। वह कहीं मिली नहीं। फिरंगियों की जीत हो चुकी थी। मैं परेशान हो उठा। फिर भी जान की बाजी लगाकर किले में गया। वहाँ कोई न था। मैना रानी के कक्ष में चिराग जल रहा था। मैं ताज्जुब में पड़ गया। चिराग किसने जलाया है। फिर मैंने उसी चिराग से पूरा किला छान डाला। कहीं कोई न मिल सका। मजबूर होकर गजाधर की कोठरी में गया। वहाँ कोई न था। सिर्फ बताशा बुआ के गहनों की पोटली पड़ी थी। उसे लेकर बिठूर की ओर जा रहा था। कुछ दूरी पर झाड़ी में तुम्हारा घोड़ा बँधा था। पहले तो उसे मैं पहचान नहीं पाया। निकट जाकर देखा, तो नीलू था। वह मुझे देखते ही हिन-

हिना उठा। मैंने उसे पानी पिलाया। उसकी पीठ पर हाथ फेरा। मुझे लगा—जैसे विठूर से तुम सब लोग भाग आये हो। यहीं कहीं छिपे हो। मैं तुम्हें कछार में ढूंढ़ता-ढूंढ़ता यहाँ तक आया। यहाँ कुछ आहट सुनायी पड़ी। दूर से देखा, बताशा बुआ और तुम बातें कर रहे हो। गजाधर भैया की लाश पड़ी है। बोलो, मैं क्या कर सकता हूँ।"

इतना कहकर उसने गहनों की पोटली बताशा बुआ को सौंप दी। बताशा बुआ ने हाथ बढ़ाकर अपनी थाती सँभाल ली। यदि कोई दूसरा दिन होता, तो वे सरवर खाँ की छाया तक से घबड़ातीं। इस समय वे हिन्दू-मुसलमान का भेद भूल गयी थीं।

माधव सिंह चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

सरवर खाँ ने लाश को पुराने कपड़ों में लपेटा। माधव सिंह तथा उसने मिलकर उसे कंधों पर उठाया। बताशा बुआ विरोध न कर सकीं। दोनों ने बढ़कर लाश को कुण्ड में छोड़ दिया।

"छपाक!" की आवाज हुई और लाश गहरे जल में समा गयी।

बताशा बुआ चिल्ला उठी! छाती पीट-पीटकर रोने लगी। विलाप का स्वर गङ्गा की लहरों में प्रतिध्वनित होने लगा।

माधव न बताशा बुआ को सरवर खाँ को सौंपते हुए कहा,—"इन्हें लेकर गङ्गा पार चले जाओ। श्रीमंत साहब तुम्हें वहीं मिल जाएँगे। मैं मैना बिटिया का पता लगाकर आ जाऊँगा।"

सरवर खाँ ने माधव की ओर निहारा। उसके नेत्र छलछला आये थे। माधव सिंह रोते हुए बोला,—"सरवर खाँ, तुम शीघ्रता करो। यदि जीवित रहा, तो फिर मिलूंगा।

सरवर खाँ ने बढ़कर माधव को छाती से लगा लिया। दोनों का अंतिम मिलन मिलन था।

वह बताशा बुआ को लेकर चल पड़ा। माधव सिंह भाऊ की झाड़ियों में अदृश्य हो गया। साँझ होने में अब अधिक देर न थी।

अस्तोन्मुख सूरज पीला पड़ गया था, उसकी किरणें निस्तेज हो चुकी थी। गङ्गा की धारा निर्विकार भाव से बह रही थी––अविरल, सतत!

● ● ●

१६

सन्ध्या का समय था। गंगा के कछार में डूबता हुआ सूरज अपना अरुण मुख छिपा रहा था। किरणों की सिन्दूरी ज्योति रीयाँ, पलाश एवं बवूल के पेड़ों से फिसलकर झाऊ की गुँजान झाड़ियों में चमक रही थी। रेत में कोसों तक फैली हुई यह झाड़ियाँ सोने के तारों-सी झिलमिला रही थीं। विहगों के झुण्ड चहचहा रहे थे। कछार जानवरों से खाली हो गया था। शिशु पंछी अपने घोंसलों से सिर निकाल-निकालकर झाँक रहे थे। कछुओं के झुण्ड तट पर आ गये थे। मगर अपनी खोह में चले गये थे। सूस पानी की सतह पर उतराने लगी थी। सुरखाब का जोड़ा पानी से वाहर निकल आया था। चतुर्दिक स्वर्णिम छटा, कछार की हरियाली को छाती से लगा रही थी। वायु धीमी पड़ गयी थी।

इसी सन्ध्या वेला में, एक तरुणी अपनी बलिष्ठ भुजाओं में मोटा रस्सा बांधे नाव खींचती चली जा रही थी। नाव में कुछ महिलाएँ तथा वच्चे बैठे थे। झाऊ की झाड़ियों के छोर में वह खड़ी हो गयी। माथे के पसीने को उसने आँचल से पोंछा। पीछे की ओर निहारा। नाव में बैठी महिलाएँ मुस्कुरा उठीं। वोली, "थक गयी?"

"हाँ रोजी !" युवती ने कहा, "मैं नाव चलाना नहीं जानती । नही तो पतवार अथवा लग्गी से खेकर लायी होती । प्रवाह उल्टा है । बहुत परिश्रम करना पड़ रहा है । देखती नहीं, साँस फूल आयी है। शरीर पसीने से लथपथ हो गया है । पैर सूज गये हैं ! अब चला नहीं जाता ।"

"अभी केटना डूर है ?"

"वह देखो !" नवयुवती ने उंगली ऊपर उठायी, "वे मंदिरों के कंगूरे चमक रहे हैं । घाट दिखायी पड़ रहे हैं । और वह देखो ।" उसने दूसरी उँगली से संकेत किया, "वह हमारा राजभवन है । बारहदरी दिखायी पड़ रही है । तुम्हें वहाँ पहुँचा दूं, तो शान्ति मिले ।"

"हम वहाँ नहीं जाएगा" रोजी ने घबड़ाते हुए कहा, "वहाँ बडमास होगा !"

नवयुवती इस बात पर गंभीर हो उठी । बोली, "रोजी ! घबड़ाओ नही ! वहाँ तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर सकता । मैं तुम्हें सम्मान के साथ रखूँगी । कुछ समय बाद जब लड़ाई शान्त हो जाएगी, तुम्हें किसी सुरक्षित स्थान पर भेज दूँगी ।"

"सिस्टर!" रोजी चिल्लायी, "हमें अलाहाबाड भेज डो !"

"वहीं भेज दूँगी !" नवयुवती ने कहा, "जहाँ कहोगी, वहीं भेज दूँगी ।" इतना कहकर उसने माथे का पसीना पुनः पोंछा । वायु के सुखद स्पर्श से शरीर को थोड़ी-सी स्फूर्ति मिली । वह पुनः रस्सा अपनी छाती में लगाकर नाव खींचने लगी । वह थोड़ा ही बढ़ी होगी कि एक आवाज उसके कानों में गूँज उठी; "मैना दीदी ! मैना दीदी !!"

मैना के पैर रुक गये । उसने पीछे की ओर मुड़कर देखा । झाऊ की झाड़ियों को चीरता-फाड़ता माधव सिंह सरपट बढ़ा चला आ रहा है। घोड़े की बागडोर उसके हाथ में है ।

"माधव भैया ?" मैना प्रसन्नता से चिल्लायी, "दौड़ आओ ! थोड़ा-सा सहारा कर दो । बड़े मौके से आ गये हो । बहुत थक गयी हूँ । अब चला नहीं जाता ! घोड़ा वहीं छोड़ दो !"

"दीदी !" माधव सिंह पीछे की ओर देखता हुआ घबराहट में चिल्लाया, "कानपुर पर फिरंगियों का अधिकार हो गया है। उनकी फौजें बिठूर पहुँच गयी हैं। कुछ अभी आ रही हैं। श्रीमन्त साहब गंगा पार कर चुके होंगे। पता नहीं, वे अब कहाँ हों ? तुम उन्हें अब वहीं छोड़ दो ! मेरे साथ आओ ! वह देखो !" माधव ने पीछे की ओर हाथ उठाया, "अंग्रेजी सेना कछार में आ गयी है। चलो ! भागो ! जल्दी करो ! दीदी, जल्दी करो !"

"भैया !" मैना आश्चर्यचकित होकर चिल्लायी, "तुम यह क्या कह रहे हो। पराजय की सूचना तो मुझे मिली थी। किन्तु, यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि संघर्ष समाप्त हो गया।"

"मैं ठीक कह रहा हूँ !" माधव बोला, "तुम गढ़ी से कब आयी ?"

"अपराह्न में !" मैना ने कहा, "साँझ होते-होते। जब दुर्ग में समाचार पहुँचा, तब मैं उन्हें लेकर चली आयी थी। मुझे भय था, कहीं क्रान्तिकारी उन्हें मार न डालें। बापू ने इनका उत्तरदायित्व मुझ पर सौंपा है। मैं गुप्तमार्ग से इन्हें निकाल लायी हूँ। रातभर इन्हें कगार की एक खोह में लिये बैठी रही। इन्हें कैसे छोड़ दूँ।"

"दीदी !" माधव सिंह गम्भीरता से बोला, "अब वह स्थिति नहीं रही। इन्हें छोड़ दो। अपने प्राणों की रक्षा करो। घोड़ा तैयार है।"

"भैया !" मैना रोजी की ओर देखती हुई बोली, "यह न होगा !"

"मैना !" माधव सिंह घबड़ाहट में चिल्लाया, "अपनी जान बचाओ ! शीघ्रता करो !"

"भैया !" मैना ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "मेरा उत्तरदायित्व अधूरा रह जाएगा। मैं इन्हें इस प्रकार बेसहारा नहीं छोड़ सकती। किसी ने कुछ कर दिया तब ?"

"ओह !" माधव सिंह झल्ला उठा, "मैना दीदी ! जल्दी करो ! श पीठ तक आ गये हैं। यदि तुम्हें कुछ हो गया, तब ?"

"तुम भीरु हो !" मैना ने क्रोध से कहा, "कायर हो ! मुझे क्या होगा ?"

"मैना !" माधव सिंह ने गरजकर कहा, "मैं भीरु नहीं, कायर नहीं, वह देखो····वे आ गये !····दी····दी !"

"तुम अपने प्राण बचाओ !" मैना ने कहा, "मैं कर्तव्यविमुख नहीं हो सकती !"

"मैना !"

"भैया ?"

"मैना ! मैना !! मैना !!!"

"धाँय ! धाँय !! धाँय !!!"

तीन ओर से तीन बन्दूकें गरज उठीं।

माधव सिंह धराशायी हो गया। गिरते-गिरते चिल्लाया—"मैना !"

मैना के मुख से एक चीख निकली। और अन्धकार में समा गयी। वह बेहोश हो गयी। जब उसे होश आया, तब उसने अपने को फिरंगी सेना से घिरा हुआ पाया।

● ● ●

१७

संपूर्ण बिठूर, निर्जन वन-प्रदेश में किसी लावारिस बस्ती की तरह जल रहा था। रेनॉड को रोजी मिल गयी थी और रोजी को रेनॉड ! किन्तु बिठूर को क्या मिला—मारपीट, धर-पकड़, पूछ-ताछ, अत्याचार, अपमान के साथ-साथ वंदिनी मैना !

बिठूर की आँखों में आँसू आ गये। मैना अपनी जन्म-भूमि, नगर तथा राजप्रसाद की दुर्दशा देख, तड़प उठी। उसका चेहरा तमतमा उठा। आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। अंतस् का ज्वालामुखी होंठों पर आ गया। उसने गरजकर कहा—"सेनापति, फूँक दो इस धरती को! जला दो इस राजाप्रसाद को! किन्तु स्मरण रहे, वे अरमान इस आग में नहीं जलाये जा सकते, जो आज सहस्रों भारतीयों की छाती में—पनप रहे हैं।"

रेनॉड, जो कुछ दूरी पर रोजी का हाथ पकड़े खड़ा था, तेवर बदलते हुए बोला—"छोकरी····।"

"चुप बदमाश!" मैना गरज उठी। रेनॉड के शब्द बाहर न निकल सके। वह सिटपिटा गया।

"बोलता क्यों नहीं?" मैना पुनः तड़पी, "पापी, तुझे पता है? मैं पेशवा-वंश की कन्या हूँ। इतिहास साक्षी है, आज तक इस वंश में किसी के हाथ नहीं बाँधे गये। फिर एक कन्या के? क्या यही तेरी सभ्यता है? एक नारी के साथ अत्याचार करने में लाज नहीं आती? उधर क्या देखता है? सामने देख।"

रेनॉड को लगा, जैसे इस युवती के रोम-रोम से चिनगारियाँ निकल रही हैं। दिव्य मुखमण्डल आग का गोला बन गया है। वह भस्म हो जाएगा। उसका साहस मैना की ओर दृष्टिपात करने का न हुआ। वह पीछे हट गया। रोजी थोड़ा आगे बढ़ी। मैना के निकट पहुँचकर नम्रता से बोली, "सिस्टर!"

मैना का शीश ऊपर उठा।

"सिस्टर!" रोजी ने मीठे शब्दों में कहा, "अपने फादर का पटा वटा डे, हम तुमको छोर डेगा?"

मैना ने जलते नेत्रों से रोजी की ओर निहारा। फिर तड़पकर बोली, "रोजी, मैं तुझसे दया की भीख नहीं माँगती! मैं इस समय तुम्हारी सिस्टर नहीं हूँ। सिस्टर उस समय तक थी, जब तक तुम मेरी

शरण में थी। स्मरण रहे, मैं इस समय सिस्टर नहीं, छोकरी नहीं, श्रीमंत की कन्या नहीं, विद्रोहिणी हूँ। मैं पिता का पता बताकर अपने वंश, समाज और देश के साथ विश्वासघात नहीं करूँगी। मेरे सामने से हट जा! अपना उपदेश किसी दूसरे को देना।"

रोजी लज्जित होकर पीछे हट गयी।

"रोजी!" मैना की स्मृतियाँ जगीं। यह वही रोजी है। ओह! एक-एक दृश्य नाच उठा। रोजी के पैर में काँटा चुभ गया है। वह उसे निकाल रही है। रोजी प्रेम से पूछ रही है—'सिस्टर टुम काँटों से नहीं डरटा?"

"डरने की क्या बात है रोजी, तुझे कुछ पता भी है। काँटा, काँटे से ही निकलता है। यह कछार है, कछार! गंगा के कछार में काँटे-ही-काँटे हैं। झरबेरी के काँटे, बबूल के काँटे, बेल के काँटे, हमें क्या डर? हमलोग तो स्वयं कंपनी सरकार के लिए काँटे हैं। कहीं काँटा, काँटे से डरता है? डरो तो तुम डरो!"

"सिस्टर! "रोजी ने व्यंग्य से कहा, "यहाँ काँटा बहोट होटा है। जगह-जगह काँटा है। घर-घर काँटा है। ....।"

"हाँ! हाँ!!" यहाँ घर-घर काँटा है। गंगा के कछार में तो कण-कण क़ाँटा है। इतने काँटे तुझे कहीं न मिलेंगे!"

आज वही काँटा कुचला जा रहा है। पीसा जा रहा है। और रोजी हँस रही है।

सोचते-सोचते मैना ने पीछे की ओर निहारा। नगर धू-धू करके जल रहा था। आग की लपटें बढ़ रही थीं। हरे-भरे पेड़ झुलस रहे थे। चिनगारियाँ चिटख रही थीं। चार ओर धुआँ छाया हुआ था। पक्षियों के झुण्ड चहचहाते हुए उड़े जा रहे थे। उनके घोंसले जल गये थे। बच्चे झुलस गये थे। चिनगारियाँ उछल-उछलकर गंगा के जल में छन्न-छन्न हो रही थीं।

"छोकरी !" रेनॉड चिल्लाया।

मैना का ध्यान भंग हो गया। रोजी की जीवित तसवीर सामने से हट गयी। रेनॉड की तसवीर सामने आ गयी। वह कह रहा, "नाना का पटा बटा या माफी माँग !"

"क्षमा ?" मैना पुनः तड़पी, "मैं क्षमा माँगूँ और तुझसे ?"

"उठाओ इसे !" रेनॉड गरज उठा—"फेंक डो आग में !"

उसके इतना कहते ही रोजी सिहर उठी। बोली कुछ नहीं। चुपचाप कभी मैना, कभी रेनॉड की ओर देखती रही।

"धमकाता किसे है।" मैना ने आवेश में उत्तर दिया, "भारतीय नारी आग से नहीं डरती ! इतिहास देख ! पता नहीं, कितनी नारियाँ जीते-जी आग की लपटों में समा चुकी हैं। भारतीय नारी चिता पर शृङ्गार करना खूब जानती हैं। जो तुझे करना है, कर.........।"

मैना अभी और कुछ कहना चाहती थी कि सैनिकों ने उसे उठाकर आग की लपटों में फेंक दिया।

रोजी चीख पड़ी। वह बेहोश होकर गिर पड़ी। रेनॉड ने झपटकर उसे सभाँला।

अग्नि-देवता ने देखा। अनुभव किया, कि जीवित मैना का यह फूल-सा कोमल गात उनसे भी कहीं अधिक गरम, जाज्वल्यमान है, तेजस्वी है। उसकी गरमाहट के आगे उनकी लपटें फीकी पड़ गयीं। उन्होंने स्नेह से मैना का शरीर अपनी गोद में भर लिया !

क्षणभर पश्चात् अग्निदेवता एवं मैना, दोनों का तेज एकाकार होकर, बिठूर की धरती पर देश का इतिहास बन गया।

● ● ●

परिणति

"चलो मैना !" एक दूसरी औरत ने मैना का हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा, "अभी हमें बिठूर तक जाना है। कहाँ उलझ गयी ?"

मेरी निगाहें पुनः ऊपर उठीं। मैंने देखा—काले रेशमी बुर्के में लिपटी वही जानी-पहचानी महिला खड़ी है। वह किशोरी का हाथ पकड़-कर खींच रही है। नकाब उल्टा हुआ है। मुस्कुराते चेहरे पर उसकी दो बड़ी-बड़ी रसभरी आँखें, मेरी आँखों में समा गयीं। वह हँस पड़ी। हँसते ही गालों में गड्ढे पड़ गये। बायें कपोल का काला तिल, और गाढ़ा हो गया। उसने मैना का हाथ छोड़ दिया।

मैना पूर्ववत् खड़ी रही।

उसके स्वस्थ एवं सुडौल शरीर में हल्का-सा प्रकंपन हुआ। उद्दीप्त नयनों की काली चमकीली पुतलियाँ नाच उठीं। केशरिया साड़ी सिहर कर रह गयी। रक्त-कमलवाला हाथ थोड़ा-सा हिलकर स्थिर हो गया। वह कुछ कहना चाहती थी, किन्तु शब्द होंठों पर आकर लौट गये। मुखमण्डल पर गंभीरता छा गयी। शीश अपने आप झुक गया।

दूसरी महिला थोड़ा-सा हटकर, एक निराली अदा-से खड़ी हो गयी। उसके चेहरे पर अब भी मुस्कान थी।

"बेगम !" मैंने प्रश्न किया, "उस बार जब तुम मिली थी, तब तुम और मैना दो ही थी। इस बार यह तीसरी कौन है ?"

बेगम के हसीन चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ गयी। वह आँखे नचाकर पीछे की ओर देखती हुई बोली, "छाया है !"

"छाया ?"

"जी हाँ !"

"किसकी ?" मैंने आश्चर्य-चकित होते हुए पुनः प्रश्न किया।

"बेगम मुस्कुरा उठी।

इस बार उसके गालों में गड्ढे नहीं पड़े। कपोल का काला तिल भी गाढ़ा नहीं हुआ। मुस्कान केवल अधरों पर नाचकर रह गयी। हाँ, मेरे इस प्रश्न पर उस का शरीर अवश्य ही सिहर उठा था। वह तिरछी आँखों से मैंना की ओर देखती हुई बोली, "उत्सर्ग की !"

"उत्सर्ग !" बेगम के मुख से 'उत्सर्ग' शब्द सुनकर मुझे थोड़ा-सा आश्चर्य अवश्य हुआ। पर तत्काल ही स्मरण हो आया। मैंना ने उस दिन कहा था—"१८५७ का इतिहास आग और आँसू ही नहीं, उत्सर्ग भी है।"

"क्या यह उसी उत्सर्ग की छाया है ?" मैंने बेगम को मैंना के पूर्व-कथन का स्मरण दिलाया।

"जी, हाँ !" बेगम ने उत्तर दिया, "आप का ख्याल सही और दुरुस्त है। यह उसी की छाया है !"

"इसका नाम ?"

"इसका नाम है—रोजी !"

रोजी का नाम सुनते ही मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। छाती धड़क उठी। साँस तेजी से फूलने लगी। कितना रोमांचकारी नाम है ? नाम ही नहीं, इस 'रोजी' शब्द के पीछे जितना हृदयविदारक इतिहास छिपा है, मैं उसकी कल्पना से ही काँप उठा। एक-एक घटना आँखों में नाच उठी। नाना साहब को दीर्घजीवी होने का अशीष देनेवाली रोजी ! दुर्ग का भेद खोलनेवाली रोजी !! हैवलॉक और नील को पत्र भेजनेवाली रोजी !!! कानपुर को मटियामेट करनेवाली रोजी....और....और....।

"और क्या ?"

मैंना को जीते-जी आग में भस्मीभूत करनेवाली रोजी !

"रोजी !" मेरे समक्ष रोजी का रूप आ गया—हरे-भूरे रंग की फ्रॉक। सुराहीदार गर्दन पर लोटते हुए कटे-छँटे सुनहरे रेशमी केश ! होठों पर छलकते स्वेद-विंदु ! गोरी, चिकनी और सुडौल वाँहें ! तेज नुकीली, नीली आँखें ! पतले-पतले दो रक्ताभ अधर !....।"

किन्तु आज ?

वह रूपवती रोजी, रोजी नहीं—"उत्सर्ग की छाया है ।"

मेरी निगाहें ऊपर उठीं । मैंने देखा—रोजी और मैना एक दूसरी का हाथ पकड़े खड़ी हैं । बेगम कह रही हैं—'हमें रोजी से मुहब्बत है । रोजी न होती, तो उत्सर्ग न होता ! उत्सर्ग न होता, तो मैनारानी को कौन पूछता ?"

"बेगम !" मैना ने झुँझलाते हुए कहा—"तुझे कुछ समय का भी ध्यान है ? अँधेरे में रोजी डरती हैं !"

"मैना रानी !" बेगम ने कहा, "डरने की क्या बात है ? कछार में अब एक भी काँटा नहीं है, जो रोजी के पैर में चुभ सके । काँटों की जगह अब वहाँ खुशनुमा फूल खिले हैं । सौ साल में जमाना-बदल गया । जमाने के साथ तवारीख बदल गयी, लेकिन अफसोस है, रोजी की डरने की आदत नहीं बदली !"

"बेगम !" मैना ने गंभीरता से कहा, वह जमाने और काँटों से नहीं, केवल इतिहास से डरती है ।

"इतिहास से !" मेरे मुख से अचानक निकल गया । मैंने सिर उठाकर सामने देखा—न वहाँ मैना थी, न बेगम और न रोजी ! केवल इतिहास के कुछ जले हुए पन्ने पड़े थे । मैंने उन्हें समेट लिया । समेटते ही वे राख हो गये । मेरा हृदय बोझिल हो उठा । आँखों में आँसू छलक आये । अंतस् करुणा से भींग गया । बेगम के एक-एक शब्द अब भी कानों में गूँज रहे थे—"कछार में अब एक भी काँटा नहीं है, जो रोजी के पैर में चुभ सके । काँटों की जगह अब वहाँ खुशनुमा फूल खिले हैं ।

"कछार में खुशनुमा फूल खिले हैं !"

किन्तु मेरी मुट्ठी में इतिहास की राख है और उस राख में मैना के फूल छिपे हैं ।

गंगा मैया ! इन्हें स्वीकार कर लेना !

प्रा. डिल्ली रमण रेड्डी

इस बार उसके गालों में गड्ढे नहीं पड़े। कपोल का काला तिल भी गाढ़ा नहीं हुआ। मुस्कान केवल अधरों पर नाचकर रह गयी। हाँ, मेरे इस प्रश्न पर उस का शरीर अवश्य ही सिहर उठा था। वह तिरछी आँखों से मैना की ओर देखती हुई बोली, "उत्सर्ग की !"

"उत्सर्ग !" बेगम के मुख से 'उत्सर्ग' शब्द सुनकर मुझे थोड़ा-सा आश्चर्य अवश्य हुआ। पर तत्काल ही स्मरण हो आया। मैना ने उस दिन कहा था—"१८५७ का इतिहास आग और आँसू ही नहीं, उत्सर्ग भी है।"

"क्या यह उसी उत्सर्ग की छाया है ?" मैंने बेगम को मैना के पूर्व-कथन का स्मरण दिलाया।

"जी, हाँ !" बेगम ने उत्तर दिया, "आप का ख्याल सही और दुरुस्त है। यह उसी की छाया है !"

"इसका नाम ?"

"इसका नाम है—रोजी !"

रोजी का नाम सुनते ही मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। छाती धड़क उठी। साँस तेजी से फूलने लगी। कितना रोमांचकारी नाम है ? नाम ही नहीं, इस 'रोजी' शब्द के पीछे जितना हृदयविदारक इतिहास छिपा है, मैं उसकी कल्पना से ही काँप उठा। एक-एक घटना आँखों में नाच उठी। नाना साहब को दीर्घजीवी होने का अशीष देनेवाली रोजी ! दुर्ग का भेद खोलनेवाली रोजी !! हैवलॉक और नील को पत्र भेजनेवाली रोजी !!! कानपुर को मटियामेट करनेवाली रोजी....और....और....।

"और क्या ?"

मैना को जीते-जी आग में भस्मीभूत करनेवाली रोजी !

"रोजी !" मेरे समक्ष रोजी का रूप आ गया—हरे-भूरे रंग की फ्रॉक। सुराहीदार गर्दन पर लोटते हुए कटे-छँटे सुनहरे रेशमी केश ! होठों पर छलकते स्वेद-विंदु ! गोरी, चिकनी और सुडौल बाँहें ! तेज नुकीली, नीली आँखें ! पतले-पतले दो रक्ताभ अधर !....।"

किन्तु आज ?

वह रूपवती रोजी, रोजी नहीं—"उत्सर्ग की छाया है।"

मेरी निगाहें ऊपर उठीं। मैंने देखा—रोजी और मैना एक दूसरी का हाथ पकड़े खड़ी हैं। बेगम कह रही हैं—'हमें रोजी से मुहब्बत है। रोजी न होती, तो उत्सर्ग न होता! उत्सर्ग न होता, तो मैनारानी को कौन पूछता?"

"बेगम!" मैना ने झुँझलाते हुए कहा—"तुझे कुछ समय का भी ध्यान है? अँधेरे में रोजी डरती हैं!"

"मैना रानी!" बेगम ने कहा, "डरने की क्या बात है? कछार में अब एक भी काँटा नहीं है, जो रोजी के पैर में चुभ सके। काँटों की जगह अब वहाँ खुशनुमा फूल खिले हैं। सौ साल में जमाना-बदल गया। जमाने के साथ तवारीख बदल गयी, लेकिन अफसोस है, रोजी की डरने की आदत नहीं बदली!"

"बेगम!" मैना ने गंभीरता से कहा, वह जमाने और काँटों से नहीं, केवल इतिहास से डरती है।

"इतिहास से!" मेरे मुख से अचानक निकल गया। मैंने सिर उठाकर सामने देखा—न वहाँ मैना थी, न बेगम और न रोजी! केवल इतिहास के कुछ जले हुए पन्ने पड़े थे। मैंने उन्हें समेट लिया। समेटते ही वे राख हो गये। मेरा हृदय बोझिल हो उठा। आँखों में आँसू छलक आये। अंतस् करुणा से भींग गया। बेगम के एक-एक शब्द अब भी कानों में गूँज रहे थे—"कछार में अब एक भी काँटा नहीं है, जो रोजी के पैर में चुभ सके। काँटों की जगह अब वहाँ खुशनुमा फूल खिले हैं।

"कछार में खुशनुमा फूल खिले हैं!"

किन्तु मेरी मुट्ठी में इतिहास की राख है और उस राख में मैना के फूल छिपे हैं।

गंगा मैया! इन्हें स्वीकार कर लेना!

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
[illegible] रेग्मी [illegible]
[illegible]

Ze9. 832
37 92 5
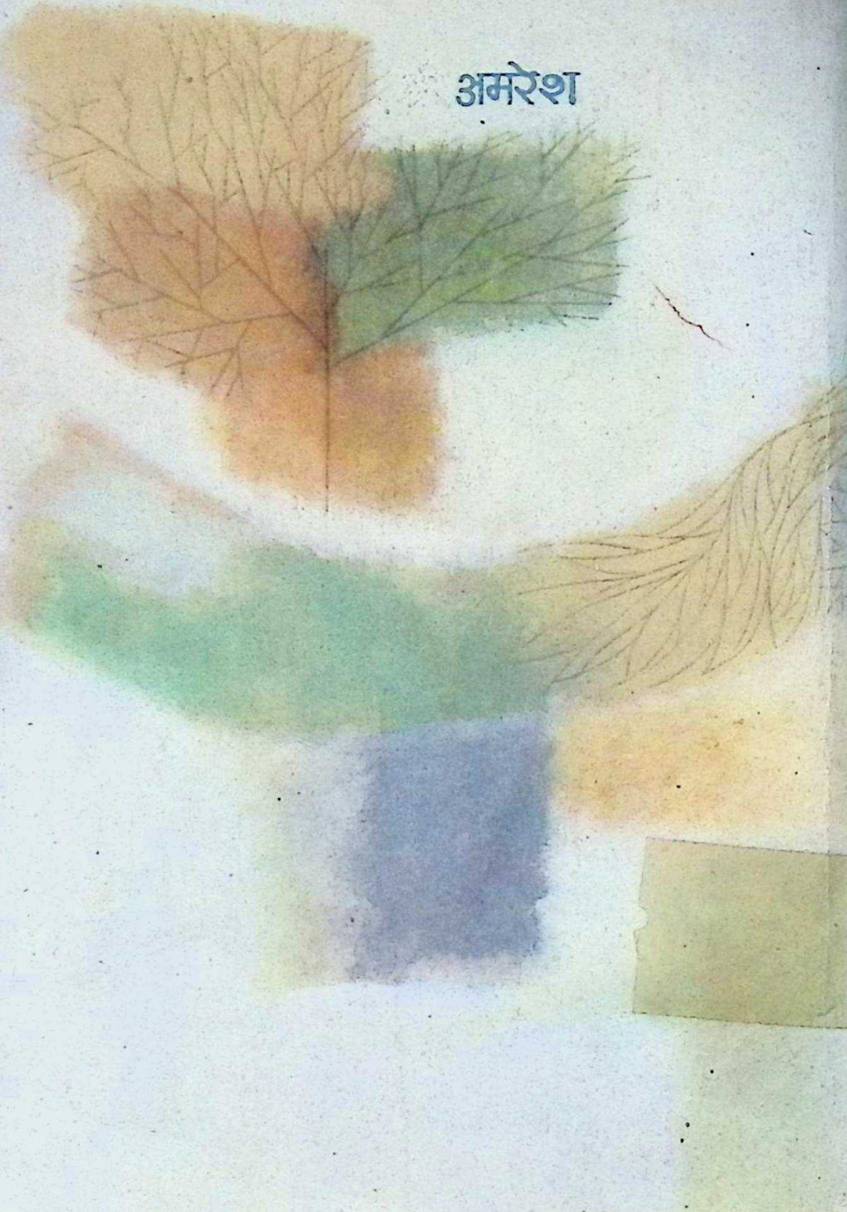
अमरेश